अंतस

अर्द्धवार्षिक पत्रिका, अंक-11, 26 जनवरी 2017

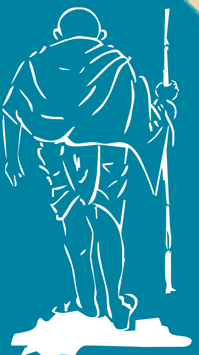

स्वच्छ भारत

एक कदम स्वच्छता की ओर

डिजिटल इंडिया

फसल बीमा योजना

बेटी बचाओ

बेटी पढ़ाओ

सामाजिक उत्तरदायित्व एवं सरोकार

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर

INDIAN INSTITUTE OF TECHNOLOGY KANPUR

नियम

- ❖ अंतस के आगामी अंक में प्रकाशन हेतु अपनी मौलिक एवं यथासंभव अप्रकाशित रचनाएं शीघ्रातिशीघ्र भेजने का कष्ट करें।
- ❖ रचनाएं यथासंभव टाइप की हुई हों, रचनाकार का पूरा नाम, पद एवं संपर्क नम्बर का उल्लेख अपेक्षित है।
- ❖ लेखों में शामिल छाया-चित्र तथा आंकड़ों से संबंधित आरेख स्पष्ट होने चाहिए। प्रयुक्त भाषा सरल, स्पष्ट एवं सुवाच्य हिंदी भाषा हो।
- ❖ अनूदित लेखों की प्रामाणिकता अवश्य सुनिश्चित करें। अनुवाद में सहायता हेतु संस्थान राजभाषा प्रकोष्ठ से संपर्क कर सकते हैं।
- ❖ प्रकाशन के लिए किसी भी लेखक को किसी प्रकार का मानदेय नहीं दिया जाएगा।
- ❖ अंतस में उन सभी प्रकार के विचारों का स्वागत होगा जो संस्थान परिसर में रहने अथवा काम करने वाले लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं किन्तु किसी भी प्रकार के राजनीतिक विचारों को प्रोत्साहित नहीं किया जाएगा।
- ❖ अंतस में प्रकाशित रचनाओं में निहित विचारों के लिए संपादक मण्डल अथवा राजभाषा प्रकोष्ठ उत्तरदायी नहीं होगा और इसके लिए पूरी की पूरी ज़िम्मेदारी स्वयं लेखक की ही होगी।
- ❖ रचनाएं अंतस के अनवरत दो अंकों में प्रकाशित न होने की स्थिति में संबंधित रचनाकार राजभाषा प्रकोष्ठ में सुनीता सिंह से उसके बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

स-आभार
संपादक मंडल

अंतस परिवार

संरक्षक
प्रोफेसर इन्द्रनील मान्ना
निदेशक

परामर्शदाता
प्रोफेसर अजित चतुर्वेदी
उपनिदेशक

मुख्य संपादक
प्रोफेसर शिखा दीक्षित

संपादक
डॉ.वेदप्रकाश सिंह

संपादन-सहयोग
प्रोफेसर अरुण कुमार शर्मा
प्रोफेसर भारत लोहनी
डॉ.कांतेश बालानी
डॉ.अनुराग त्रिपाठी
डॉ.अर्क वर्मा
चन्द्र प्रकाश सिंह
विष्णु प्रसाद गुप्ता

अभिकल्प (Design), संकलन
सुनीता सिंह

अनुवाद
जगदीश प्रसाद
भारत देशमुख

छायाचित्र
रवि शुक्ल

सहयोग
विद्यार्थी, हिंदी साहित्य सभा

संकेतक

शुभेच्छा

निदेशक की कलम से........ 03
उपनिदेशक की दृष्टि में........ 04
सम्पादकीय........ 05

साक्षात्कार

1. विश्व में मानव मूल्यों की शिक्षा को समर्पित एक सफल व्यक्तित्व – श्री गणेश बागड़िया........ 06

साहित्य यात्रा

2. अंतर्मुखी (कविता)........ 09
3. कच्चे बसंत (कविता)........ 10
4. दोहे........ 10
5. बचाएं अपनी धरती मात को (कविता)........ 11
7. कैफे........ 12
8. व्यापार में नैतिकता का संरक्षण........ 16
9. जनवरी का महीना 21
10. प्रोसोक इन्नोवेटर्स प्राइवेट लिमिटेड........ 26
11. आई.आई.टी. के छात्रों के नाम एक पाती........ 28
12. सामाजिक सरोकार का उत्कृष्ट नमूना-ऑपर्च्युनिटी........ 31
13. समान्तर रेखायें (कविता)........ 34
14. हमारे सामाजिक सरोकार........ 35
15. पीर-पुरातन (कविता)........ 39
16. सामुदायिक रेडियो स्टेशन और उसकी प्रासंगिकता........ 42
17. रंग के आधार पर ये भेदभाव क्यूँ........ 24
18. राष्ट्रीय महत्व की परियोजनाओं में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर का योगदान........ 51

परिसर की गतिविधियाँ

छायाचित्र........ 22

बालबत्तीसी

शत्रु अधिक बलशाली हो तो क्रोध प्रकट न करे, शांत हो जाएं 42

भाषा विमर्श

टीका........ 41
राजभाषा नीति, अधिनियम एवं नियम........ 45

तकनीकी लेख

वायु प्रदूषण : चुनौती और समाधान........ 19

विरासत

उत्साह (निबन्ध)........ 47

शुभेच्छा

निदेशक की कलम से...

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर अपनी स्थापना के समय से ही विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उत्तरोत्तर उत्कृष्टता हासिल कर रहा है जिसको देश-विदेश में विधिवत् रूप से मान्यता प्रदान की गई है । संस्थान आज देश-विदेश के कई शैक्षणिक संस्थानों/विश्वविद्यालयों के साथ मिलकर शोध के क्षेत्र में नये-नये कीर्तिमान स्थापित कर रहा है । निश्चित रूप से संस्थान के इस प्रयास से देश एवं समाज लाभान्वित होगा ।

शोध एवं शिक्षण के अलावा संस्थान ने अपने सामाजिक उत्तरदायित्वों का भी बखूबी निर्वहन किया है । अपने सामाजिक सरोकरों के प्रति गंभीर रहते हुए संस्थान अपने स्तर पर कई परियोजनाओं को संचालित कर रहा है । यहाँ पर ऐसी ही कुछ परियोजनाओं का उल्लेख करना प्रासंगिक होगा।

सामाजिक सरोकार की इस कड़ी में संस्थान के कई संकाय सदस्य समाज में आस-पास के निर्धन बच्चों को शिक्षित करने का सराहनीय कार्य कर रहे हैं। संस्थान के कई संकाय-सदस्यों के नेतृत्व में ऑपर्च्युनिटी (Opportunity) स्कूल और शिक्षा-सोपान जैसे विद्यालयों का संचालन किया जा रहा है जहाँ पर निर्धन बच्चों को निःशुल्क शिक्षा प्रदान की जाती है। संस्थान, भारत सरकार की महत्वाकांक्षी सामाजिक परियोजनाओं जैसे 'नमामि गंगे', 'इम्प्रिंट इंडिया', 'उन्नत भारत' अभियान में भी अपनी अग्रणी भूमिका निभा रहा है। इन समस्त परियोजनाओं में संस्थान की भागीदारी समाज के प्रति उत्तरदायितत्व-निर्वहन की दृढ़ इच्छा-शक्ति को दर्शाती है। मैं कामना करता हूँ कि संस्थान भविष्य में भी अनुसंधान तथा प्रौद्योगिकी-सरलीकरण के माध्यम से भारतीय समाज के हर वर्ग को लाभ पहुँचाने का कार्य करता रहे।

मैं अंतस पत्रिका के ग्यारहवें अंक को पाठकों को समर्पित करते हुये पत्रिका के समस्त रचनाकारों एवं प्रकाशन से जुड़े सभी सदस्यों को हार्दिक बधाई प्रेषित करता हूँ।

गणतन्त्र-दिवस की शुभकामनाओं के साथ,

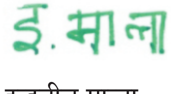

इन्द्रनील मान्ना
निदेशक

शुभेच्छा

उपनिदेशक की दृष्टि में...

समस्त परिसर वासियों को गणतन्त्र-दिवस की बहुत-बहुत शुभकामनायें!

खुशी है कि संस्थान की गृह पत्रिका अंतस का ग्यारहवां अंक सामाजिक सरोकार को समर्पित है।

संस्थान में स्थित 'सिडबी इनोवेशन एवं इन्क्यूबेशन सेन्टर' अनेक नई-नई कंपनियों को पोषित एवं तैयार करने का कार्य कर रहा है। साथ ही संस्थान में भी ढेरों सरकारी तथा गैर-सरकारी परियोजनाओं पर शोध-कार्य संपादित किये जा रहे हैं जिनका समाज को प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष दोनों रूप में लाभ मिल रहा है।

प्रोफेसर हरीश वर्मा के नेतृत्त्व में संप्रति 'राष्ट्रीय आविष्कार अभियान' परियोजना के तहत समय-समय पर आस-पास के क्षेत्रों के तकनीकी तथा गैर तकनीकी शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थियों तथा शिक्षकों को प्रशिक्षित करने का अभियान सफलतापूर्वक चलाया जा रहा है। डॉ. प्रभाकर के निर्देशन में शिक्षण संस्थानों के लिए ऑनलाइन व्याख्यानों की भी व्यवस्था की गई है जिनका ये संस्थान और विद्यार्थी भरपूर लाभ उठा रहे हैं।

संस्थान का हमेशा से प्रयास रहा है कि संस्थान में विकसित होने वाली तकनीक का लाभ सीधे समाज को मिले। संस्थान ही नहीं बल्कि इसके पूर्व छात्र भी समाज-कल्याण के लिए प्रतिबद्ध हैं। आज संस्थान के अनेक पूर्व छात्र किसी न किसी रूप में समाज के कल्याण की दिशा में प्रयासरत हैं। अनेक पूर्व छात्र आज राज्य तथा केन्द्र सरकार की महत्वाकांक्षी परियोजनाओं से जुड़कर उनको सफल बनाने में जुटे हुए हैं।

अंतस का ग्यारहवाँ अंक प्रकाशित हो रहा है। सभी रचनाकारों एवं संपादन मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन की बहुत-बहुत बधाई। उम्मीद है पत्रिका सभी की उम्मीदों पर खरी उतरेगी। मेरी प्रत्याशा है कि सभी परिसर वासी अपनी मौलिक रचनाओं से पत्रिका को और अधिक समृद्ध और सुरुचि-सम्पन्न बनाने में अपना सहयोग देंगे।

शुभकामनाओं सहित,

अजित चतुर्वेदी

अजित चतुर्वेदी
उपनिदेशक

संपादकीय

'अंतस' के इस ग्यारहवें अंक को आप सभी को समर्पित करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है। हर्षित हूँ क्योंकि आज गणतन्त्र दिवस का पावन दिन है और इस गरिमापूर्ण दिवस पर हमारे संस्थान की यह पत्रिका अपनी साहित्य यात्रा के इस पड़ाव तक आ पहुँची है। इस अंक का विषय 'सामाजिक उत्तरदायित्व तथा सरोकार' है। वर्तमान समय में यह विषय अत्यंत महत्वपूर्ण है। आज के व्यक्तिवादी युग में सामाजिकता और सामूहिक चेतना अक्सर कहीं खो जाती है। प्रगति के पथ पर अग्रसर व्यक्ति समाज के प्रति उत्तरदायित्व और सरोकार को धूल-धूसरित करते हुए अक्सर आगे बढ़ जाते हैं। इस बात का भान विरलों को ही होता हैं कि व्यक्ति और समाज के बीच परस्पर पूरकता का रिश्ता है। इस रिश्ते के कुछ रूप हमने इस अंक में सँजोने के प्रयास किये हैं।

समाज के प्रति उत्तरदायित्व निभाने के विषय को इस बार अंतस की रचनाओं में आप परिलक्षित होता देख पाएंगे। इस अंक में आप सामाजिक मूल्यों की शिक्षा से जुड़े व्यक्तित्व और हमारे पूर्व छात्र श्री गणेश बागड़िया जी का साक्षात्कार पढ़ेंगे । श्री बागड़िया जी के जीवन-विद्या के प्रयोग तथा उनके सामाजिक कार्यों और आंदोलनों में भागीदारी के बारे में आप इस साक्षात्कार से जान पाएंगे। बागड़िया जी के विचार मूल्य - शिक्षा के महत्व को दर्शाते हैं। इस अंक में प्रस्तुत कहानियाँ, कवितायें और लघु कथाएँ मानवीय संवेदनाओं के अलग – अलग रंगों में ओत – प्रोत हैं। संवेदना ही आधारभूत स्तम्भ है सामाजिक चेतना और उन्नयन के प्रयासों का। संवेदना की प्राथमिकता को नकारा नहीं जा सकता।

सामाजिक नैतिकता की बात करें तो व्यापार में अनैतिकता का विषय अत्यन्त महत्वपूर्ण है और इस विषय के विभिन्न पहलुओं की चर्चा करता है प्रोफेसर राजेंद्र प्रसाद जी का लेख 'व्यापार में नैतिकता का संरक्षण'। अनैतिकता जहाँ एक ओर समाज को प्रदूषित करती है वहीं वायु प्रदूषण जीवन को त्रस्त कर देता है। वायु प्रदूषण संबंधी लेख में प्रोफेसर मुकेश शर्मा वायु-प्रदूषण की समस्या का पूर्ण विवेचन कर रहे हैं तथा वायु की गुणवत्ता से जुड़े मुद्दों की चर्चा कर रहे हैं। सिडबी के अंतर्गत प्रोसोक इन्नोवेटर्स प्राइवेट लिमिटेड सामाजिक महत्व के उत्पादों के निर्माण से जुड़ा एक प्रयास है जिसके कार्यों का विवरण संदर्भित लेख में प्रस्तुत है।

हमारे पूर्व छात्र श्री शिरीष जोशी जी छात्रों के नाम अपनी पाती में उन लोगों के महत्व को बता रहे हैं जो छात्रों के जीवन तथा कैरियर निर्माण में अपना जीवन बिता देते हैं। इस लेख का मुख्य भाव है कि आगे बढ़ जाने की होड़ में ऐसे लोगों को विस्मृत न कर दें जो आपके जीवन निर्माण से किसी भी प्रकार से जुड़े हों। सामाजिक दायित्व के निर्वहन की कड़ी में संस्थान में शिक्षा के क्षेत्र में ऑपर्च्युनिटी स्कूल के विकास और प्रगति के लिए विभिन्न लोगों द्वारा किए गए प्रयासों को लक्षित कर रहा है संतोष कुमार और जयश्री जी का लेख। देश तथा समाज के प्रति विभिन्न सरोकारों और दायित्वों का ज्ञापन और विस्तृत विश्लेषण 'हमारे सामाजिक सरोकार' नामक लेख में विष्णु प्रसाद गुप्ता बखूबी कर रहे हैं। इस लेख में आबादी, जन स्वास्थ्य, शिक्षा, संपन्नता और गरीबी के बीच का अंतर और यातायात की समस्या के साथ-साथ सामाजिक और राजनैतिक ईमानदारी की बात भी की गयी है।

यह कहना अतिशयोक्ति न होगा कि सामाजिक सरोकार की कसौटी पर हमारा संस्थान खरा उतरता है। शिक्षण तथा शोध दोनों ही क्षेत्रों में यह देखा जा सकता है। डॉ.वेद प्रकाश सिंह जी अपने लेख में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर के योगदान का लेखा जोखा प्रस्तुत कर रहे हैं। हालाँकि यह एक व्यापक विषय है, फिर भी इसे कुछ पृष्ठों में ही समाहित करने का प्रयास किया गया है।

अंतस का यह अंक सामाजिक दायित्व के विषय को समर्पित है। इसे आप के समक्ष रखते हुए मैं अपने मस्तिष्क में घुमड़ रहे एक प्रश्न को आपके साथ बांटने का लोभ संवरण नहीं कर पा रही हूँ। एक विचार जो प्रश्न बनकर मेरे सामने खड़ा है – क्या व्यक्ति के रूप में हम देश और समाज के प्रति अपने दायित्व का वहन कर पा रहे हैं? इस संदर्भ में गजानन माधव मुक्तिबोध जी की कविता 'अंधेरे में' की निम्न पंक्तियाँ मन में गूंज रहीं है:

अब तक क्या किया,
जीवन क्या जिया !!
बताओ तो किस – किस के लिए तुम दौड़ गए,
करुणा के दृश्यों से हाय ! मुँह मोड़ गए,
बन गए पत्थर,
बहुत – बहुत ज्यादा लिया,
दिया बहुत – बहुत कम,
मर गया देश, अरे, जीवित रह गए तुम!!

मुक्तिबोध जी की यह पंक्तियाँ मुझे उद्वेलित और विचलित करती हैं, और व्यापक स्तर पर चिंतन के लिए बाध्य कर देती हैं।

आशा है इस अंक की रचनाएँ आपको पसंद आएंगी और शायद आपके चिंतन को कुछ दिशा प्रदान करेंगी। आपसे निवेदन है कि अपनी रचनाएँ और प्रतिक्रियाएं, दोनों ही हमें भेजें। पत्रिका के स्तर में सुधार लाने के लिए हम कटिबद्ध हैं और इसके लिये आपके सुझावों की हमें प्रतीक्षा रहेगी। आपसे पुन आग्रह है कि अगले अंक के लिए अपनी और अपने परिजनों की रचनाएँ अवश्य और यथाशीघ्र भेजें।

आप सभी को संपादक मण्डल की ओर से गणतन्त्र दिवस की बधाई।

धन्यवाद सहित,

शिखा दीक्षित

शिखा दीक्षित
मुख्य संपादक

साक्षात्कार

मानव मूल्यों की शिक्षा को समर्पित एक सफल व्यक्तित्व : श्री गणेश बागड़िया

यदि आई आई टी कानपुर से शिक्षा प्राप्त ऐसे विद्यार्थियों की सूची बनाई जाए जिन्होंने सामाजिक उन्नयन और जनहित के आंदोलनों के लिये अपना जीवन समर्पित कर दिया हो तो उसमें जो नाम सबसे ऊपर उभर कर आता है वह है- आई आई टी कानपुर के सत्येंद्र कुमार दुबे पुरस्कार (2006) से सम्मानित, श्री गणेश बागड़िया का। श्री बागड़िया ने सन 1982 में आई आई टी कानपुर से विद्युत अभियांत्रिकी में बी टेक और 1985 में एम टेक की उपाधियाँ प्राप्त कीं। उनकी विशेषज्ञता Electronics and Communication में थी। श्री बागड़िया अपने बैच के मेधावी विद्यार्थी थे, जो पढ़ाई के अलावा प्रारम्भ से ही अन्य सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहे हैं। विद्यार्थी काल में वे आई आई टी कानपुर के स्टूडेंट जिमखाना के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। मानव मूल्यों के जिस प्रयास से वे वर्तमान में जुड़े हैं, उसकी चर्चा स्वयं तत्कालीन राष्ट्रपति महामहिम डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम ने 2006 में स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर अपने राष्ट्र के नाम संदेश में की थी और लगभग 3.30 मिनट तक उन्होनें जीवन विद्या और उसके सफल प्रयोगों के बारे में बताया था। वर्तमान में श्री बागड़िया "मानवीय शिक्षा संस्कार संस्थान, मंधना, कानपुर" में रहते हुए इस कार्य को आगे बढ़ाने में सतत प्रयासरत हैं।

प्रश्न-बागड़ियाजी सबसे पहले आप आई आई टी कानपुर में अपने प्रारम्भिक काल के बारे में बताइये और किस प्रकार सामाजिक कार्यों की दिशा में आपकी रुचि जागी?

उत्तर- सामाजिक विषयों में मेरी रुचि प्रारम्भ से ही थी। समाज के नियमों के बारे में जानने की जिज्ञासा थी और लगता था कि समाज ठीक नहीं चल रहा है। ठीक क्या है, पता नहीं था। मैंने 1977 में सेंट जेवियर्स रांची से इंटरमीडिएट की परीक्षा पास की थी और सुना था कि विज्ञान पढ़ने से सभी प्रश्नों के उत्तर मिलेंगे। अतः विज्ञान और प्रौद्योगिकी में आगे अध्ययन का निश्चय किया। मेरे एक मित्र सुनील सिन्हा को आई आई टी के बारे में पता था और उसने संयुक्त प्रवेश परीक्षा के दो फॉर्म मँगवा लिए। उसमें से एक फॉर्म मैंने भी भर दिया। प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद हमारा प्रवेश आई आई टी कानपुर के विद्युत अभियांत्रिकी विभाग में हो गया। किन्तु प्रवेश पा लेने के कुछ ही दिनों में मुझे समझ में आने लगा कि आई आई टी के पाठ्यक्रम में मेरे जीवन, समाज और दर्शन संबंधी प्रश्नों एवं उनके उत्तर की जगह नहीं है। आई आई टी विज्ञान और प्रौद्योगिकी में भले ही एक विश्व-विख्यात संस्था हो, परंतु मनुष्य और मानव समाज की समस्याओं का क्या समाधान है, इसका उत्तर पाना उसके लिये मुख्य मुद्दा नहीं है। पर, आई आई टी कानपुर में कुछ सजग विद्वानों और विचारकों से अवश्य परिचय हुआ। जैसे- डॉ. भारतेन्दु प्रकाश, डॉ. वी सिन्हा, डॉ. पी आर के राव, डॉ. कुणाल घोष। इसके अलावा डॉ. आर एस मिश्रा, डॉ. एस एन महाजन, डॉ. ए के शर्मा से भी चर्चा होती रहती थी। आई आई टी कानपुर में सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, दार्शनिक सिद्धांतों के बारे में जानने को मिला। मैंने इन विषयों पर लाइब्रेरी में उपलब्ध सभी प्रमुख पुस्तकें पढ़ लीं। प्रश्न था- बी टेक करके क्या करेंगे? प्रोफेसरों ने कहा कि पहले ढूंढ लो क्या करना है और फिर सामाजिक कार्य में कूदना। इन परिस्थितियों में, जब कि भविष्य के बारे में "पूरी क्लैरिटी" नहीं थी, एम टेक में एडमिशन ले लिया। इसके साथ-साथ सामाजिक आंदोलनों में भी हिस्सा लेना शुरू कर दिया।

प्रश्न-किस प्रकार के सामाजिक आंदोलनों में?

उत्तर- अपने बी टेक के दिनों में ही मैं सर्वोदय से एवं किसान आंदोलन से जुड़ चुका था। मैंने बी टेक और एम टेक करते वक्त देश भर में अनेकों सामाजिक प्रयोगों को जाकर देखा। 1982 में मैंने आई आई टी कानपुर के पूर्व एवं तत्कालीन छात्रों द्वारा चलायी जा रही 'मजदूर किसान नीति' पत्रिका का सम्पादन किया, जो मुख्य रुप से देश में चल रहे किसान आंदोलनों के बीच समन्वयन का काम करती थी। इसी दौरान कुछ विद्यार्थियों (अशोक झुनझुनवाला, सुनील सहस्रबुद्धे, वी बालाजी, बालसुब्रमनियम आदि) ने मिलकर Patriotic and People Oriented Science & Technology (PPST) Group की स्थापना की जिसका आशय भारतीय समाज में विज्ञान एवं तकनीक की अवधारणाओ पर अध्ययन, शोध एवं अभ्यास करना

था। इसमें मेरी भी सक्रिय भागीदारी रही। इसके साथ-साथ नजदीक के एक गाँव – टिकरा में हमने अनौपचारिक रूप से बच्चों को पढ़ाने का काम शुरू किया। 1982 में मैं स्टूडेंट जिमखाना का अध्यक्ष चुना गया। इस भूमिका में मैंने जिमखाना की ओर से Forum for Social Awareness एवं Lecture and Demonstration Series के तहत सामाजिक विषयों पर अनेकों व्याख्यान आयोजित किए।

बाद में हमने मेरठ के किसान आंदोलन में भी हिस्सा लिया। हम लोगों को लगता था कि किसानों को अपनी मेहनत का उचित मूल्य नहीं मिलता है। देश में भयंकर आर्थिक असमानता है एवं इसका मुख्य कारण औद्योगिक एवं खेती के उत्पाद के बीच असमान विनिमय की शर्तें (unequal terms of exchange) हैं। इस आंदोलन के अन्य नेताओं में श्री महेंद्र सिंह टिकैत, डॉ. सत्येंद्र सिंह व डॉ. रण सिंह आर्य प्रमुख थे। हम लोगों ने अनुमान लगाया कि गन्ने की प्रति क्विंटल लागत 15 रुपए पड़ती थी और वह 18 रुपए प्रति क्विंटल पर बिकता था। किसानों को अपनी उचित मजदूरी नहीं मिल रही थी। अपनी मजदूरी और खर्चों के लिए एक क्विंटल पर केवल तीन रुपये बच रहे थे। इस आंदोलन के तहत मेरठ के एक धरने में लगभग दस लाख किसानों ने हिस्सा लिया और वहाँ पच्चीस हजार पी ए सी के लोग तैनात थे। श्री वीर बहादुर सिंहजी उस समय उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री थे। आंदोलन सफल हुआ और गन्ने का दाम प्रति क्विंटल 18 रुपए से बढ़ कर 35 रुपए हो गया।

प्रश्न-अपने विद्यार्थी जीवन के किसी सामाजिक प्रयोग के संबंध में कुछ बताइये।

उत्तर-1982-83 में उन्नाव के परियर में गंगा बैराज के साथ गंगा से 6 किमी दूर बंधा बनाकर उसके बीच में झील बनाने का प्रस्ताव था जिसमें आस-पास के 20 गाँव डूब रहे थे। उन्नाव की स्वयंसेवी संस्थाओं के साथ मिलकर हम लोगों ने इसके खिलाफ आंदोलन किया। 3 साल के अथक प्रयास एवं सभी 20 गाँव के लोगों की सक्रिय भागीदारी के फलस्वरुप झील बनाने का प्रस्ताव स्थगित हो गया एवं कानपुर के पीने के पानी की आवश्यकता-पूर्ति हेतु सिर्फ बैराज बनाने का काम ही पूरा किया गया। इस तरह इन बीस गाँव के लोग विस्थापित होने से बच गये।

मैं जिमखाना का प्रेसिडेंट था और कमल सक्सेना (जो आगे चलकर यूपी कैडर के आई पी एस ऑफिसर बने) कल्चरल सेक्रेटरी थे। हम लोगों को लगता था कि आई आई टी कानपुर के कल्चरल फेस्टिवल–अंतराग्नि–के स्वरूप में परिवर्तन लाने की आवश्यकता है। हमें अंतराग्नि का प्रचलित स्वरूप किसी भी प्रकार से भारत के समाज और संस्कृति से जुड़ा हुआ नहीं लगता था। हम लोगों ने इस कल्चरल फेस्टिवल के स्वरुप को बदलने का प्रयास किया, लेकिन सफल नहीं हुए।

प्रश्न-धीरे-धीरे आप मूल्य शिक्षा की ओर कैसे मुड़ गए?

उत्तर- मेरठ के किसान आंदोलन में हमने एक नयी बात सीखी। गन्ने का दाम तो बढ़ गया और किसानों की आर्थिक हालत भी सुधर गई किन्तु इससे सामाजिक विकास नहीं हुआ। संपन्नता आने के साथ समाज में दहेज और मद्यपान जैसी बुराइयाँ आ गईं और आपसी लड़ाई-झगड़े बढ़ गए। मुझे तब लगा कि मनुष्य के व्यक्तित्व का विकास होना जरुरी है और इसलिए मूल्यों का प्रश्न सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रश्न है। मूल्यों के सुधार के बिना सिर्फ आर्थिक सुधारों से सामाजिक उन्नयन संभव नहीं है। हमारे साथियों में मैं, डॉ. सत्येंद्र सिंह व डॉ. रण सिंह आर्य विपश्यना की ओर आकर्षित हो गए। कुछ प्रगति भी हुई किन्तु हमें यह समझने में लगभग दस वर्ष लग गए कि विपश्यना आदि से व्यक्तिगत उन्नति तो संभव है पर इससे समाज नहीं बदलेगा। हम तो व्यक्ति और समाज दोनों के लिए रूपान्तरण का मार्ग ढूंढ रहे थे। इसी उथल-पुथल के बीच रण सिंह आर्य अमरकंटक में श्री ए.नागराज शर्मा जी से जाकर मिले। नागराज जी कभी-कभी आई आई टी दिल्ली में आते थे और उनसे मिलकर, चर्चा करके हम लोगों को लगा कि इससे रास्ता मिल सकता है। इस प्रकार हम कई लोग धीरे-धीरे मूल्य शिक्षा को समझने और उसे लोगों के साथ संवाद करने के प्रयास में लगे।

प्रश्न-मूल्य शिक्षा के मूल सिद्धान्त क्या हैं?

उत्तर- (अपने एक प्रकाशित लेख से उद्धृत करते हुए) मूल्य शिक्षा के अनुसार, व्यक्ति के स्तर पर चार लक्ष्य हैं: (1) विचारों के स्तर पर स्पष्टता अथवा समाधान (2) व्यवहार के स्तर पर अन्य मनुष्यों के साथ पारस्परिक सुख और पारस्परिक समानता पूर्ण व्यवहार जो शोषण और शासन से मुक्त हो (3) भौतिक जगत के नियमों के अनुकुल, आवर्तनशील विधि से उत्पादन और प्रकृति का संवर्धन और (4) सत्य की प्रत्यक्ष अनुभूति और सत्य के ज्ञान की आश्वस्ति जो सुख की निरंतरता का आधार बन सके। इसी प्रकार समाज के स्तर पर मानव के चार लक्ष्य हैं: (1) प्रत्येक व्यक्ति के स्तर पर समाधान, सही समझ, जो सभी मनुष्यों में प्रसन्नता को सुनिश्चित करती हो (2) प्रत्येक परिवार की समृद्धि (एक भाव कि उनके पास उनकी आवश्यकताओं से अधिक उपलब्ध है, न कि आवश्यकताओं से कम); (3) समाज में अभय और एक दूसरे के प्रति विश्वास का भाव जिसमें सभी के साथ सम्बन्धों की स्वीकार्यता निहित है; और (4) प्रकृति में सह-अस्तित्व जो मानव एवं मानवेतर प्रकृति के लिये परस्परपूरक हो, न कि शोषण या किसी के अस्तित्व को संकट में डालने की संभावना व्यक्त करती हो। सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों के शिक्षा संस्कार से मानव में मानवीय चेतना, मानवीय आचरण, और मानवीय समाज में भागीदारी की योग्यता विकसित होती है।

मूल्य शिक्षा का आधार है-सामूहिक चर्चा के क्रम में स्वयं के अधिकार पर जाँच परख कर (अपनी सहज स्वीकृति के आधार पर एवं सर्व-शुभ के अर्थ में होने के आधार पर) निर्णय लेना। इसमें गुरुओं, काल्पनिक ईश्वर और पवित्र ग्रन्थों के मानने अथवा न मानने की कोई शर्त नहीं है। मूल्य शिक्षा जिन सामाजिक मूल्यों की बात करती है, वे सार्वभौमिक हैं और प्रत्येक आयु, लिंग, वर्ग, धर्म, क्षेत्र, और जाति के लिए समान रुप से लागू होते हैं। मनुष्य की सहज स्वीकृति ही उसकी कसौटी है।

प्रश्न- आप और आपकी संस्था ने इस दिशा में क्या किया है?

उत्तर-हमने इस दिशा में अनेकों कार्य किए हैं किन्तु प्रमुख रूप से हमारी योजना के लक्ष्य हैं-विद्यार्थियों, अभिभावकों, शिक्षकों, नीति निर्धारकों और प्रशासकों तक मूल्य शिक्षा की बात पहुँचाना। आज भारत के चालीस विश्वविद्यालयों, भूटान के दो विश्वविद्यालयों, IITs, आईआईआईटी हैदराबाद, Dr- APJ Abdul Kalam Technical University Lucknow, Punjab Technical University, Himachal Technical University से संबद्ध संस्थानों, मध्य प्रदेश के दो कृषि-विश्वविद्यालयों, आंध्र प्रदेश एवं तेलंगाना की स्टेट यूनिवर्सिटी में मूल्य शिक्षा को एक कोर्स के रुप में पढ़ाया जा रहा है। इसके तहत करीब 4000 कॉलेजों में तकरीबन 4 लाख विद्यार्थी प्रति वर्ष इस कोर्स को पढ़ रहे हैं। अनेकों शिक्षक, विद्यार्थी और स्टॉफ मेम्बर्स मूल्य-शिक्षा को आगे ले जाने के लिए तैयार हो चुके हैं। बांग्लादेश में भी हम मूल्य-शिक्षा को प्रस्तावित कर चुके हैं। इसके साथ-साथ अन्य सभी SAARC देशों तक मूल्य शिक्षा की बात पहुँचाने के संदर्भ में प्रयास जारी है। प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष हम आईआईटी कानपुर में 10 से 12 फरवरी तक एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित कर रहे हैं जिसमें 8 देशों के 80 उपकुलपतियों से स्वीकृति पत्र प्राप्त हो गए हैं।

प्रश्न-क्या आप technical universities और अन्य universities के अन्यत्र सामाजिक और राजनीतिक आंदोलनों के साथ मिलकर भी कुछ कार्यक्रम चला रहे हैं?

उत्तर-हम लोग मुख्य रुप से उच्च शिक्षा में मूल्य शिक्षा को सुनिश्चित करने का कार्य कर रहे हैं। इसके माध्यम से बहुत सारी संस्थाओं और संगठनों के साथ भी इस विषय पर चर्चा और संवाद सहजता पूर्वक शुरु हो गया है। जैसे-भूटान में उच्च शिक्षा में कार्य करते हुए वहाँ के प्रायः सभी शैक्षणिक और प्रशासनिक संगठन (Anti-Corruption Commission,Royal Institute of Governance and Strategic Studies, National Council, National Assembly, Royal Education Council etc) के साथ भी विधिवत कार्य शुरु हो चुका है।

प्रश्न-आज के वातावरण में क्या कभी आपको निराशा नहीं होती?

उत्तर-नहीं। कारण यह है कि मूल्यों का पतन इतना हो चुका है कि सारी दुनिया को समझ में आ गया है कि अब संभालने के प्रयत्न नहीं हुए तो मनुष्य जाति का अस्तित्व समाप्त हो जाएगा। ठीक होने और ठीक करने के अलावा अब कोई विकल्प बचा नहीं है।

प्रश्न - अंत में आप आईआईटी के पाठ्यक्रम के बारे कुछ कहना चाहेंगे?

उत्तर-पाठ्यक्रम की समस्या व्यापक है। शिक्षा का लक्ष्य मानव के व्यक्तित्व का समग्र विकास (ऊपर वर्णित चारो आयाम) करना है। वर्तमान में शिक्षा बहुत अधिक अकादमिक हो गयी है और पश्चिमी देशों की शिक्षण पद्धति पर आधारित हैं। हमारे यहाँ जो सामाजिक विषयों को पढ़ाते हैं, उन्हें समाज का सीधा अनुभव नहीं है। जो सामाजिक प्रयोगों में लगे हैं, वे विश्वविद्यालयों में नहीं हैं। अतः पढ़ाने वालों और सामाजिक प्रयोगों में रत लोगों को एक साथ लाने की आवश्यकता है।

आई आई टी में मूल्य शिक्षा के जो प्रयोग शुरू हुए हैं उन्हें आगे बढ़ाने की आवश्यकता है। मूल्य शिक्षा पर एक आवश्यक विषय पढ़ाया जाना चाहिए। कुछ प्रयत्न तो हुए है पर वे नाकाफी हैं। विकास, समृद्धि एवं सफलता को नए ढंग से परिभाषित करने की आवश्यकता है। सिर्फ सुविधा मानव की तृप्ति के लिये पर्याप्त नहीं है; जबकि आज की शिक्षा, समाज एवं व्यवस्था का ध्यान मुख्यतः इसी पर केंद्रित है। सुविधा के साथ-साथ मानव को दूसरे मानवों एवं शेष प्रकृति के साथ पूरकता पूर्वक जीने की समझ एवं अभ्यास विकसित करने की भी आवश्यकता है। हर मानव तृप्त हो, सबका सम्मान हो, सब समृद्ध महसूस करें और आवर्तनशील विधि से मनुष्य और प्रकृति दोनों का विकास हो; ऐसा लक्ष्य होना चाहिए।

श्री गणेश बागड़िया
मानवीय शिक्षा संस्कार संस्थान, मंधना
gpbagaria@yahoo.com
+91-9450342998
साक्षात्कार-कर्ता प्रो. अरुण कुमार शर्मा एवं प्रो. शिखा दीक्षित

अंतर्मुखी

ढूंढे होंगे तुमने लुक्का छिपी के कितने ही चोर,
पर मेरा बचपन तो खुद को ढूँढ़ने में ही निकल गया।
बहाई होंगी तुमने कितने ही कागज की कश्तियाँ,
पर मेरा बचपन तो अकेले खिड़कियों पे बैठ
बरसात को देखने में निकल गया।
खोखो, गिल्ली और कब्बडी..
खेले होंगे तुमने और कितने ही खेल,
पर मेरा बचपन तो दूर बैठे तुम्हें देखने में निकल गया।
बनाएंगे होंगे तुमने कितने ही कच्चे पक्के दोस्त,
पर मेरा बचपन तो कापियों पे पेंसिल घिसने में निकल गया।
होंगी तुम्हारे पिटारे में बचपन की बहुत सी यादें,
पर मेरा पिटारा तो ना जाने क्यों कुछ खाली सा रह गया।

अनूप

> एक पागल व्यक्ति हमसे या आपसे कमतर संगीतकार नहीं, अंतर इतना है कि उसके स्वर यंत्र अस्वरबद्ध है।
>
> खलील जिबरान

कविता

कच्चे बसंत

अपने अंदर उगते कच्चे बसंत से
महकता है हिरन
जब तक
सुगंध और फैले
सुमन और खिले
तब तक तुम्हारी बौराई नजरें
चीर देतीं हैं उसे
झपट लेती हैं रक्त रंजित दाने
चिथड़ा-चिथड़ा शरीर
कतरा-कतरा खून
जंगल सा हुंकारता
कुलाँचे भरता
सजीव सौन्दर्य
बन जाता है शव
अपनी ही कस्तूरी से अभिशप्त मृग की
बेज़ार आँखों में झलकती है
नारी की परछाईं
समानान्तर चलने लगे हैं
मृग और स्त्री।

शोभा रस्तोगी

दोहे

सादर अभिवादन! अंतस का नारी सशक्तिकरण अंक प्राप्त कर हार्दिक प्रसन्नता हुई, आभार। प्रस्तुत अंक में आपने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान के कार्यकलापों की जानकारियों के साथ ही ज्ञानवर्धक आलेख एंव मर्मस्पर्शी कवितायें देकर चार चाँद लगा दिये हैं। सच-पत्रिका की सभी सामग्री पठनीय, ज्ञानवर्धक एवं मनोरंजक है। आपके सम्पादकीय कौशल की जितनी भी सराहना की जाए, कम होगी। शानदार, जानदार और ज्ञानवर्धक प्रस्तुति के लिए आप बधाई के पात्र हैं।

मैं भी आगामी अंक में शामिल होने हेतु मोह संवरण नहीं कर पा रहा हूँ। अत: कुछ दोहे प्रस्तुत हैं। आशा है पत्रिका के लिए उपयोगी होंगे। शेष शुभ ईश्वर से आपकी एवं अंतस परिवार की कुशलता एवं पत्रिका की प्रगति की कामना के साथ आपका,

डॉ. अंसार कम्बरी

गंगा मय्या को अगर नहीं करोगे साफ।
गंगा मय्या भी तुम्हें नहीं करेंगी माफ।।

बाधित करो न बाँध से, गंगा माँ की राह।
अविरल बहने दो उन्हें, रोको नहीं प्रवाह।।

साफ नदी करते नहीं, पैसा करते साफ।
पतिति पावनी देश से, माँग रही इन्साफ।।

गंगा जल से दूर हो, जीवन का संताप।
मैली करके पावनी, पछतायेंगे आप।।

गाँव-नगर में जब गयी, घायल हुआ शरीर।
गंगा मय्या ने कहा, फूट गयी तकदीर।।

चाहे जितनी प्यास हो, चाहे जितनी पीर।
हो जायेगी दूर सब, चल गंगा के तीर।।

चले भगीरथ जिस तरफ, चली उधर जलधार।
गंगा जी ने कर दिया, पुरखों का उद्धार।।

डॉ. अंसार कम्बरी

बचाएं अपनी धरती मात को

होम हो रही है धरती
प्रदूषण ने डाला डेरा,
मानव के कुकर्मो का,
फैला है चहुं ओर अंधेरा,
बदलो अपनी आदत को,
समझाओ मानव जात को,
आओ हम सब मिलकर बचाएं
अपनी धरती मात को।।

कई दिनों से धरती माता
दुख कष्टों में पड़ी है।
अब नहीं सहन कर सकती है,
यह विनाश-कगारे खड़ी है।
अगर सुख से जीना चाहो,
रोको दु:ख की रात को।
आओ हम सब मिलकर बचाएं
अपनी धरती मात को।।

सुख के साधन हम, तुम सबने खोजे,
कर लिया सुख का आभास,
इतना सुख ढेरों दु:ख देगा,
कर देगा हमारा विनाश।
हम अपना तो भला सोचें, पर
न आने दे विनाश की बात को।
आओ हम सब मिलकर बचाएं,
अपनी धरती मात को।।

नहीं विरासत में मिली हमें यह,
लिया पूर्वजों से उधार हमने।
क्या देंगे हम भावी पीढ़ी को
अगर किया इसे बीमार हमने।
जरा सोचो अपने मन ही मन,
और उत्तरित करो इस बात को।
आओ हम सब मिलकर बचाएं,
अपनी धरती मात को।।

आज नहीं तो कल यह हम पर तुम पर
सारा क्रोध उगल देगी,
हमारी इन सब खुशियों को
यह पलभर में मसल देगी।
अगर किया नहीं सम्मान इसका,
तो कैसे रोकोगे इसके घात को।
आओ हम सब मिलकर बचाएं।
अपनी धरती मात को।।

हरिराम रेगर, छात्र

समाज का निर्माण

हर माँ-बाप की हार्दिक इच्छा होती है कि उनके बच्चे उच्च कोटि के चरित्रवान बनें और वे इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अपने संस्कारों के अनुरूप प्रयास भी करते हैं।

हमारे पूर्वजों का कहना है कि चरित्र माँ देती है। मैं तो कहता हूँ कि आप एक दीवार चुनवा रहे हैं और नींव की पहली ईंट टेढ़ी हो गई तो दीवार टेढ़ी ही रहेगी चाहे वह सातवें आसमान तक जाए। इसलिए माँ-बाप और विशेष रूप से माताओं का यह दायित्व बनता है कि वे चरित्र रूपी दीवार में कोई भी ईंट टेढ़ी न लगने दें। इस दायित्व की पूर्ति न कर पाने का कारण उनका मोह होता है और अज्ञान भी। एक धारणा है कि अभी बच्चा है- हम कुछ भी सही गलत करें ये इन्हें क्या जानें। यह बहुत बड़ा भ्रम है इससे बचना चाहिए। अभिमन्यु ने अपनी माँ के गर्भ में ही अपने पिता व माँ के वार्तालाप से चक्रव्यूह का भेदन सीख लिया था। खूब समझ लेना चाहिए कि बच्चा गर्भ में ही अपने पिता व माँ के खान-पान व व्यवहार से सूक्ष्म रूप से प्रभावित होता रहता है जो आगे चलकर विशाल रूप ग्रहण कर लेता है।

अत: यदि हम देखें तो समाज का निर्माण हम स्वयं करते हैं और फिर उसी समाज में कमियाँ बताते रहते हैं।

कैफ़े

एक खूबसूरत जगह,
जहां, चमकदार शुभ्रता राज करती है,
ठहाके और मुस्कराहटें,
बरसाती हैं रस, हर वक्त जैसे!

पर! एक अतीत,
जिसके हर लम्हे से दु:ख टपकता है,
इस मोहक गुहा के चारों ओर,
कितने आँसू हैं और कितना दर्द!!

फिर भी इस घर में,
प्यार है, उम्मीदें हैं और
बुलाती हैं उसको जो,
चले जाने के बाद भी कहीं नहीं गया है !!!

दुमंजिले जर्जर भवनों के बीच से एक संकरे, भीड़-भाड़ तथा टेढ़-मेढ़े रास्ते से होकर मैं अपने गंतव्य की ओर आगे बढ़ रही थी। मैं भीड़ की धक्का-मुक्की से बचते-बचाते गली की दुकानों के बीच से अपना रास्ता बनाने में सफल हुई। हालाँकि एक बार तो मुझे संदेह हुआ कि मेरी मित्र ने इस स्थान का चयन क्यों और किस आधार पर किया? मेरी मित्र भी मेरी ही तरह भोजन की अच्छी जानकार है तथा किसी भी प्रकार के भोजन के चयन और उसकी गुणवत्ता को लेकर आज तक उसने मुझे कभी निराश नहीं किया था। इस प्रकार उसकी भावनाओं की कद्र करते हुए मैं अपने गंतव्य की ओर आगे बढ़ती रही। मैं संभवत: अपने गंतव्य से पाँच यार्ड की दूरी पर ही रही हूँगी कि तभी बेकरी की सुंगध मेरे नथुनों से टकराई और मैं समझ गई कि मैं सही दिशा में आगे बढ़ रही हूँ। फिर क्या था, मेरी चाल दोगुनी हो गई। मैं उस जगह की तरफ तेजी से लपकी जहाँ से ताजी बेकरी की सुगंध आ रही थी। उस स्थान पर पहुंचकर मुझे एक सुन्दर और अनोखा सा कैफ़ेटेरिया दिखाई पड़ा, जिसका आस – पास के स्थान के साथ कोई साम्य नहीं था। अपनी पृष्ठभूमि से बिल्कुल अलग यह कैफ़ेटेरिया अपने अद्‌भुत अस्तित्व को दर्शा रहा था। कैफ़ेटेरिया ऐसा दिखाई पड़ रहा था मानो कि यह किसी इंग्लिश कंट्रीसाइड या फिर फ्रांस के किसी मुख्य मार्ग के किनारे पर स्थित हो। लेकिन यहाँ मुझे बड़े ही खेद के साथ कहना पड़ रहा है कि इस कैफ़ेटेरिया को बाहरी परिवेश से किसी भी प्रकार का सहयोग प्राप्त नहीं हो रहा था। मैं अचंभित रह गई कि ऐसी जगह पर इस प्रकार का आकर्षक भोजनालय क्यों बनाया गया है?

जैसे ही मैंने कैफे में प्रवेश किया, मैंने अपनी मित्र का इस प्रकार के कैफ़ेटेरिया में भेजने के लिए मन ही मन आभार व्यक्त किया। कैफ़ेटेरिया के अन्दर ताजी खुशबू व्याप्त थी- ताजी कॉफी, ताजी कुकीज, ताजी पेस्ट्रीज तथा इनके अलावा और भी अन्य खाद्य सामग्रियों की भरमार थी। इस कैफ़ेटेरिया के आंतरिक भाग को इस तरह से सजाया गया था कि यदि एक बार व्यक्ति इसके अंदर प्रवेश कर जाए तो फिर बाहर निकलने का मन ही नहीं करे। सुन्दर वाल हैंगिंग, प्रतिष्ठित चित्रकारों की कुछ मूल कलाकृतियाँ, पुरानी फिल्मों के पोस्टर, विशिष्ट मुखौटों आदि से सु-सज्जित दीवारें कैफ़ेटेरिया की सुंदरता को बखूबी व्यक्त कर रहीं थीं। मैंने सोचा कि यह कैफ़ेटिरिया निश्चित रूप से किसी समृद्ध और सुरुचि-सम्पन्न व्यक्ति का होगा जिसका इस शहर से कोई न कोई अविस्मरणीय नाता होगा; तभी तो उसने ऐसे भीड़-भाड़ वाले स्थान पर इतना आकर्षक भोजनालय बनाने का कष्ट उठाया है। हालाँकि शोरगुल वाली जगह पर इस प्रकार के उत्कृष्ट कैफ़ेटेरिया के निर्माण के पीछे का वास्तविक कारण अभी भी मेरी समझ से परे था और मैंने इस कैफ़ेटेरिया की स्थापना के पीछे के वास्तविक कारणों का पता लगाने की ठान ली ।

जैसे ही मैंने इसे कैफ़े में अपना स्थान ग्रहण किया वैसे ही इस कैफे के विशुद्ध वातावरण ने मेरी इंद्रियों को शांत कर दिया। मेरी नजर दूसरे ग्राहकों पर पड़ी। वेटरों के साथ हो रहे उनके वार्तालाप से मुझे महसूस हुआ कि वे लोग इस जगह से खासे परिचित थे। उनके वार्तालाप से मुझे एहसास हुआ कि वे इस कैफ़े में आने वाले नियमित ग्राहक थे और उनमें से अधिकाँश का इरादा इस कैफ़े को जल्दी छोड़ने का नहीं लगता था। कैफ़े के अन्दर बैठे ग्राहकों में युवा विद्यार्थी, माता-पिताओं के साथ छोटे बच्चे तथा कुछ वरिष्ठ नागरिक थे। ग्राहकों में कुछ विदेशी नागरिक भी शामिल थे। इसलिए मुझे यह देखकर कोई आश्चर्य नहीं हुआ कि व्यंजन सूची में कीश, डैनिश पेस्ट्रीज, कई प्रकार के चीज केक, मिश्रित सैण्डविच तथा स्वास्थ्यवर्धक सलाद आदि शामिल थे। मैं अपनी स्वाद-लोलुपता के कारण सब कुछ भूल गई तथा इस प्रकार की क्षुधावर्धक व्यंजन सूची के सामने जल्द ही आत्मसमर्पण कर बैठी। मैं एक भूखे व्यक्ति की तरह खाने की चीजें मँगवाती गई - सादे सैण्डविच और सलाद से लेकर, क्रीम और मक्खन वाले कैलोरीयुक्त डेजर्ट्स (Desserts) तक। कह सकते हैं कि मेरी भोग-वृत्ति का कोई अंत न था।

अपनी क्षुधा शांत करने के पश्चात मैंने एक कप कॉफी ली और अब मैं उस दम्पति से मिलने के लिए उत्कंठित थी जिसने इस शोरगुल तथा गंदगी के बीच स्वर्ग जैसे कैफ़ेटेरिया का निर्माण कराया था। मैंने वहाँ पर उपस्थित एक वेटर से इस कैफ़ेटेरिया के स्वामी के बारे में जानना चाहा । उस वेटर ने मुझे उसी भवन की ऊपरी मंजिल पर जाने के लिए कहा जहाँ पर वह दम्पति रहते थे। ऐसा प्रतीत हुआ कि वे काफी मिलनसार हैं। इसी सोच के साथ मैं ऊपरी मंजिल पर स्थित उनके अपार्टमेंट तक पहुँची। वहाँ पहुँच कर जैसे ही मैंने घंटी बजाई वैसे ही बिना किसी देरी के दरवाजा खुला। एक अधेड़ उम्र की सुन्दर महिला ने दरवाजा खोला। महिला के पति सोफे पर बैठे हुए अखबार पढ़ रहे थे। मैं उनके शानदार एवं सु-सज्जित कमरे को देखकर बिलकुल भी आश्चर्यचकित नहीं थी। मैंने कैफे की सुंदरता से कम इस घर की सुन्दरता की उम्मीद भी नहीं की थी। दम्पति ने विनम्रतापूर्वक मुझसे बैठने के लिए कहा। मैंने संक्षिप्त में उनको अपना परिचय दिया तथा साथ ही अपनी जिज्ञासा के लिए क्षमा भी मांगी; जिसके कारण मैं उस शोर वाले स्थान पर एक सुंदर स्थल रचने वाले व्यक्तियों से मिलना चाहती थी ।

मुझे एक कप चाय की पेशकश की गई लेकिन मैंने कैफ़े में किए गए शाही भोजन को याद करके विनम्रतापूर्वक मना कर दिया। एक पत्रकार की तरह मैंने उस जगह की उत्पत्ति के कारणों को जानने की भरसक कोशिश की कि "इस कैफ़ेटेरिया का नाम मनु क्यों रखा गया है अथवा इसका नाम भारतीय होने के बावजूद भी यहाँ पश्चिमी व्यंजन ही क्यों मिलते हैं?" साथ ही मैंने उस कैफ़ेटेरिया को खोज लेने की अपनी खुशी का इजहार किया और दम्पति को बधाई दी कि उन्होंने एक ऐसे रमणीक और सुखद स्थान की रचना मेरे जैसे थके हुए तथा लोभी व्यक्तियों के लिए की जो हमेशा स्वादिष्ट भोजन की उत्कट इच्छा रखते हैं। अपने परिवेश से अलग वह कैफे स्वादिष्ट भोजन की इच्छा रखने वाले लोगों के लिए मक्का से कम नहीं था ।

मैं कैफ़ेटिरिया की प्रशंसा में मगन हो गई और शायद कुछ और समय तक इस प्रशंसा में खोई रहती अगर मेरी उदार मेजबान मेरे शुरूआती इनकार के बावजूद एक कप चाय और घर पर बनी कुकीज मेरे सामने रखकर मेरा ध्यान उस ओर न खींचतीं। कैफ़टेरिया के प्रति मेरी अति उत्साही प्रशंसा को बीच में रोकना एक विवेकी निर्णय था। इस बार मैं चाय के लिए मना न कर सकी; साथ में दिये गए मिश्रित कुकीज़ बहुत लुभा रहे थे। जैसे ही मैंने चाय की चुस्की ली वैसे ही मेरे मेजबान ने पहली बार कुछ बोलना चाहा। उनकी बात सुनने के पश्चात मैं कैफ़ेटिरिया की स्थापना के पीछे की कहानी सुनकर हतप्रभ रह गई।

मेरे आतिथेयों श्री एवं श्रीमती सेन 80 के दशक में अपनी शादी के तुरंत बाद बकिंघमशायर चले गए थे। वे इंग्लिश कंट्रीसाइड के स्नेह में इतने खो गये थे कि उन्होंने भारत वापस आने के बारे में कभी विचार ही नहीं किया था। स्वादिष्ट भोजन एवं सफर करने के प्रति उनके जुनून ने उन्हें यूरोपीय महाद्वीप घूमने को प्रेरित किया और साथ ही वे दोनों घर पर और बाहर भी हमेशा विविध प्रकार के भोजन तथा भोजनालयों की तलाश में रहते थे। भोजन के प्रति उनके जुनून ने ही उन्हें अपनी कॉलोनी में एक भोजनालय निर्मित करने की प्रेरणा प्रदान की। चूँकि श्रीमती सेन का पहला बच्चा जन्म लेने वाला

था इसलिए कुछ समय के लिए उन्होंने अपना ध्यान इस 'ड्रीम प्रोजेक्ट' से हटाकर आने वाले बच्चे की परवरिश के बारे में सोचने में लगा दिया और इस प्रकार उन्होंने कुछ समय के लिए अपने व्यापार-उपक्रम को स्थगित कर दिया।

मनु के जन्म लेने के पश्चात, बेटे की मूलभूत जरूरतों के अलावा, उन्होंने उसे अच्छे संस्कार देने का निर्णय लिया। उनके इस प्रयास में अच्छा संगीत, अच्छी पुस्तकें और निश्चित रूप से अच्छा भोजन शामिल था। अच्छे भोजन के लिए मनु को तीन साल की उम्र तक इंतजार करना पड़ा क्योंकि मनु के माता पिता का मानना था कि इस उम्र से पहले मनु अच्छे और स्वादिष्ट भोजन की पहचान नहीं कर पायेगा। एक बार उस नन्हें-मुन्ने के लिए रसोई घर के दरवाजे खुल क्या गये, उसकी खुशी का कोई ठिकाना न रहा। उस पर स्वादिष्ट भोजन की वर्षा होने लगी फिर चाहे वह घर का बना भोजन हो या बाहर से खरीदा हो।

अपने माता पिता की तरह मनु भी स्वादिष्ट भोजन का अच्छा जानकार था शायद अपनी उम्र के हिसाब से कुछ जल्दी ही सीख गया था। निश्चित रूप से उसके अन्दर यह गुण अनुवांशिक रहा होगा। सात वर्ष की उम्र आते-आते वह भोजन बनाने के लिए इस्तेमाल होने वाले विभिन्न पदार्थों की गणना उतनी ही आसानी से कर लेता था जितनी आसानी से 'Spelling Bee' प्रतियोगिता के लिए कोई प्रतिभागी 'वर्तनी' पर अपनी विशेषज्ञता प्रदर्शित करता है। पाक कला (भोजन बनाने की कला) के प्रति मनु के ज्ञान ने उसके माता पिता को भी अचंभित कर दिया था। इस घटना के पश्चात मनु के माता पिता को कैफे खोलने की अपनी एक पुरानी इच्छा की याद आई। उनकी यह भी योजना थी कि वे इस काम में अपने बेटे के तकनीकी ज्ञान का भी बखूबी इस्तेमाल करेंगे ।

जब मनु लगभग 12 वर्ष का था और माध्यमिक स्कूल में पढ़ रहा था तभी उसके व्यवहार में वक्त से पहले जवान होने के लक्षण दिखाई पड़ने लगे थे। मिलनसार बच्चे के स्वभाव में अचानक आये प्रतिकूल परिवर्तन ने उसके माता पिता को दु:खी कर दिया था। हालाँकि उन्होंने सोचा था कि शायद यह परिवर्तन अल्पकालिक एवं स्वभाविक है परंतु घर पर मनु धीरे धीरे एकांतप्रिय होता गया। उसके माता पिता द्वारा स्वयं तथा बेटे के बीच के रिश्तों को मधुर तथा मजबूत बनाने का हर संभव प्रयास किया गया। श्रीमती सेन बेटे के मनपसंद भोजन के माध्यम से उस तक पहुँचने का भरसक प्रयास करती रहीं। हालाँकि माता द्वारा बनाये गये भोजन पर मनु केवल हल्की फुल्की प्रतिक्रिया ही व्यक्त करता था। माता द्वारा बहुत अधिक स्नेह एवं अनुराग के बावजूद भी वह पूरी तरह से अलगाव की ओर चला गया। जब वह घर रहता तो अपने आप को कमरे में बंद रखना अधिक पसंद करता। देर रात घर पर आना तथा माता-पिता को पूर्व सूचना दिये बिना किसी अंजान जगह पर रात भर ठहरना उसके इस अजीब व्यवहार में शामिल हो गया था।

श्री एवं श्रीमती सेन दोनों ही बेटे को लेकर इतने चिंतित हो गये कि वे अपनी कॉलोनी तथा बेटे के स्कूल को बदलने के निर्णय पर गंभीरता से विचार करने लगे। इस निर्णय को उस समय और मजबूती मिली जब एक दिन स्कूल में अपने एक दोस्त से झगड़ा करने के पश्चात उनका बेटा गंभीर रूप से घायल अवस्था में घर पर आया। इस घटना ने उन्हें इतना परेशान कर दिया कि भारत वापस लौटने का विचार उनके मन में आने लगा।

हालाँकि इस घटना के बाद उन दोनों के परिवार के सदस्यों द्वारा भी उन पर भारत वापस आने के लिए दबाव बनाया गया। इस दबाव के लिए उन्होंने अपने बुजुर्ग माता-पिता तथा उद्दण्ड बच्चे के हठी स्वभाव का हवाला दिया। इसके अतिरिक्त श्री सेन को भोपाल में एक लाभदायक नौकरी का प्रस्ताव भी दिया गया था। श्री सेन ने सोचा कि यदि वह भारत वापस लौटते हैं तो फिर इस प्रकार के प्रस्ताव को स्वीकार करने में ही उनकी बुद्धिमानी है। और वैसे भी, उनकी उम्र तो घट नहीं रही थी।

भारत-वापसी का निर्णय लिया जा चुका था तथा मनु की इस निर्णय में कोई भूमिका नहीं थी सिवाय इसके कि वही इसका मुख्य कारण था। भारत वापस लौटने पर माता-पिता द्वारा एक इंटरनेशनल स्कूल में मनु का दाखिला यह सोचकर कराया गया कि वह दूसरे सिस्टम में अपने आप को आसानी से ढाल लेगा; परन्तु दुर्भाग्य से भारत में मनु अपने मिलनसार एवं सामाजिक स्वभाव को दुबारा हासिल नहीं कर पाया तथा दिनों दिन और अधिक जिद्दी होता चला गया।

उसके अंतर्मुखी स्वभाव ने इस समस्या को और जटिल कर दिया। बाहरी व्यक्तियों के साथ उसका मेल (चाहे फिर वे उसके कक्षा के मित्र रहे हों या फिर उसके रिश्तेदार) सब कुछ बेकार साबित हुआ। उसके इस स्वभाव से उसके माता-पिता के दुखों में इजाफा ही हुआ। घर के अन्दर मनु की उपस्थिति केवल शारीरिक रूप से रहती थी। इस प्रकार मनु के भावनात्मक अलगाव से उसके माता पिता दुःखी हो गये। उन्हें बच्चे के व्यवहार में आये इस परिवर्तन के कारणों का बिल्कुल भी पता नहीं चल पा रहा था। मनु का स्वभाव दिन-प्रतिदिन परेशान करने वाला होता जा रहा था। इस समस्या के समाधान के लिए उन्होनें मनु को एक मनोचिकित्सक के पास ले जाने का निर्णय लिया। एक दिन बड़े ही कूटनीतिक ढंग से उन्होंने यह विषय मनु के सामने रखा और उसे विश्वास दिलाया कि यह सब उसकी भलाई के लिए ही किया जा रहा है। मनु ने शांत होकर अपने माता पिता का प्रस्ताव सुना, उसने न तो इस प्रस्ताव पर अपनी सहमति प्रकट की और नही उसका विरोध किया।

इस विचार-विमर्श के पश्चात मनु के माता पिता अगले सप्ताह पड़ने वाले उसके सोलहवें जन्मदिन को मनाने की योजना बना रहे थे। वे इस कार्यक्रम को पारिवारिक कार्यक्रम रखना चाहते थे इसलिए उन्होंने निर्णय लिया कि वे तीनों ही मनु के जन्मदिन को मनाएगें। मनु की माता की धारणा थी कि यह जन्मदिन उनके बेटे के व्यवहार में कुछ स्वागत योग्य परिवर्तन लेकर आएगा और इसी उम्मीद में वह बहुत सुबह ही मंदिर दर्शन के लिए निकल पड़ीं। दर्शन के पश्चात वह अपने बेटे के लिए प्रसाद भी लेकर आईं। मंदिर जाने के लिए जब उन्होने घर छोड़ा तो उनका बेटा एवं पति दोनों सोये हुए थे। उन्होंने उस समय उन दोनों को जगाना उचित नहीं समझा। जब वह मंदिर से घर वापस आईं तो वह अपने बेटे को प्रसाद देने के लिए सीधे उसके कमरे में गईं। कमरे के निकट जाकर उन्होंने पाया कि उनके बेटे के कमरे का दरवाजा आधा खुला हुआ था तथा मनु अपने बिस्तर पर नहीं था। व्यग्रतापूर्वक उन्होंने अपने बेटे की हर जगह तलाश की। श्री सेन जो कि सोये हुए थे वे भी इस बात को सुनकर अचानक उठ खड़े हुए। पति-पत्नी दोनों अपने बेटे की तलाश में कॉलोनी के प्रत्येक घर में गये और कॉलोनी का कोना कोना छान मारा परन्तु कहीं पर भी उन्हें मनु नहीं मिला। पुलिस स्टेशन जाने के अलावा अब उनके पास और कोई चारा न था। उन्हें ऐसा लगता था कि उनका बेटा इतनी जल्दी शहर को नहीं छोड़ सकता। उनको उम्मीद थी कि पुलिस जरूर उनके बेटे को खोज निकालेगी। दुर्भाग्य से दिन बीतते गये। इसे पुलिस की लापरवाही कहें या फिर मनु की चपलता, परन्तु विक्षिप्त दम्पति को अभी तक मनु की सलामती का कोई शुभ समाचार नहीं मिल पाया था। उन्होंने मनु को खोजने का हर संभव प्रयास किया लेकिन सब कुछ व्यर्थ ही रहा।

सप्ताह बीते, महीने बीते और पता ही नहीं चला कि मनु के अचानक घर छोड़ने के बाद कब एक साल बीत गया। परन्तु अभी भी पति-पत्नी की उम्मीदें इस प्रत्याशा में जिंदा थीं कि एक दिन मनु जरूर हँसते मुस्कराते हुए घर लौट आएगा । इस दुःखद घटना के वर्षों बीत जाने के पश्चात दंपति के मन में एक ख्याल आया कि यदि वे अपने गायब बेटे के नाम पर कैफेटेरिया को शुरू कर दें तो हो सकता है इस कैफेटेरिया का समाचार उनके बेटे तक पहुँच जाए। चूंकि बचपन में मनु की भी ऐसी ही इच्छा थी इसलिए वह जरूर परिवार के कारोबार में हाथ बटाने के लिए आ जाएगा। इस प्रकार इस कैफेटेरिया का जन्म हुआ। यह कैफेटेरिया मनु के नाम से प्रसिद्ध है । दंपति को पूरी उम्मीद थी कि एक न एक दिन ताजी मिठाई और स्वादिष्ट भोजन की खुशबू उनके बेटे तक पहुँच जाएगी। दंपति को लगता था कि यह खुशबू जरूर उनके बेटे को उनके पास वापस ले आयेगी ठीक वैसे ही जैसे मनु बाल्यावस्था उस खुशबू से खिंचा चला आता था।

मेरे आतिथेय बात करते हुए अचानक रुक गये। मैंने कोई शुभ समाचार मिलने की उम्मीद में बड़े ही कुतूहल से उनकी ओर देखा। परन्तु मनु के पिता शांत रहे। मेरी हिम्मत नहीं पड़ी कि मैं दम्पति की नज़रों से नज़र मिला सकूँ। मैंने कभी भी इस बात की कल्पना नहीं की थी कि इस प्रकार के सुन्दर और आकर्षक कैफ़ेटेरिया के सृजन के पीछे इतनी दुःख भरी कहानी होगी। जब मैंने भारी मन से कैफेटेरिया छोड़ा तो मेरी नज़र वहाँ रखे स्वादिष्ट व्यंजनों पर पड़ी परंतु तब तक मेरी भूख बिलकुल मर चुकी थी ।

नन्दिता दासगुप्ता

व्यापार में नैतिकता का संरक्षण

महाभारत में शांतिपर्व के मोक्ष-धर्म पर्व में जाबालि नाम के एक संत और तुलाधार नाम के एक व्यापारी के बीच संवाद होता है। तुलाधार एक गृहस्थ है और किराने की दुकान चलाता है। जाबालि एक वैरागी है जिसने आध्यात्मिक ज्ञान हासिल करने के लिए बेहद धार्मिक जीवन अपनाया है और बहुत मुश्किल तपस्या की है। वह अपनी उपलब्धियों पर गर्व महसूस कर रहा है और घोषणा करता है, 'मुझे धर्म का एहसास हो गया है'।

लेकिन उसके तुरंत बाद एक दिव्य आकाशवाणी होती है, 'धर्म के संबंध में आप, तुलाधार जैसे प्रतिष्ठित एवं बुद्धिमान, वाराणसी के व्यापारी के पास भी नहीं आते हैं।"

यह बात जाबालि को बहुत अपमानजनक लगी। अतः वह तुलाधार से मिलने के लिए तुरन्त वाराणसी की यात्रा पर चल दिया।

सार संक्षेप में, तुलाधार ने अपनी जीवन शैली के विषय मे उसे इस प्रकार बताया:

(क) वह अपनी आजीविका कमाने के लिए कारोबार करता है।

(ख) यह करने में वह अपनी पूरी कोशिश करता है कि किसी के हित को नुकसान न पहुँचे, और जब यह न संभव हो, तो वह अपनी पूरी कोशिश करता है हानि कम से कम रहे।

(ग) वह और उसका परिवार एक छोटे से घर में रहते हैं, जो वह उसके द्वारा स्थानीय रूप से उपलब्ध और सस्ती सामग्री से बनाया गया है।

(घ) वह इस कमाई से जो जीवन यापन करता है, उससे संतुष्ट है।

उसने अपने दायित्वों और पेशे की नैतिकता अथवा वणिक् धर्म को निम्न प्रकार से पूरा किया है:

(1) मादक पेय, जो अपने ग्राहकों के लिए हानिकारक हों, ऐसी वस्तु नहीं बेचता है।

(2) अपने ग्राहकों के लिए उपयोगी और फायदेमंद वस्तु ही बेचता है।

(3) किसी को भी कोई भी वस्तु को बेचने में छल नहीं करता है।

(4) एक ग्राहक से दूसरे ग्राहक के बीच कोई भेदभाव नहीं करता है।

(5) उसके तराजू का वजन संतुलन सही है।

(6) व्यापार में किसी भी जीव या निर्जीव प्राणी अथवा वस्तु का दुरुपयोग नहीं करता है, और न ही उपयोग में कठोरता या लापरवाही करता है, उदाहरण के लिए माल बिक्री के लिए बैलगाड़ी पर बैलों की क्षमता से अधिक भार नहीं लादता है।

तुलाधार अपनी अन्य ज़िम्मेदारियां भी अच्छी तरह से निभाता है जैसे वे कर्तव्य जो व्यापारिक नैतिकता के क्षेत्र से बाहर हैं,

उदाहरण के लिए पारिवारिक, पड़ोसी और धार्मिक कर्म के प्रति इत्यादि।

इधर जाबालि ने भी अपने कर्तव्यों को पूरा किया है। इसके अलावा उसने धार्मिक अनुष्ठानों और तपस्या में तुलाधार से बेहतर उपलब्धियां पायी हैं।

एक व्यापारी होने के नाते नैतिक रूप से प्रासंगिक दायित्वों को पूरा करने के तुलाधार को अतिरिक्त अवसर मिलते हैं। दूसरी ओर जाबालि केवल एक वैरागी रहा है, उसको किसी भी अन्य तरह के दायित्वों को पूरा करने के लिए अवसर नहीं मिलते हैं। इसलिए ऐसा लगता है, कि तुलाधार की व्यापारिक नैतिकता, जो उसे अपने व्यवसाय के कारण मिली है, जाबालि की तुलना में उसके कुल नैतिक परिप्रेक्ष्य को अधिक विस्तृत बनाती है एवं उसके संचालन में नैतिक शुचिता भी है, इसी कारणवश आकाशवाणी ने तुलाधार को अधिक बेहतर दर्जा दिया है।

इस किस्से से क्या यह निष्कर्ष निकालना सही है, कि व्यापारिक नैतिकता बहुत ही मुश्किल है तथा धार्मिक और आध्यात्मिक जीवन शैली की तुलना में अधिक विश्वसनीय अथवा उच्च कोटि की है? यह दावा किया जा सकता है कि एक नैतिक विचारधारा किसी भी अनैतिक विचार व कर्म से उपर है। लेकिन यहां ऐसा प्रतीत हो रहा है कि तुलाधार जाबालि जैसे व्यक्ति से सिर्फ नैतिकता के बल पर उच्चतर है और धर्म या आध्यात्मिकता का महत्व व्यापारिक नैतिकता से कम है। कहा जा सकता है कि इस कहानी में व्यापारिक नैतिकता को अत्यधिक बढ़ा-चढ़ाकर दर्शाया गया है पर इसके पीछे एक अच्छी वजह है। व्यापार में अनैतिक पद्धति अपना कर धन और बल अर्जित करने के तमाम लुभावने अवसर आते हैं। एक व्यक्ति उनसे अछूता तभी रह सकता है जब,

- वह अत्यंत नैतिकतावान है.
- देश का कानून इतना सर्वव्यापी है कि वह सारे व्यापारिक आदान-प्रदान का लेखा-जोखा रखकर सब प्रकार की अनैतिक गतिविधियां असंभव बना देता है। कानून तंत्र इतना प्रभावशाली है कि उसका उल्लंघन असंभव है।

ऐसा व्यक्ति अथवा ऐसा देश बिरला ही होगा। हालाँकि मुनाफे के विषय में कहा जा सकता है कि यह एक वित्तीय संकल्पना है, मगर व्यापार के लिए यह जरूरी भी है। परंतु उसका अनुपात तय करना नैतिकता के दायरे में आता है। जब अधिकतम मूल्य हर वस्तु पर लिखने का कानून बनाया जाता है तो इसकी अवधारणा रहती है कि व्यापार नैतिकता अपने आप ऐसा करने में अक्षम है और अधिकतर व्यापारी इस तरह की सीमाएँ सही ढंग से निर्धारित नहीं करेंगे। निर्धारित मूल्य के बावजूद अधिक कीमत ली जा सकती है यह सिर्फ इतना दर्शाता है कि कानून टूट सकता है, पर इसका मतलब यह नहीं है कि दुकानदार लिखे मूल्य से कम दाम ले कर कुछ बेंच नहीं सकता। यदि उसे लगे कि उसको इस प्रकार से मिलने वाला मुनाफा पर्याप्त है तो वह ऐसा कर सकता है बिना अनैतिक हुए। नैतिक मूल्य का कानूनी स्वरूप उसको प्रखर बनाता है, उसकी अनिश्चितता समाप्त कर के उसे सीमा-बद्ध करता है ताकि उसको तोड़ना कठिन बन जाए और गैरकानूनी काम करने की सजा तथा उसके संरक्षक कौन होंगे यह भी तय करता है।

आर्थिक और आध्यात्मिक विषय के अतिरिक्त सामाजिक जगत में आदर्श और नैतिकता के अन्य पहलू भी हैं। जैसे एक नैतिक विवाद या समस्या सुलझाने में उसके मूल विषय के बारे में खुले मन से संवाद करना बहुत जरूरी होता है। यदि दोनों पक्ष संबन्धित नियम तथा नैतिक मूल्यों के बारे में आम राय रखते हों और वे नियम इतने साफ हों कि उनकी अनदेखी आसानी से निर्धारित की जा सके तो समस्या का निदान बहुत आसान बन जाता है। जब तक नियम कानून पर सहमति न बने तब तक हल निकलने में मुश्किलें बनी रहेंगी। इस बारे में खुले विचार वाले या निष्पक्ष लोगों की सहायता भी ली जा सकती है।

कुछ मामलों में जो आपस में नहीं सुलझते हैं, अंतिम फैसला न्यायालय पर छोड़ना पड़ता है। वहाँ सजा या नुकसान की भरपाई निर्धारित होती है। उसका दूरगामी परिणाम होना आवश्यक है। सजा व्यक्ति को जगत निन्दा का भागीदार बनाती है, उसे निम्न स्तर का साबित करती है, और समाज में उसे अलग रहने को उत्प्रेरित करती है, परन्तु उसे सबक तभी मिलेगा जब वह स्वयं नैतिक रूप से जाग्रत हो।

व्यापार में वस्तु और सेवा दोनों का अपना-अपना मूल्य है। सेवा की बिक्री वस्तु या जायदाद की बिक्री से भिन्न है क्योंकि व्यक्ति एक स्वयंभू प्राणी है जबकि बाकी सब के बारे में ऐसा कहना अनुचित है। उपभोग की वस्तु का मूल्य केवल किसी की इच्छा पूर्ति तक सीमित है पर किसी व्यक्ति को इच्छापूर्ति का साधन बना देना उसकी स्वतंत्रता और व्यक्तित्व को नकारने के बराबर है। यह एकदम असंगत है और ऐसा कर्म नैतिक रूप से सेवा के दायरे में नहीं रखा जा सकता।
व्यापार में सही गलत का विचार निम्न दशाओं या सह-भागों से मिल सकता है :

1 मालिक
2 ग्राहक
3 प्रबंध अधिकारी गण
4 व्यापारी वर्ग
5 वातावरण

यदि सुचारु रूप से बाजार का निर्वाह करना है तो सभी धड़ों का आपसी विश्वास के साथ न्यायोचित व्यवहार करना आवश्यक है। परन्तु मालिक को साथ में यह भी देखना जरूरी है कि उसका उद्योग व्यापार किसी तरह का प्रदूषण नहीं फैलाए और सार्वजनिक वस्तुओं और स्रोतों का दुरुपयोग तथा इतना अधिक दोहन न होने दे जिससे आने वाले समय में एक समस्या बन जाए। जैसे कचरे को सड़क या अन्य सार्वजनिक स्थान पर न फेंके। सब लोग पानी का दुरुपयोग तथा बरबादी बंद करें।

लोग व्यापारिक नैतिकता का उद्देश्य केवल मालिक की आर्थिक प्रगति ही समझते हैं। परन्तु ऐसा करने में यदि अनैतिक कार्य करना पड़े तो यह उसके मातहत प्रबंधक का कर्तव्य नहीं हो सकता हालाँकि कुछ मालिक ऐसी अपेक्षा रखते होंगे। एक बार रासायनिक कंपनियों की सामूहिक संस्था ने एक लेख निकाला था कि उन्हें किस प्रकार के अभियंता चाहिए। जवाब में एक दैनिक अख़बार ने लिखा कि जरूरी नहीं है उसी प्रकार के अभियंता समाज को भी स्वीकृत हों अतः समाज की राय लेना भी आवश्यक है। मालिकों का भला करने वालों को समाज के भले के बारे में भी उतना ही सचेत होकर कोई निर्णय करना होगा।

सामाजिक संतुलन तभी बन सकता है जब साझा रूप से सब लोग, मालिक, प्रबंधक, नागरिक, सरकार और न्यायपालिका आदि दायित्वों की देखरेख एवं अनुशीलन के प्रति सजग हों।
तुलाधार का कहना है कि वह किसी को भी हानि नहीं पहुंचाता है पर यदि ऐसा होना निश्चित हो तो उसे निम्नतम स्तर तक सीमित करता

है। इसमें मुश्किल बस इतनी है कि इसका निर्धारण कैसे हो कि कितना नुकसान उचित होगा।

बड़े घराने के उद्योग व्यापार में कभी-कभी व्यक्ति की वैयक्तिकता का ह्रास कर बिगड़े हुए या कुत्सित सुख को अच्छाई का जामा पहनाकर गलत काम कराये जाते हैं। जैसे कि धंधे में राजनीतिक प्रभाव या उसी प्रकार के सम्मान का जुगाड़ बैठाना जरूरी है जिसके बिना उच्चतम स्तर का जीवन यापन हो ही नहीं सकता। ऐसा भी हो सकता है कि आर्थिक एवं सरकारी तंत्र इतना बिगड़ गया हो कि ऐसा किए बगैर व्यापार बढ़ाना असंभव बन गया हो। ऐसी दशा में राजनीतिक तंत्र तथा आर्थिक व्यवस्था आंशिक रूप से इस अनैतिक वातावरण के लिए उत्तरदायी है।

छोटे धंधों में कदाचित रूप से राजनीतिक हस्तक्षेप कम होता है। शायद इसीलिए गांधी जी ने ग्रामोद्योग की बात की थी। उन्होंने स्वदेशी विचारधारा की पृष्ठभूमि में उच्च जीवन चरित्र की परिकल्पना की थी। उनकी वह तस्वीर तुलाधार के जीवन से प्रेरित जान पड़ती है।

यह लेख प्रो. राजेन्द्र प्रसाद के वर्धमाना, निष्काम कर्म एवं प्रेक्टिकल मॉरेलिटी : (प्रकाशक डी.के.प्रिन्ट वर्ड प्रा. लिमि.) का एक संक्षिप्त भाग है।

प्रो. राजेन्द्र प्रसाद आई.आई.टी. कानपुर से दर्शनशास्त्र के वरिष्ठ प्राध्यापक के पद से 1986 में सेवा निवृत्त हुए थे। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा 30 अगस्त 2012 को इंडियन काउंसिल ऑफ फिलॉसॉफिकल रिसर्च के तत्वावधान में लखनऊ प्रो. प्रसाद को लाइफ टाइम अचीवमेन्ट पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

उनका संपर्क का पता निम्न है।
एस 2/102, एल्डिको, ईडन पार्क कुर्सी रोड, टेढ़ी पुलिया, लखनऊ-226022

अनुवाद -

अरुण श्रीवास्तव
पूर्व छात्र

वायु प्रदूषण : चुनौती और समाधान

वायु प्रदूषण मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए बहुत हानिकारक है। वायु प्रदूषण की मात्रा को कम करके स्ट्रोक, ह्दय संबंधी बीमारियों, फेफड़ों के कैंसर, अस्थमा जैसी श्वास संबंधी बीमारियों से बचा जा सकता है। भारत में विशेष रूप से बड़े शहरों में वायु प्रदूषण के कारण दिनोंदिन खतरा बढ़ता जा रहा है। बड़े शहरों की सूची में दिल्ली एक ऐसा शहर है जहाँ वायु प्रदूषण के कारण लोगों का जीवन कष्टमय होता जा रहा है। किसी भी प्रकार के प्रदूषण और विशेष रूप से वायु प्रदूषण से बचने के लिए सामाजिक एवं तकनीकी तौर पर और मजबूती से काम करने की जरूरत है। इसी संदर्भ में, वर्ष 2013 में दिल्ली (राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र) की सरकार द्वारा आईआईटी कानपुर के विशेषज्ञों को दिल्ली शहर में वायु प्रदूषण के समग्र अध्ययन का कार्य सौंपा गया था। अध्ययन के अंतर्गत विशेषज्ञों का लक्ष्य वायु प्रदूषण के कारणों का पता लगाना तथा नियंत्रण के उपाय बताना था। विशेषज्ञों ने पाँच मुख्य कारकों यथा-(i) वायु की गुणवत्ता (ii) विभिन्न स्त्रोतों से होने वाले उत्सर्जन की मात्रा के निर्धारण (iii) श्वसन में सहायक वायु की गुणवत्ता को प्रभावित करने वाले विभिन्न स्रोतों की भूमिका (iv) वायु प्रदूषण के नियंत्रण के लिए साधनों की पहचान तथा उनकी क्षमता का निर्धारण तथा (v) समयबद्ध कार्य-योजना के विकास को आधार बनाकर अपना अध्ययन कार्य संपन्न किया था।

आईआईटी कानपुर के विशेषज्ञों ने दिल्ली में अलग-अलग छह स्थानों के वायु प्रदूषण के स्तर को मापा था जिसमें आवासीय, औद्योगिक एवं व्यावसायिक क्षेत्र के साथ-साथ मिले-जुले क्षेत्र शामिल थे। इसी कड़ी में 2013-14 की शीत ऋतु तथा 2014 की ग्रीष्म ऋतु के दौरान दिल्ली में PM_{10} (10 µm जो बाल के व्यास का 1/10वाँ हिस्सा होता है, से छोटा अथवा बराबर आकार का अति सूक्ष्मकण), $PM_{2.5}$ (2.5 µm से कम अथवा बराबर) एवं उनके रासायनिक संयोजन को मापा गया था। कणिकीय प्रदूषण (Particulate Pollution) दिल्ली शहर के लिए चिंता का विषय है जहाँ PM_{10} तथा $PM_{2.5}$ का स्तर राष्ट्रीय वायु गुणवत्ता मानक (PM_{10}:100µg/m^3 एवं $PM_{2.5}$: 60µg/m^3) से 4 से 7 गुणा अधिक है। PM_{10} तथा $PM_{2.5}$ स्तरों का इस प्रकार बढ़ना खतरे की ओर संकेत कर रहा है।

वायु प्रदूषण नियंत्रण नीति के अगले चरण में प्रदूषण के स्रोतों का पता लगाना तथा उत्सर्जन की मात्रा की आपेक्षिक तीव्रता का निर्धारण करना होता है। इसके बाद, योजनाबद्ध तरीके से एकत्र की गई जानकारी/आँकड़ों को उत्सर्जन सूची (Emission inventory, EI) में संकलित किया जाता है। दिल्ली में प्रतिदिन कुल 58 टन $PM_{2.5}$ का उत्सर्जन होता है। यहाँ सड़क की धूल से 38ः, वाहन से 20ः, घरेलू ईंधन से 12ः तथा बड़े औद्योगिक स्रोतों से 11ः $PM_{2.5}$ का उत्सर्जन होता है। ये $PM_{2.5}$ के उत्सर्जन के मुख्य कारक माने जाते हैं। उत्सर्जन सूची (Emission inventory EI) समय और स्थान के आधार पर तैयार की जाती है तथा इसमें किसी समय-विशेष पर एकत्र किये गए आँकडें औसत उत्सर्जन मात्रा से बहुत अलग होते हैं। यद्यपि उत्सर्जन सूची से स्रोत की विशालता के बारे में कुछ जानकारी मिल सकती है तथापि इससे निश्चित रूप से यह पता नहीं चल पाता है कि श्वसन के स्तर पर उच्च प्रदूषण के स्रोत कौन-से हैं। दिल्ली में स्थानीय स्तर पर उत्सर्जन की मात्रा में अंतर देखने को मिलता है जिससे यह स्पष्ट होता है कि दिल्ली के मध्य शहरी क्षेत्र, उत्तरी एवं पूर्वी भाग में अन्य भागों की तुलना में अधिक उत्सर्जन होता है।

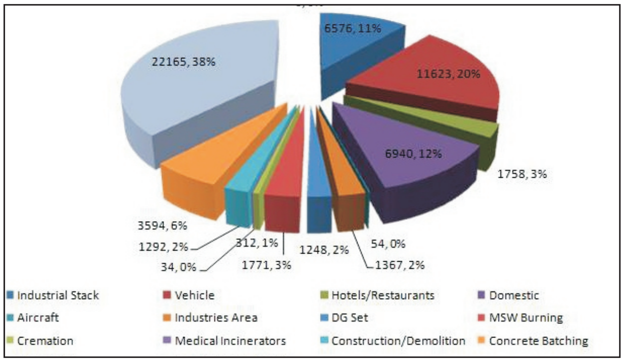

आरेख 1 : दिल्ली शहर में विभिन्न स्रोतों से होने वाला $PM_{2.5}$ उत्सर्जन लोड

'श्वसन के स्तर पर वायु की गुणवत्ता में वृद्धि करने के लिए स्रोत से होने वाले उत्सर्जन तथा उत्सर्जन के प्रभावों के बीच पाये जाने वाले संयोजन को समझना पड़ता है। याद रहे कि छोटे स्रोतों में कणों का योगदान अधिक हो सकता है और वहीं बड़े स्रोतों का योगदान कम हो सकता है। उदाहरण के लिए कानपुर स्थित एक बड़े स्रोत पनकी पावर प्लांट से होने वाले उत्सर्जन से आईआईटी कानपुर के कैम्पस में बहुत कम मात्रा में वायु प्रदूषण होता है। श्वसन प्रक्रिया के स्तर पर हानिकारक कणों की उत्पत्ति के स्रोतों का पता लगाने के लिए रिसेप्टर मॉडलिंग नामक अपेक्षाकृत एक नवीन तकनीक का विकास किया गया है जिसके द्वारा स्रोतों की फिंगरप्रिटिंग का उपयोग करते हुए कण उत्पत्ति के स्रोतों की गणना की जा सकती है। प्रत्येक स्रोत में एक विशिष्ट तात्विक (उदाहरण के लिए ब्लैक कार्बन) संयोजन पाया जाता है तथा उनमें कुछ सूक्ष्म तत्व भी पाये जाते हैं। श्वसन प्रक्रिया के स्तर पर इन सूक्ष्म तत्वों की मदद से स्रोत की उपस्थिति एवं उनके प्रभावों का पता लगाया जा सकता है। इस तकनीक को रासायनिक तात्विक संतुलन (Chemical Elemental Balance) या रासायनिक द्रव्यमान संतुलन (Chemical Mass Balance) कहते हैं। अध्ययन के दौरान आईआईटी कानपुर की प्रयोगशालाओं में $PM_{2.5}$ सैम्पलों में 40 से अधिक तत्वों (Element) एवं आयनों (Ions) का विश्लेषण किया गया तथा रासायनिक द्रव्यमान संतुलन तकनीक का प्रयोग करके श्वसन प्रक्रिया के स्तर पर स्रोतों के प्रभावों की गणना की गई।

ग्रीष्म एवं शीत ऋतु के रासायनिक द्रव्यमान संतुलन (सीएमबी) मॉडलिंग के संपूर्ण आँकड़ों को आरेख 2 में दर्शाया गया है। ग्रीष्म और शीत ऋतु में भिन्न-भिन्न स्रोतों के कारण $PM_{2.5}$ के स्तर में वृद्धि होती है। शीतऋतु में $PM_{2.5}$ के स्तर में वृद्धि करने वाले स्रोत इस प्रकार हैं-वायुमण्डल में निर्मित तथा सुदूर से आनेवाले द्वितीयक कण जैसे- अमोनियम सल्फेट एवं नाइट्रेट (30%), वाहन (25%), जला हुआ जैव ईंधन (26%), जला हुआ शहरी ठोस अपशिष्ट (8%) तथा कम मात्रा में मिट्टी एवं सड़क की धूल। वहीं ग्रीष्मऋतु के स्रोतों में शामिल हैं-कोयला एवं उड़ने वाली राख (26%), मिट्टी एवं सड़क की धूल (27%), द्वितीयक कण (15%), जले हुए जैव ईंधन (12%), वाहन (9%) तथा शहरी ठोस अपशिष्ट (7%)। शीतऋतु में जले हुए जैव ईंधन का योगदान कुछ अधिक अर्थात् 26 प्रतिशत होता है। दिल्ली में जैव ईंधन को जलाने पर प्रतिबंध लगा हुआ है किन्तु बड़ी संख्या में लोग नियम को अनदेखा करके जैव ईंधन जला रहे हैं। हालांकि जले हुए जैव ईंधन की मात्रा में होने वाली वृद्धि के लिए बड़े खेतों में जलाये गये खरीफ की फसल के अवशेषों को जिम्मेदार माना जाता है।

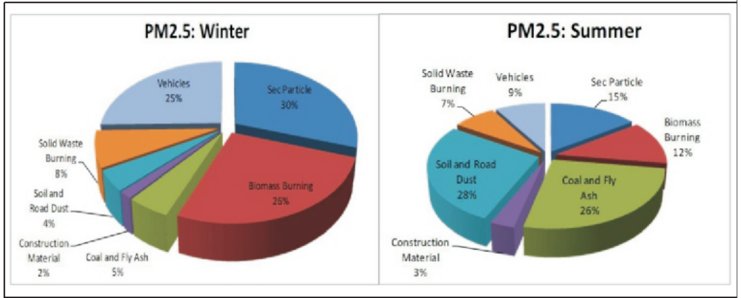

आरेख 2 :

विशेषज्ञों ने दिल्ली शहर में वायु प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए निम्नलिखित विकल्प सुझाएं हैं;

(i) होटलों एवं रेस्टारेंटों में कोयले का उपयोग बंद होना चाहिए तथा उसके स्थान पर इलेक्ट्रिकल अथवा गैस-आधारित उपकरणों का उपयोग किया जाना चाहिए ।
(ii) सभी घरों में एलपीजी की सुविधा उपलब्ध करानी चाहिए।
(iii) फ्लाई ऐश पांड से फ्लाई ऐश के रि-सस्पेंशन को रोकना चाहिए।
(iv) शहरी ठोस अपशिष्ट के जलाने पर पूर्णतः रोक लगनी चाहिए।
(v) निर्माण एवं तोड़-फोड़ के कार्य पर नियंत्रण करना चाहिए।
(vi) रेडी मिक्स कॉंक्रीट प्लांट को नियंत्रित करना चाहिए

वाहन से होने वाले प्रदूषण को रोकने के लिए निम्नलिखित उपाय करने चाहिए; जैसे -

(i) BS VI उत्सर्जन मानकों का क्रियान्वयन होना चाहिए।
(ii) नई इंजिन तकनीक तथा इलेक्ट्रिक एवं हाइब्रिड वाहनों का प्रयोग शुरु करना चाहिए।
(iii) ट्रैफिक योजना को सुदृढ़ बनाना चाहिए।
(iv) डीजल एग्ज़ौस्ट में डीजल पार्टिक्यूलेट फिल्टर लगाना चाहिए।
(v) सार्वजनिक परिवहन में सुधार करना चाहिए।

बड़े बिजली-संयत्र तथा रिफाइनरी से निकलने वाले द्वितीयक कणों की रोकथाम के लिए आवश्यक कदम उठाने चाहिए;

(i) दिल्ली से 300 किमी की परिधि में स्थित 13 थर्मल प्लांटों से निकलने वाले SO2 एवं नाइट्रोजन ऑक्साइडों पर नियंत्रण

करना चाहिए

(ii) पैट्रोल पम्पों से निकलने वाले कार्बनिक वेपर पर नियंत्रण करना चाहिए।

उक्त विकल्पों के अलावा मिट्टी एवं सड़क से उठने वाली धूल से बचने के लिए सड़कों की सफाई एवं उनमें पानी डालना चाहिए, उच्च कोटि का निर्माण कार्य एवं उसका उचित रख-रखाव करना चाहिए, वृक्ष, घास आदि उगाना चाहिए तथा धूल के रि-सस्पेंशन (Re-suspension) को रोकना चाहिए। फसल के अवशेषों के जलाने पर पूर्णतः प्रतिबंध लगाना चाहिए अथवा इसकी मात्रा कम से कम करनी चाहिए। विशेष रूप से दिल्ली में एवं उसके आस पास बायोमॉस बर्निंग पर पूर्णतया रोक लगनी चाहिए। केवल दिल्ली शहर में नियंत्रण के उक्त विकल्पों का क्रियान्वयन करने से राष्ट्रीय वायु गुणवत्ता मानक को प्राप्त नहीं किया जा सकता, अतः पूरे राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में इनका अनुपालन होना चाहिए तब जाकर हम वायु की गुणवत्ता में सुधार की आशा कर सकते हैं।

दिल्ली की तुलना में विश्व के कई देशों/शहरों की वायु की गुणवत्ता अत्यंत खराब थी किन्तु उचित वैज्ञानिक समझ, ईमानदारी से किये गए प्रयासों तथा तकनीकी के प्रयोग से इन शहरों का वातारण शुद्ध हो चुका है और लोग वहाँ शुद्ध वायु का लाभ ले रहे हैं। आईआईटी के विशेषज्ञों द्वारा किया गया उक्त अध्ययन व्यापक एवं विशिष्ट प्रकृति का है जिसके निष्कर्षों पर नियामक संस्थायें, नीति निर्माता, न्यायपालिका, उद्यम, गैर-सरकारी संगठन (एनजीओ) तथा शैक्षणिक संस्थानों द्वारा विचार किया जा रहा है तथा कार्यान्वयन के लिए कार्य-योजना बनाई जा रही है। निश्चित रूप से शुद्ध वायु एक दिन हमारे लिए सपना न होकर हकीकत होगी और निस्संदेह अन्य शहरों में इसका पालन किया जाएगा तथा विशाल जनसमुदाय को इसका फायदा मिलेगा।

प्रो. मुकेश शर्मा
सिविल अभियांत्रिकी विभाग

अनुवादः राजभाषा प्रकोष्ठ

मंथन

जनवरी का महीना था। कक्षा पांच के समाज अध्ययन की पहली अवधि-विषय- “परिवार”।
" परिवार समाज की सबसे छोटी इकाई है।" शिक्षिका ने पाठ आरम्भ किया।

जी हाँ, ये पिछली शताब्दी ही नहीं परंतु पिछली सहस्राब्दि की बात है। आज से कई दशक पूर्व, वो समय जब मोबाइल की तो किसी को कल्पना भी नहीं थी। मध्यम वर्गीय परिवार में टीवी भी नहीं था और फोन शायद पूरी कॉलोनी में एक या दो।

उन दिनों हम अपना सामाजिक दायित्व बखूबी निभाते थे।आस पड़ोस, गली मोहल्ला हमारा संप्रसारित परिवार था। सुख दुःख में बराबर के भागीदार थे; उत्सव त्यौहार साथ मनाते थे। कोई सलाह लेनी हो तो पीले मकानवाले ताऊ या अमरुद की बगियावाली दादीजी के द्वार हमेशा खुले होते थे। यूँ आज की तरह गूगल का दरवाजा कोई नहीं खटखटाता था। अरे ! गूगलबाबा तो पैदा ही नहीं हुए थे।

आज की परिस्थिति में तो पड़ोसी भी अजनबी हैं। वो तो बस एक नाम हैं - खूबसूरत नेमप्लेट पर अंकित। पडोसी की छोड़िये, अपने परिवार में अगर झांकें तो, क्या हम एक दूसरे से अनजान नहीं? शाम के समय हर एक सदस्य अगर एक साथ घर पर पाया भी जाये तो बच्चे कंप्यूटर या वीडियो गेम्स में मशगूल मिलेंगे, पापा लैपटॉप पर और माँ शायद मोबाइल पर। दादा-दादी अगर साथ रहते हों तो टीवी सीरियल की विराम अवधि में दो चार बातें करते दिखाई पड़ेंगे। अगर उनमें से एक भी न हों तो वहां भी सन्नाटा। और यही सन्नाटा कारण है डिप्रेशन, हाइपर टेंशन जैसी घातक बीमारियों का।

समाज के प्रति हम अपना दायित्व तभी निभा सकतें हैं जब हम शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ हों। परिवार खुश तो हम भी खुश। समाज की सबसे छोटी और अहम इकाई, परिवार के प्रति हमें सर्वप्रथम अपना संपूर्ण दायित्व निभाना होगा तभी हम घर से निकल देश और मानवता के प्रति अपना दायित्व निभाने में समर्थ होंगे।
अंग्रेजी की वो कहावत है न -"चैरिटी बिगिंस ऐट होम।"

डॉ . अंजना पोद्दार

संस्थान के स्थापना दिवस पर प्रोफेसर कृपा शंकर सभा को संबोधित करते हुए

सीईडीटी प्रशिक्षण के बारे में बताते हुए प्रोफेसर एच सी वर्मा

स्थापना दिवस पर सम्मानित करते हुए

हिंदी पखवाड़े में भाग लेते विद्यार्थी

कवि अंसार कम्बरी एवं डॉ.कमल मुसद्दी के साथ प्रोफेसर इन्चार्ज प्रोफेसर सुधीर मिश्र

रंग के आधार पर ये भेदभाव क्यों?

भारतीय समाज में बहुत सी कुप्रथाएँ व्यापक हैं। दहेज-हत्या, यौन-शोषण और बलात्कार जैसी घटनाएँ आम हो गई हैं। ये सब औरतों के प्रति बहुत ही स्पष्ट अपराध हैं लेकिन इससे पृथक भी हमारी दिन प्रतिदिन की जिन्दगी में ऐसी घटनाएँ होती हैं जिनको अपराध की श्रेणी में तो नहीं रखा जा सकता किन्तु इनका प्रभाव मानसिक स्थिति पर किसी शारीरिक यातना से कम नहीं होता। हमारे समाज में त्वचा की रंगत अथवा शारीरिक दोष की उपस्थिति के आधार पर आलोचना होना कुछ नया नहीं है। यह सामाजिक स्थिति सदियों से हमें प्रभावित करती रही है। रंग को लेकर हमारा भेद-भाव न केवल लड़कियों अपितु लड़कों को भी प्रभावित करता है। परन्तु लड़कियाँ इससे अधिक प्रभावित होती हैं। रंग रूप और शारीरिक रूपरेखा विवाह संबंधों में बहुत बड़ी भूमिका निभाती है। सामाजिक रूप से निर्धारित पैमाने के आधार पर अगर कन्या गोरी नहीं है, तो उससे ब्याह कौन करेगा? ऐसे प्रश्न आम हैं। हमारे समाज में गढ़ी हुई यह मानसिकता चलचित्रों और विज्ञापनों में परिलक्षित होती है। हिंदी सिनेमा में तो यह मानसिकता व्यापक रूप से प्रकट होती है।

कितनी सांवली लड़कियों को हमने विज्ञापनों में देखा? वो दिखती हैं मात्र गोरेपन का झूठा सपना दिखाने वाले विज्ञापनों में। इन विज्ञापनों में बहुत सी सांवली लड़कियां गोरेपन की क्रीम के प्रयोग के बाद बहुत ही कम समय में गोरी हो जाती दिखाई जाती हैं। इसके बाद उन्हें मनचाहा वर, नौकरी और खोया हुआ आत्मविश्वास सब मिल जाता है। ये फेयरनेस उत्पाद केवल लड़कियों तक ही सीमित नहीं हैं। लड़कों की त्वचा को गोरा करने के लिए भी तमाम उत्पाद अब बाजार में आ गए हैं। ये अब समझने में बहुत कठिनाई होती है कि क्या गोरी चमड़ी इतनी आवश्यक है? जब भी हम जाने अनजाने किसी व्यक्ति को फेयरनेस क्रीम का प्रयोग करने कि सलाह देते हैं उस समय हम उसके चरित्र और उसकी प्रतिभाओं कि अवहेलना करके उसकी पहचान को मात्र उसके रंग तक सीमित कर देते हैं। एक उम्मीद कि सुनहरी किरण हमें दिखाई तो देती है जब कुछ प्रख्यात अभिनेता और अभिनेत्रियाँ इन फेयरनेस क्रीमों को बढ़ावा देने से इनकार कर देते हैं, लेकिन ये प्रकाश की किरण भी बादलों के पीछे छिप जाती है क्योंकि इसके बावजूद भी इन उत्पादों को

बढ़ावा मिलता है। ये सभी उत्पाद अब काफी मात्रा में बिकते हैं। इस प्रकार के अभियानों के कारण समाज में लोग वास्तव में सौंदर्य को मात्र रंग से ही जोड़कर देखते हैं। इस सबमें आतंरिक सौंदर्य की महत्ता तो कहीं खो ही जाती है।

रंग के प्रति ये जो हमारा पाखंडी नजरिया है वह केवल विज्ञापन तक ही सीमित नहीं है। भारतीय सिनेमा में भी इसके उदहारण हमें मिलते हैं। सिनेमा में जो भी अभिनेत्रियां आज हैं ज्यादातर सब ही गोरी हैं और जो सांवली है उनको या तो नकारात्मक भूमिकाएं मिलती हैं या शायद उतनी सफलता नहीं मिलती जितनी गौरवर्णी अभिनेत्रियों को मिलती है। हम प्रत्यक्ष रूप से काले रंग को बुराई तथा गोरे या सफेद रंग को अच्छाई और सौंदर्य के साथ जोड़ते हैं। गोरे रंग के प्रति हमारे आकर्षण को हिंदी सिनेमा के प्रचलित गानों में भी देखा जा सकता है जिनकी एक लम्बी सूची है - "धूप में निकला ना करो रूप की रानी, गोरा रंग काला ना पड़ जाये", "गोरे रंग पे न इतना गुमान कर" व "चिट्टियाँ कलाइयां वे" - इन सभी गानों में गोरे रंग को अधिक वांछनीय दर्शाया गया है। काला रंग केवल आँखों और बालों में अच्छा लगता है। हमारा पाखंड तब और भी दकियानूसी हो जाता है जब हम भगवान कृष्ण और देवी काली की आराधना तो करते हैं परन्तु अपनी बहुओं, बेटियों को दूध से श्वेत रंग में ही देखना चाहते है। हिंदी भजन "यशोमती मैया से बोले नंदलाला, राधा क्यूँ गोरी मैं क्यूँ काला?" में ये ही बताया गया है कि भगवान कृष्ण भी अपने रंग से संतुष्ट नहीं हैं और वो भी राधा के जैसे गोरा रंग चाहते हैं। जाने अनजाने में हमने उन सब को चोट पहुँचाई है जो कि अपने आप में गोरे रंग से इतर कई मायनों में बहुत ही सुन्दर हैं। "हम काले हैं तो क्या हुआ दिलवाले हैं", जैसे गीत ये दर्शाते हैं कि गोरा रंग ही सुन्दर है तथा सांवला रंग समाज में दोयम दर्जे की हैसियत रखता है।

बढ़ती उम्र के साथ जब एक बच्चे को उसके साथ हो रहा भेद-भाव समझ में आने लगता है तब वह महसूस करता है कि सांवला रंग होने के कारण उसके अनुभव दूसरों से कुछ अलग हैं और यह अनुभव सकारात्मक नहीं है। गोरा रंग न होने पर स्कूल में साथियों के द्वारा रंग को लेकर हमेशा उपहास किया जाता है। यह व्यवहार केवल साथियों तक ही सीमित नहीं रहता, अंतर्निहित रूप से ये शिक्षकों के व्यवहार में भी देखने को मिलता है। सभी रूढ़िबद्ध धारणाओं की तरह रंग को लेकर हमारे समाज का ये रूढ़ प्रारूप भी बहुत ही अस्पष्ट रूप में होता है। कभी किसी को स्पष्ट रूप से ये नहीं बताया जाता कि तुम बदसूरत हो, अवांछनीय हो क्योंकि तुम काले हो, अपितु यह बहुत ही अप्रत्यक्ष रूप से लोगों के व्यवहार में परिलक्षित होता है। गोरे बच्चों को जिस प्रकार की सराहना मिलती है जैसे "कि तुम तो बहुत ही प्यारे हो" या "तुम एक गुड़िया की तरह दिखती हो", ये सम्मान कभी भी साँवले बच्चों को शायद नहीं मिलता है। लड़कियाँ जिन गुड़ियों के साथ खेलती हैं वो भी हल्के भूरे या गुलाबी रंग की होती हैं ।

बचपन से ही अपने सांवलेपन का एहसास कभी-कभी कुछ बच्चों को कुंठित कर जाता है। उन्हें ऐसा लग सकता है कि उन्हें स्कूल में इसलिए सजा दी गई क्योंकि वह दिखने में मोहक नहीं हैं और इस कारण से शिक्षक को लगता है कि वह ही दोषी है। ऐसी सोच मनोवैज्ञानिक विकास में बाधक हो सकती है। यह परिस्थिति लड़कियों के लिए कहीं ज्यादा कठिन हो जाती है। लड़कियों को किशोरावस्था तक पहुँचते-पहुँचते बहुधा रिश्तेदारों या माता-पिता से ये सुनने को मिलता है कि "गहरे रंग के ये कपड़े तुम पे भाते नहीं हैं", "तुम्हारी शादी में बहुत दिक्कतें आएंगी" , "कुछ लगाया करो अपने चेहरे पर" – इस प्रकार के कथनों से उस उम्र में जब उसके व्यक्तित्व का विकास हो रहा होता है वह अपना आत्मविश्वास खो चुकी होती है। इस सब के चलते बड़े होने तक यह भावना दिल में घर बना चुकी होती है कि "मैं सुन्दर नहीं हूँ।" इसका प्रभाव लड़कियों के कार्य-प्रदर्शन पर दिखने लगता है। इसलिए भारत में त्वचा का रंग, रिश्ते, शादी और यहां तक कि कैरियर को भी प्रभावित करने लगता है। रंग का प्रभाव विवाह के संबंधों पर इतना प्रत्यक्ष रूप से पड़ता है कि अखबारों में आने वाले विज्ञापनों में भी यह स्पष्ट देखा जाता है, जहाँ लड़कों में भी गोरे रंग को प्राथमिकता दी जाती है। लेकिन अगर वो अच्छा कमाते हैं तो उनका मूल्य शादी के बाजार में बढ़ जाता है। लेकिन एक लड़की के लिए यह अवसर भी नहीं है। एक लड़की का पढ़ा - लिखा, सुसंस्कृत तथा आत्मनिर्भर होना ही पर्याप्त नहीं है। अगर वह सांवली है तो उसके पिता को ज्यादा दहेज देना होगा। विवाह जैसे पवित्र बंधन को भी हम खोखले मापदंडों पर तोलते हैं।

भारत में रंग के आधार पर यह भेद कब, कहाँ और कैसे शुरू हुआ यह तो कहना बहुत मुश्किल है। लेकिन इसका कोई अंत नहीं दिखाई देता, यह एक कुचक्र है। सांवले लोगों को भी अपनी सुन्दरता पर विश्वास नहीं है, वह भी इस तथ्य को समझने में अक्षम हैं कि खूबसूरती विभिन्न प्रकार की होती है और इसको केवल रंग में बांधना सही नहीं है; खूबसूरती बाहरी नहीं आतंरिक होती है। प्रायः देखा गया है कि लोग जब अपने परिवार के लिए दुल्हन तलाश करते हैं तो गोरी लड़की को ही अपेक्षाकृत अधिक पसंद करते हैं। समाज में बहुत कम व्यक्ति अपने सांवले रंग से संतुष्ट हैं और उन्होंने भी यह समाज के कठोर रवैये से ही सीखा है। यहाँ हमें हमारी अपनी समझ और तर्क का उपयोग करना होगा। समाज से स्वीकृति के अलावा हमें पहले स्वयं ही अपने रूप और रंग को स्वीकृति देनी होगी, स्वयं से प्रेम करना होगा। एक अच्छी या खूबसूरत त्वचा का रंग महत्वपूर्ण नहीं है। एक स्वस्थ त्वचा के लिए उसमें बस एक प्राकृतिक चमक का होना आवश्यक है। बाहरी तथा आंतरिक खूबसूरती को रंग से नहीं पहचाना जा सकता। भारत में बहुत सी विविधताएँ हैं जिनको हमने स्वीकृति दी है, हमें अब हर रंग को स्वीकृति दे कर सभी को समान अधिकार, सम्मान और आदर देना होगा। समाज में हर रंग के व्यक्ति को आदर का अधिकार है।

कहने का तात्पर्य यह है कि त्वचा के रंग के आधार पर भेदभाव एक विकृतिपूर्ण सामाजिक सोच है जो ईश्वर द्वारा नैसर्गिक रूप से प्रदत्त काया के प्रति अपराध है। मानव सदैव से प्रबुद्ध प्राणी माना गया है अत: उसे अपनी इस रंग भेद वाली सोच से उबरकर बाहर आना ही चाहिए।

सुचरिता माजी
अनु मालिक
शोध छात्राएं

प्रोसोक इन्नोवेटर्स प्राइवेट लिमिटेड : एक सामाजिक उद्यम (A Social Enterprise)

सिडबी इनोवेशन इन्क्यूबेशन सेंटर (SIIC) को आईआईटी कानपुर में प्रौद्योगिकी से क्षेत्र में नव प्रवर्तन, अनुसंधान और उद्यमशीलता की गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए स्थापित किया गया है। SIIC नवीन विचारों को व्यावहारिक उत्पादों में बदलने के लिए विभिन्न कम्पनियों को व्यावसायिक रूप से विकास करने की सुविधाएं और सेवाएं प्रदान करता है। प्रोसोक इनोवेटर्स प्रा. लि. ऐसी ही एक लाभकारी सामाजिक स्टार्ट-अप कंपनी है जो परिचालन डिजाइन एवं अभिनव उत्पादों तथा सेवाओं के माध्यम से निचले तबके के लोगों को सशक्त और विकसित करने के लिए कार्य कर रही है। PROSOC का मतलब है Products for Society अर्थात 'सामाजिक उत्पाद' और इसकी वेबसाइट है www.prosoc.co.in

लक्ष्य

इस उद्यम का मुख्य लक्ष्य सामाजिक महत्व के उत्पादों की डिजाइनिंग करना और उसके विकास द्वारा लोगों को सशक्त बनाना है ताकि उनका जीवन बेहतर हो सके। यह कं० Un Ltd-दिल्ली से भी जुड़ी है जो सामाजिक उद्यमियों का उनके प्रारम्भिक चरण की फंडिंग, कोचिंग, सलाह, नेतृत्व, प्रशिक्षण तथा कौशल विकास में समर्थन करती है। इसके अतिरिक्त FIFTH ESTATE और Villgrow जैसे कुछ अन्य उद्यम भी इस दिशा में सार्थक कार्य कर रहे हैं।

यह कं० इस समय दो परियोजनाओं पर कार्य कर रही है; पहली डेस्किट तथा दूसरी है कागज के कैरी बैग बनाने की मशीन। डेस्किट के लिए क्रमांक 287945 का इसे पेटेंट मिल चुका है और अब इसके उत्पाद पेटेंट को हासिल करने की प्रक्रिया चल रही है। इसी प्रकार इसने कैरी बैग बनाने की भी स्वचालित मशीन विकसित कर ली हैं जिसके साथ पेपर बैग की गुणवत्ता, उसका स्थायित्व बढ़ाने तथा ऑटोमैटिक उत्पादन हेतु शोध कार्य जारी है। इसका पेटेंट प्राप्त करने का भी आवेदन किया जा चुका है। संबंधित विभाग द्वारा जिसका नं० 772/DEL/2015 आवंटित किया गया है।

प्रथम परियोजना : DESKIT

DESKIT है क्या? यह वस्तुत: "ठीक बैठो, ठीक लिखो" के सिद्धांत पर आधारित बच्चों की पढ़ाई से संबंधित दो ऊँचाइयों पर एडजस्ट हो सकने वाला 10x14 इंच साइज का एक ऐसा स्कूल बैग है जो स्कूल बैग के अलावा पढ़ाई की मेज की तरह भी

इस्तेमाल किया जा सकता है। इसके उपयोग से छात्रों को भी न केवल लिखने में आसानी होगी अपितु लिखते समय शरीर को उचित मुद्रा में भी वे रख सकते हैं जिससे फर्श पर लंबे समय तक पीठ झुका कर बैठने की समस्या और साथ ही उससे उत्पन्न होने वाली स्वास्थ्य समस्याओं का समाधान हो सकता है। इस प्रकार DESKIT बच्चों के उज्जवल भविष्य को आकार देने के साथ-साथ स्कूल में नियमित रहने के लिए भी प्रेरित करता है।

प्रोसाक ने इस संदर्भ में गैर सरकारी संगठनों के साथ सहयोग करके एक पायलट परियोजना आरम्भ की है जिसके अन्तर्गत उनके द्वारा संचालित तीन स्कूलों में बाल दिवस के दिन SIIC के सामाजिक उद्यमिता विकास कार्यक्रम के तहत 120 छात्रों को डेस्किट वितरित की गई है। इस कार्यक्रम में गोदरेज कम्पनी समूह के रणनीतिक विपणन प्रभारी श्री शिरीष जोशी, आदिवासी एवं ग्रामीण शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत एनजीओ (शिक्षार्थ) के संस्थापक-निदेशक श्री आशीष श्रीवास्तव तथा एमएचआरडी के वरिष्ठ सलाहकार श्री अवनीश त्रिपाठी ने भाग लिया। इस पर छात्रों, उनके अभिभावकों तथा शिक्षकों की प्राप्त उत्साहजनक प्रतिक्रियाएं निम्न लिंक पर देखी जा सकती हैं-

URL-https://www.youtube.com/watch\v(TNUY6x31xoI&t)43s

डेस्किट की मुख्य विशेषताएं

- डेस्किट स्कूल बैग कम टेबल आकर्षक बाहरी रूप रेखा वाले, गुणवत्ता परक तथा विभिन्न रंग डिजाइनों में उपलब्ध कराये जा रहे हैं और उनका वजन हल्का रखने व उनकी मजबूती के लिए PNP कपड़े का प्रयोग किया गया है
- बैग और मेज को आवश्यकतानुसार अलग करने के साथ-साथ मेज की ऊँचाई घटाई-बढ़ाई जा सकती है।
- डेस्किट 2-3 साल तक उपयोग में लाई जा सकती है तथा इसमें पानी की बोतल एवं उपयोगी सामान रखने की पृथक-पृथक व्यवस्था की गई है।
- लाने-ले जाने में तकलीफ न हो इसके लिए इसमें दो कुशन

पट्टियाँ लगाई गई हैं साथ ही आगामी बैगों में रात में भी पढ़ाई सुगम बनाने हेतु इसमें एलईडी लैंप लगाने की योजना है

- डेस्किट का टैक्स सहित बिक्री मूल्य 400 रु है फिर भी कं० समझती है कि गरीब बच्चों के माँ-बाप के लिए यह कीमत भी ज्यादा है। डेस्किट जरूरतमंद गरीब छात्रों को सुलभ हो सकें, इसके लिए निस्संदेह एनजीओ एवं औद्योगिक घरानों की मदद एक स्वाभाविक अपेक्षा है जो इस कार्य में वित्तीय मदद भी प्रदान करें और पर्याप्त संख्या में इन्हें खरीद कर उन्हें नि:शुल्क या अत्यल्प मूल्य में वितरित करें। बच्चों में इसके प्रति रुचि बढ़े, इसके वे नियत प्रपत्र में बड़े पैमाने पर विज्ञापन कराएं जिससे प्राप्त धन से डेस्किट की कीमत कम रखना संभव हो सकेगा।
- कं० के सहयोगी गणों को भी इससे बाकी व्यय को वहन करना सुगम हो जाएगा। कं० का कुल प्रयास यह है कि वह डेस्किट को बच्चों को किसी तरह नि:शुल्क प्रदान कर सके। प्रोफेसर समीर खांडेकर, समन्वयक, एसआईआईसी के शब्दों में "गैर सरकारी संगठनों और उद्यमियों के साथ मिलकर, हमें समाज के वंचित वर्गों के लोगों को बेहतर जीवन जीने में मदद करने के लिए एक पारिस्थितिकी तंत्र का विकास करना चाहिए" की अवधारणा ही इसका मूल है। डेस्किट के उत्पाद विकास में गोदरेज समूह की कम्पनियों का योगदान सचमुच सराहनीय है।

द्वितीय परियोजना : ठोस तथा कम लागत के पेपर बैग बनाने वाली मशीन

1 लाख रु. की कीमत वाली यह मशीन डेस्कटॉप के आकार की है जो तह लगाने, चुन्नट बनाने और गम पेस्टिंग के कार्य एक साथ संपादित करती है और इस प्रकार छोटे स्केल पर एक ही स्थान पर कई घरेलू पेपर बैग मशीनों को स्थापित करना बेहद सुगम हैं। इस अविष्कार को जमींनी स्तर पर व्यवहारिक रूप देने के लिए कं० एक व्यवासायिक योजना भी तैयार कर रही है।

परियोजना/मशीन की उपयोगिता

- हमारे जीवन में प्लास्टिक के कैरी बैग का व्यापक चलन है जिन्हें प्रयोग करने के बाद आम तौर पर कचरें में फेंक दिया जाता है। प्लास्टिक प्रदूषण का कितना बड़ा कारक है, हम अच्छी तरह जानते हैं। पेपर कैरी बैग हमारी इस समस्या का सहज समाधान कर देंगे।
- पेपर बैग की वर्तमान में प्रचलित मशीनें आकार में काफी बड़ी और महँगी हैं जिन्हें चलाने में कई लोगों की जरूरत पड़ती है। वहीं यह मशीन कत्तई छोटी, सस्ती और सहज संचालनीय है।
- ऐसी कई मशीने काफी छोटी जगह पर लग सकती हैं साथ ही ये स्वचालित तथा अच्छे परिमाण में पेपर बैग उत्पादित करने में सक्षम हैं।
- समाज के आर्थिक रूप से कमजोर, निचले तपके को ये मशीनें स्वरोजगार एवं व्यापार के अच्छे अवसर सुलभ करा सकती हैं।
- पर्यावरण के अनुकूल इस उद्यम से रोजगार बढ़ेगा जिसमें समाज के निचले स्तर पर सरकारी-गैरसरकारी संस्थाओं की वित्तीय तथा कार्यान्वयन की सीधी भागीदारी रहेगी।

परियोजनाओं की उपलब्धियाँ, मान्यता एवं पुरस्कार

- टीएम वैश्विक नवाचार प्रतियोगिता 2014 में प्लास्टिक से इतर सोच जैसा सम्मानित उल्लेख
- अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में प्रतियोगिता के दिल्ली चैप्टर स्तर पर विजेता
- 2014 तथा 2015 में आईआईटी कानपुर के ई-शिखर सम्मेलन में अंग्रेजी में SOCHA-B योजना प्रतियोगिता में पुरस्कृत
- 2014 में PRIME-83 नवाचार पुरस्कार
- आईआईटी दिल्ली में विज्ञान और प्रौद्योगिकी आधारित सामाजिक उद्यमिता क्षमता निर्माण कार्यशाला में मान्यता

प्रोसोक से आईआईटी के के अनेक पूर्व छात्र संकाय सदस्य, कर्मचारी एवं छात्र जुड़े हैं। प्रोसोक स्वास्थ्य और कृषि क्षेत्र में कई उत्पादों के डिज़ाइन विकसित करने की सामाजिक महत्व की योजना में सक्रिय रूप से लगा है।

प्रोसोक टीम

आईआईटी छात्रों के नाम एक पाती

श्री शिरीष जोशी आईआईटी कानपुर के उन बिरले छात्रों में से हैं जिन्होंने अपने संस्थान प्रवास के दौरान संस्थान को और संस्थान की घटनाओं को अपने कैमरे में कैद कर उन पलों को सदा के लिए अमर कर लिया। उनके चित्रों को देख आप सत्तर के संस्थान के साथ-साथ साँसे लेने लगते हैं। इस लेख के जरिये श्री शिरीष जोशी आज के विद्यार्थियों को कुछ सन्देश देना चाहते हैं। उनके अन्य चित्रों को आईआईटी कानपुर की एलुमनाई एसोसिएशन एवं फेसबुक पेज पर भी देखा जा सकता है....अंतस

मैं 1970 में आईआईटी कानपुर में पढ़ रहा था, तब मैंने कैम्पस के कुछ दृश्यों को अपने कैमरे में कैद किया था। शायद, आप लोगों ने वे यादगार फोटोग्राफ देखे होंगे। हो सकता है कि मैंने जब ये फोटोग्राफ लिये थे तब आपका जन्म भी नहीं हुआ होगा और यह भी हो सकता है कि आपके माता-पिता का विवाह भी नहीं हुआ हो। शायद आपको उस समय के कैम्पस के छाया चित्रों को देखकर अचंभा होता होगा क्योंकि मौजूदा कैम्पस, जिसमें आप रह रहे हैं, की सूरत काफी बदल चुकी है।

जरा पहचानो --1977-79 के दौरान का संस्थान

जैसा उन छायाचित्रों (फोटोग्राफ) को देखकर आपको हैरानी हुई होगी, वैसे ही हैरानी मुझे 1973 में मेन फ्रेम आईबीएम 7044 तथा लिक्विड नाइट्रोजन मशीन (क्राइयोजेनिक लैब) की फोटो लेते समय हुई थी। किन्तु एक बात जो मुझे आज भी परेशान करती है वह यह कि मैं अपनी उधेड़बुन में उन लोगों को अपने दिल के कैमरे में कैद करने से चूक गया था जो उन मशीनों से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण थे।

चिट्ठी आई है-डाकिया छात्रों के कमरों तक पत्र पहुंचाता हुआ।

शायद, आप जानने को उत्सुक होंगे कि संस्थान के वे कौन से लोग थे जिन्हें मैं विस्मृत कर गया था। वास्तव में, मैं उन लोगों को भूल गया था जो मेरे जीवन-निर्माण के लिए तत्पर थे। जहाँ तक आप लोगों की बात है, शायद आप लोग भी उन्हें अनदेखा कर रहे हों। मैं आपके शिक्षक, सहायक स्टॉफ, मेस कर्मचारी तथा अन्य व्यक्तियों की बात कर रहा हूँ जो अपनी योग्यता एवं अपने हुनर के अनुसार आपको एक सफल इंजीनियर बनाने का प्रयास कर रहे हैं।

दुकानदार समोसा बनाते हुये, जिन्हें खाकर हम कभी बीमार नहीं पड़े

1973 में जब मैंने जेईई की परीक्षा पास की थी तब मुझे बहुत अधिक खुशी मिली थी। मेरा नाम शीर्ष के एक हजार छात्रों की सूची में था जिन्हें 2 लाख 50 हजार छात्रों में से चुना गया था। उस समय केवल पाँच आईआईटी में कुल 1000 सीट हुआ करती थीं। मैं भी आपके जैसा बुद्धिमान, स्कूल में अव्वल आने वाला छात्र था, जो उच्चाकांक्षाओं के साथ यहाँ आया था।

संस्थान में गुदड़ी के लालों की कोई कमी नहीं थी

संस्थान में प्रवेश लेने के बाद वास्तविक तस्वीर सामने आती है जब 99% वाले छात्रों तथा 99.01% अथवा 99.02% वाले छात्रों के बीच अंतर की बात होती है। कई बार तो 99% वाले छात्रों की दशा स्कूल के उन छात्रों के समान हो जाती है जो टॉपर की श्रेणी में नहीं आने के कारण हीनभावना से ग्रसित हो जाते हैं। यह सच है कि संस्थान में आने के बाद आप पूर्णतया संस्थान के हो जाते हैं या संस्थान पर आश्रित हो जाते हैं - अपना भविष्य बनाने के लिए।

शायद आप में से ज्यादातर लोग संस्थान के मुख्य द्वार से बाहर निकलते ही इन लोगों को भूल जाएंगे। अर्थ जगत में कदम रखते ही आप में से कुछ लोग टोस्टर एवं सैल फोन का बिजनेस करेंगे, कुछ लोग बैकिंग एवं फाइनेन्स से जुड़ जाएंगे तथा कुछ लोग तकनीक से जुड़े कामों को अपना पेशा बनाएंगे। वहीं, आपके जाने के बाद धोबी, मेस के कर्मचारी एवं लैब असिस्टेंट तथा आपके शिक्षक अपने नियत कामों को करते रहेंगे और उन्हें अपने जीवोकोपार्जन के लिए वह काम करना भी पड़ेगा। प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से वे छात्रों के भविष्य निर्माण की प्रक्रिया में अपना अमूल्य समय देते रहेंगे।

प्रोफेसर लाल, तत्कालीन डोसा व उनके साथ एक समर्पित कर्मचारी

जरा सोचिए ! क्या हमारे जीवन में अशांति, उग्रता एवं उत्तेजना फैलाने वाली चीजें वास्तव में हमारे लिए महत्वपूर्ण हैं। अपने चारों ओर दृष्टिपात करिए और अनुभव करिए कि जीवन के लिए महत्वपूर्ण क्या है और वे कौन लोग हैं जो आपके लिए महत्वपूर्ण हैं?

पढ़ाई भी, मस्ती भी, और बेल-बोटम वाली जीन्स भी-रस्सा खींच बिन रस्सा के

आपके जीवन में धन एवं आपकी डिग्री के महत्व को नकारा नहीं जा सकता, किन्तु मेरे विचार से आपको इस योग्य बनाने वाले आपके माता-पिता तथा संस्थान के शिक्षक, आपके कपड़ों को नई चमक देने वाला धोबी, आपको भोजन परोसने वाले मेस कर्मचारी तथा अन्य व्यक्ति जो किसी-न-किसी तरीके से आपकी मदद करते हैं, आपके जीवन के महत्वपूर्ण अंग हैं या होने चाहिए। ये वे लोग हैं जो आपको लैक्चर हॉल में पढ़ाते हैं, प्रत्येक सेमेस्टर के दौरान लैब में एक्सपेरीमेंट में आपकी मदद करते हैं तथा अपने कार्यों से सामाजिक व्यवहार का पाठ पढ़ाते हैं। ऐसे व्यक्तियों तथा उनके त्याग को जाने-अनजाने भूल जाना उचित नहीं है। शायद समयाभाव के कारण आप लोग इन पर ध्यान नहीं दे पाते होंगे। इसमें आपका भी दोष नहीं है क्योंकि अपनी प्रतिष्ठा के लिए, जैसा आप लोग मानते हैं, अच्छे ग्रेड से पास होना भी जरूरी है चाहे इसके लिए शिक्षक से 1 अंक के लिए भी माथा-पच्ची क्यों न करनी पड़े। लेकिन आपको मालूम होना चाहिए कि एक दिन ये सब आपके लिए महत्वहीन हो जाएगा। जब आप जीवन की नई पारी की शुरुआत करेंगे, तब यह बात महत्वपूर्ण हो जाएगी कि आप जीवन के हर क्षण को कैसे जीते हैं, लोगों के प्रति आपका व्यवहार कैसा है एवं आप लोगों को किस रूप में याद करते हैं?

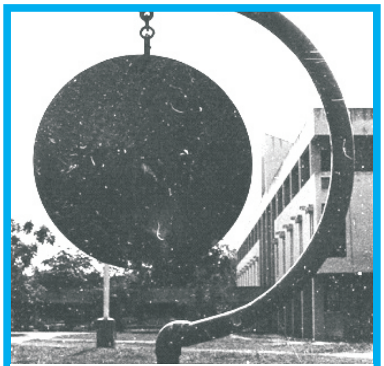

घंटी जो सदा समय से बजती थी,
हमारे न चाहने के बाद भी

आपके भावी कर्मप्रधान जीवन में कुछ ऐसे प्रश्न कि क्या आप लोगों के प्रति उदार थे, क्या आप लोगों की मदद करते थे, क्या आप लोगों से सम्मानपूर्वक व्यवहार करते थे, आपके मन में विचलन पैदा कर सकते हैं। आपके मन के आड़ोलन की स्थिति में कोई भी व्यक्ति आपकी ग्रेड शीट को देखने की चाह नहीं रखेगा। हो सकता है कि केवल पहले साक्षात्कार में लोग आपसे सीपीए से संबंधित प्रश्न करें अन्यथा सबके लिए आपकी ग्रेड शीट एक कागज टुकड़ा साबित हो। आप याद रखे जाएंगे तो सिर्फ अपने व्यवहार के कारण। अपने संपूर्ण जीवन में जिन लोगों से आपका मिलना-जुलना होगा, वे आपके व्यवहार को ही

याद करेंगे?

सांस्कृतिक कार्यक्रम हेतु विद्यार्थी लाउडस्पीकर जांचते हुए

निस्संदेह आप उच्च्य स्तर की तकनीकी शिक्षा पा रहे हैं और आप कुछ समय बाद तकनीकी ज्ञान के भंडार से परिपूर्ण हो जाएंगे। जब आप तकनीक के क्षेत्र में अपने ज्ञान को आजमाएंगें तो सौ फीसदी सफल होंगे लेकिन जब आप किसी ऐसी जगह काम कर रहे होंगे जहां शायद आपके सहकर्मी का ज्ञान आपसे कम हो तो आपको सामंजस्य बनाते हुए तथा सबका सम्मान करते हुए काम करना पड़ेगा।

आपको जीवन के हर मोड़ पर लोगों का साथ मिलेगा – चाहे वह आपका घर हो, या आपका कार्यस्थल। आपके प्रति लोगों का दृष्टिकोण आपके सफल जीवन पर आधारित होगा। जैसा लोगों के प्रति आपका व्यवहार होगा, वैसा ही उनका आपके प्रति नजरिया होगा।

फट्टा क्रिकेट लुंगी सैंडिल में

मैं आपको याद दिलाना चाहता हूँ कि मैं उन सभी लोगों को भूल गया था जिनका मेरे जीवन-निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान था। आप ऐसी भूल न करें तो अच्छा होगा। आपसे जुड़े लोग चाहे वे आपके शिक्षक हों, लैब सहायक हों या आपके कुक, आपको सभी के प्रति उदार रहना होगा। आपके जीवन को सँवारने का काम उन्होंने अपने कंधे पर ले रखा है अर्थात् वे पूरी जिम्मेदारी के साथ आपकी सेवा में तत्पर हैं। बिना किसी भेदभाव के इन लोगों का सम्मान कीजिए, धैर्य का परिचय दीजिए और इस बात का ध्यान रखिए कि आपका ग्रेड आपके जीवन का अंतिम पड़ाव नहीं है। अपने वचनों पर कायम रहिए एवं किसी भी प्रकार के बहाने से बचने का प्रयास करिए।

अंत में बस इतना ही – चुनौतियों का सामना करते हुए आगे बढ़ते रहिए।

शिरीष जोशी
पूर्वछात्र

अनुवादः
राजभाषा प्रकोष्ठ

सामाजिक सरोकार का उत्कृष्ट नमूना : ऑपर्च्युनिटी स्कूल

ज्ञान विज्ञान से ओत-प्रोत प्रगतिवादियों ने प्रगति पथ पर अँधेरे में भी एक दीप जलाकर रख दिया जिसके उजियारे में तीनो लोकों में वे सब कुछ देखने में सक्षम थे, वे शिव की भांति सर्व समर्थ त्रिनेत्रधारी जो थे। क्या वे सचमुच सर्व-समर्थ थे अथवा भूलवश स्वयं को मान बैठे थे क्योंकि उन्हें अपनी समझ का आभास भी शीघ्र ही हो गया। दिया तले अँधेरा भी है, वे जान गये थे परन्तु अब समस्या का निराकरण करना बाकी था। संकल्प लिया गया चाहे दीप से दीप जलाने पड़े किन्तु दिया तले का अँधेरा तो मिटाना ही होगा।

सम्भवत: आजादी और विभाजन के बाद आर्थिक मंदी का कहर अशिक्षितों पर सर्वाधिक बरपा। वे कहाँ जायें? कैसे कमाएं? क्या खाएं? जो चार अक्षर भी जानते थे वे नौकरी पा गये थे। मासिक वेतन ज्यादा न था किन्तु उन्हें तस्सली थी। अनपढ़ अवाक् थे। उनके मानस पटल पर 'पढ़ोगे लिखोगे बनोगे नवाब' का भारी असर दिखाई पड़ रहा था। उन्होंने देखा भी तो यही था, पढ़े लिखे लोग ही तो थे जिन्होंने देश की अगुआई की थी और उल्लेखनीय आज़ादी दिलाई थी। ऐसी आज़ादी जिसमें पढ़े लिखे लोगों को मुख्यतः सम्मान से जीने का हक प्राप्त था।

सन 1959 में कानपुर में भा.प्रौ.सं. नामक उच्च शिक्षा संस्थान स्थापित हुआ जिसके प्राध्यापकों को भरपूर सम्मान के साथ बिजली, पानी, चिकित्सा, मंहगाई भत्ता इत्यादि के साथ समुचित व्यवस्था दी गई थी। इतना ही नहीं, इन प्राध्यापकों की सेवार्थ सेवकों के रहने के लिए अलग कोठरियां भी प्रदान की गयी थी।

इन कोठरियों में रहने वाले अत्यंत निर्धन व असहाय थे। इन्हें दो जून की रोटी कमाने के भी लाले पड़े हुए थे। बच्चों को पढ़ाना लिखाना तो दूर की बात थी। आस-पास या दूर-दूर तक अशिक्षित निर्धनों के बच्चों की पढ़ाई के लिए विद्यालय नहीं थे। चाहते तो सेवकों के बच्चों को भी सेवक ही रहने देते, पढ़ाई लिखायी के पास उन्हें फटकने भी न देते; किन्तु उच्च मानवीय संवेदनाओं से अभिप्रेरित प्रबुद्ध वर्ग ने अंततः तय कर ही लिया कि ज्ञान के आलोक से किसी को भी अछूता न रहने देंगे तदुपरांत 1966-67 में ऑपर्च्युनिटी स्कूल के रूप में प्रबुद्ध वर्ग की परिकल्पना ने साकार रूप धारण किया। सर विलियम (प्रथम चेयरमैन) के संरक्षण में 13 बच्चों से प्रारंभ ऑपर्च्युनिटी स्कूल इस विशेष वर्ग के लिए वरदान साबित हुआ। साल दर साल बच्चों की संख्या बढती चली गयी। श्रीमान् राम शरण श्रीवास्तव ने प्रधानाचार्य के रूप में इस विद्यालय के संचालन का दारोमदार अपने कन्धों पर लिया। विभिन्न कठिनाइयां आड़े आईं किन्तु वे कभी घबराए नहीं वरन् तमाम अभावों में भी 'जहाँ चाह वहां राह' की तर्ज पर वे हर मुकाम, हर मंजिल की ओर बढ़ते रहे। उनके कर्मठ सहायक अध्यापक भी इस पुण्य-कार्य में बराबर के सहयोगी रहे। जिसके कारण ही यह विद्यालय तमाम उपलब्धियों के साथ-साथ अपने 50 वर्ष पूर्ण कर सका और 2016 को अपना स्वर्ण जयंती वर्ष घोषित कर सका।

स्मृतियों के झरोखों में झांककर देखें तो सन 1969 में भी प्राथमिक कक्षाओं की साल भर की फीस मात्र 5 रूपये रही थी और जिसमें आज भी अंशमात्र की ही वृद्धि हुई होगी।

यह रहस्य शायद ही कोई कभी जान पाया कि अत्यंत अल्प सब्सिडी और कुछ कृपालु जनों के दान के थोड़े से पैसों से विद्यालय कैसे सारे दायित्वों का निर्वहन करता रहा। विद्यालय के शिक्षकों को जितना मानदेय मिलता रहा, उसी में वे खुशी, मजबूरी अथवा किस दायित्व-बोध के बोझ तले अपनी सेवाएं देते रहे, विद्यालय की साफ सफाई का इंतजाम कैसे होता रहा तब, जबकि कोई चपरासी या सफाई कर्मी भी नहीं था?

श्रीमती किरण श्रीवास्तव, श्रीमती जे भट्ट, श्रीमती ओ.एन. द्विवेदी, श्री जे.पी. शर्मा इत्यादि अध्यापक-अध्यापिकाओं की उत्कृष्ट सेवाओं को विस्मृत करना असंभव है तब, जबकि विद्यालय अपना स्वर्णिम इतिहास लिखने को उद्यत है।

सन 1986 से पहले विद्यालय प्राथमिक विद्यालय ही था इसी के साथ विद्यालय के प्रबंध तंत्र ने यह जानने का प्रयास किया कि विद्यालय से पढ़े-लिखे हुए बच्चे आखिर किस मुकाम पर पहुँचे हैं और उनकी पढ़ाई सुचारु रूप से चल रही है अथवा बंद की जा चुकी है?

नतीजे चौंकाने वाले थे। लडकियाँ पांचवी के बाद पढ़ाई छोड़ दे रही थीं। अपनी माओं के साथ चौका बर्तन में हाथ बंटाती थीं और लड़के भी पांचवी तक पढ़ाई करके रिक्शादि चला रहे थे, मजदूरी कर रहे थे। कुल मिलाकर आंकड़े बड़े निराशा जनक थे। अब तय कर ही लिया गया कि इन बच्चों की पढ़ाई प्राथमिक स्तर तक ही सीमित न रहने दी जाये। इन्हें आगे भी पढाया जाये। फलतः कक्षा 6 प्रारम्भ हो गयी । यह कितना महत्वपूर्ण था, इसकी बानगी ये है कि पहले दिन ही 5-7 बच्चियाँ विद्यालय पहुँच गयीं। उन्होंने प्रार्थना की कि उनका दाखिला कक्षा 6 में ले लिया जाये। दरअसल ये इसी विद्यालय की पूर्व छात्राएं थीं जिन्होंने मात्र कक्षा 5 तक ही पढ़ाई पूरी की थी जिसके उपरांत ये पढ़ाई छोड बैठी थीं। कारण स्पष्ट था कि इनके पास इतना पैसा न था कि दूर तक जाकर पब्लिक स्कूल में पढ़ाई कर सकतीं। अतः इनकी अपेक्षा यही थी कि इनको इसी विद्यालय में कक्षा 6 में प्रवेश दिया जाय। ये सभी छात्राएं बड़ी खुश थीं कि इनका विद्यालय अब आगे बढ़ रहा है। अब इनकी आगे तक पढ़ने की इच्छा पूर्ण हो सकेगी। किन्तु इन्हें घोर निराशा हुई जब इनसे कहा गया कि वे काफी बड़ी हो चुकी हैं। कक्षा 6 में बहुत छोटे बच्चे हैं। फलतः इन्हें व्यक्तिगत स्तर पर पढ़कर 8वीं और 10वीं की परीक्षा पास करने का सुझाव देकर विदा कर दिया गया। उन युवतियों में से किसने आगे तक की पढ़ाई की ज्ञात नहीं किन्तु उस दिन उन्हें रोना आ गया था। उन्हें लगा था जैसे उनका कुछ खो गया था (शायद पढ़ने की उम्र या उनका स्वर्णिम समय) और उन्हें हाशिये पर रख दिया गया है। अब विधना के लेखे में जो है, वही होगा।

कक्षा 6 के छोटे बच्चों को उस दिन 'बड़ों से भी बड़े' होने की बड़ी खुशी हुई थी। कहना मुश्किल है यह गर्वानुभूति कितनी असंगत थी? बचपना था; बड़ो के दुःख से बिल्कुल अनभिज्ञ !
कक्षा 6 के बच्चे कक्षा 7 में पहुँचे फिर 8 में पहुँचें। समस्या आ खड़ी हुई-बोर्ड परीक्षा की। यह इलाहाबाद बोर्ड द्वारा कक्षा 8वीं की बोर्ड परीक्षाओं का दौर था। विद्यालय को मान्यता थी नहीं फलतः श्री राम शरण श्रीवास्तव जी ने बाल विद्यालय नवाबगंज कानपुर से अपने छात्र छात्राओं का व्यक्तिगत विद्यार्थी के रूप में पंजीकरण कराया और 1988 में कक्षा 8 के प्रथम बैच की परीक्षा उच्च्व प्राथमिक कन्या विद्यालय मन्नीपुरवा, पुराना कानपुर नामक केंद्र पर (जो कि वर्तमान में CRC है) संपन्न हुई। अब कहानी आगे बढ़ चली थी। बालक-बालिकाओं की शिक्षा अधर में लटकती प्रतीत नहीं हो रही थी बस मशक्कत यही करनी पड़ती थी कि हर साल बच्चों के परीक्षा फॉर्म किसी न किसी विद्यालय से व्यक्तिगत रूप से भरने पड़ते थे। अब विद्यालय में बच्चों की संख्या उत्तरोत्तर बढ़ रही थी।

टाइप 2 के म.नं. 237 और 239 में 25 वर्षों तक विद्यालय चलता रहा था, किन्तु अब यह असंभव प्रतीत होने लगा था। डॉ. प्रभा शर्मा ने विद्यालय को रिहायशी घरों से निकाल कर केन्द्रीय विद्यालय के एक ब्लॉक, जो कि स्कूल भवन ही है, में प्रतिस्थापित करने में अहम् योगदान दिया। इन्होने डायरेक्टर श्री पद्मनाभवन की संसतुति से विद्यालय को नवीन भवन दिलाकर गौरवान्वित किया।

इनके पश्चात् वर्तमान चेयरमैन डॉ. एच.सी.वर्मा के संरक्षण व निर्देशन में विद्यालय ने उल्लेखनीय बुलंदियों का संस्पर्श किया जैसे:-

- विद्यालय के अध्यापकों के मानदेय को सम्मान जनक स्तर तक पहुंचाया गया।
- बालक बालिकाओं को पुस्तक पुस्तिकाएं नि:शुल्क प्रदान की जाने लगी।
- बच्चों के स्वल्पाहार में बढ़ोत्तरी की गयी।
- बच्चों को आधे से भी कम दाम में विद्यालय की यूनिफार्म दिलाई जाने लगी।
- पुस्तकालय में पर्याप्त पुस्तकें रखी गयीं।
- विज्ञान के प्रति रुचि बढ़ाने के लिए प्रयोगशाला स्थापित की गयी।
- विद्यालय में विषय विशेष के कुशल अध्यापकों व सहायक कर्मियों को नियुक्त किया गया।
- BOSS प्रोजेक्ट के तहत प्रति वर्ष योग्य विद्यार्थियों को मेरिट कम मीन्स के आधार पर आगे की पढ़ाई सुलभ कराने का दारोमदार विद्यालय ने ग्रहण किया। इसके अंतर्गत वर्तमान में 14 विद्यार्थी उच्च कक्षाओं में पढ़ रहे हैं।
- विद्यालय ने कक्षा 8 तक की मान्यता प्राप्त कर ली है अब यह स्वकेंद्र परीक्षाएं संपन्न कराने में सक्षम हो गया है।
- वर्तमान सत्र 2016-17 को विद्यालय अपना स्वर्ण जयंती वर्ष मना रहा है साथ ही नई करवट लेने को तत्पर है।

इसके आगामी उद्देश्य हैं:-

- बालिकाओं की आगे तक की पढ़ाई का पूर्ण दायित्व ग्रहण करना।
- बालक बालिकाओं में छिपी प्रतिभाओं को पहचान कर उनका पथ प्रशस्त करना।
- दक्षता विकास से सम्बंधित कोर्स संचालित करना तथा इसी हेतु अध्यापकों की नियुक्ति करना।

“दूसरे विद्यालयों से प्रेरणा ग्रहण करने के बजाय इस विद्यालय से विभिन्न विद्यालय प्रेरणा ग्रहण करेंगे, मैं इस प्रकार इस विद्यालय को सामर्थ्य युक्त बनाने का स्वप्न देखता हूँ और यह हम सभी के सहयोग से साकार अवश्य होगा” उत्साह से लबरेज डॉ. एच. सी.वर्मा (चेयरमैन ऑपर्च्युनिटी स्कूल) के ये शब्द नवीन संचेतना का स्वर्णिम भविष्य लिखने को उद्यत है। प्रतीत होता है, ‘अब कुछ भी असंभव नहीं है; सब कुछ संभव है।’

कुछ प्रतिक्रियाएं

विद्यालय की प्राचीन विशेषताओं से रूबरू कराते पूर्व छात्रों के कथन :

“ऐसा विद्यालय तब आस-पास नहीं था।”

“साहब लोग अपने बच्चों की किताबें और कपड़े दान कर जाते थे वे विद्यालय के गरीब बच्चों को बांटे जाते थे।”

“हमारे समय में सिलाई सिखाई जाती थी। हम चरखा चलाकर सूत भी कातते थे जिससे विद्यालय की आमदनी होती थी।”

“अरे, तब मेला होता था। हमने मेले के टिकट बेचे थे। मेले में खाने-पीने के साथ विभिन्न प्रतियोगिताएं होती थी और विजेताओं को पुरस्कार भी दिए जाते थे।”

“सर हमें जिम्नास्टिक्स सिखाने के लिए जिमखाना भी ले जाते थे।”

“हम हाकी खेलते थे। हमें दूध मिलता था और भीगी मूंग की दाल खिलाई जाती थी।”

“हमने जयपुरिया स्कूल को फुटबाल में हराया था, तब हमें शील्ड मिली थी।”

“एल-7 में हमारा ANNUAL DAY होता था और हमें PRIZE दिए जाते थे।”

“सर की डांट रोंगटे खड़े कर देने वाली होती थी लेकिन वे पूरे गाँधी के अवतार थे।”

“श्रीमती ज्ञान मोहन ने हमे नि:स्वार्थ भाव से संस्कृत पढाई थी।”

‘‘आईआईटी के स्टूडेंट हमें गणित और विज्ञान पढ़ाने आया करते थे।’’

“शर्मा जी की मार हमें नहीं भूलती। गणेश भगवान का चित्र दिखा दो फिर उनसे कोई डर नहीं।”
“किरन मिस की नसीहत जीवन बदलने वाली होती थी।”

संतोष घोराई

सूफ़ी लघु कथा

न गुफ्ता न दारद कसे वातो कार।
वलेकिन चोगुफ्ती दलीलस बयार।।

भावार्थ - जब तुम चुप रहोगे तब कोई तुमसे कुछ नहीं कहेगा। लेकिन जब बोलोगे तब हर समय प्रमाण सहित तुमको तैयार रहना पड़ेगा।

कम बोलना अच्छा है

एक बुद्धिमान नवयुवक ने विद्या और धर्म कार्यों में खूब उन्नति की थी। लेकिन वह विद्वानों के समाज में बैठकर मुँह से कुछ भी नहीं बोलता था। एक बार उसके पिता ने उससे कहा-“ऐ पुत्र, तुम जो कुछ जानते हो, उसके विषय में कभी बोलते क्यों नहीं?”

नवयुवक ने उत्तर दिया-मैं इस बात से डरता हूँ कि वे मुझसे कोई ऐसी बात न पूछ बैठें जिसे मैं नहीं जानता हूँ और उसके कारण मुझे लज्जित होना पड़े।

क्या आपने उस सूफ़ी की बात नहीं सुनी जो अपनी खड़ाऊं में कीलें ठोंक रहा था। कीलें ठोंकते देख एक हाकिम ने उसकी आस्तीन पकड़ ली और उससे कहा-चलो, मेरे घोड़े के पैरों में नाल बाँध दो। जब तुम चुप रहोगे, तब कोई तुमसे सरोकार नहीं रखेगा लेकिन जब तुम बोलोगे, तब तुम्हें सबूत लेकर तैयार रहना पड़ेगा।

संग्रह स्रोत-शेख सादी की विश्वप्रसिद्ध प्रेरक सूफी कथाएं

समान्तर रेखायें

एक ओर है, इंडिया की बेटी,
प्राप्त कर उच्च शिक्षा विदेशी,
कॉर्पोरेट सेक्टर में कार्यरत हो,
अच्छे ओहदे पर आसीन होती।

कभी कॉन्फ्रेंस, वर्कशॉप, कभी डेस्टिनेशन वेडिंग में भाग लेती,
कभी नए स्टाइल की क्रॉकरी, नई ट्रेंड की साड़ी खरीदती,
हीरे, जवाहरात पहनकर वेस्टर्न ड्रेस्सेस अटैची में बंदकर,
दहलीज पर जौ के फुले बिखराकर,
चली जाती अपने, प्रियतम के गाँव।

दूसरी ओर है भारत की बेटी,
मूल भूत सुविधाओं को तरसती,
हिंदी माध्यम की पाठशाला में पढ़ती,
ना रेडियो सुन पाती,ना टीवी देख पाती।

घर घर बरतन मांजकर, कपड़े धो कर,
घोर कठिन परिश्रम कर,
दरवाजे पर सुन्दर रंगोली बनाकर,
घर आंगन की क्यारियां सींचकर,
छोटी मोटी जीविका कमाती।

पोटलियों में चाँदी के गहने समेटती,
सर पर जिम्मेवारी का पल्लू लपेटती,
दहलीज पर चावल बिखराकर,
चली जाती अपने, प्रियतम के गाँव।

इंडिया की बेटी एवं भारत की बेटी,
दोनों है अलौकिक एवं अनूठी,
मानो जैसे समान्तर रेखायें परस्पर,
समय के साथ मेल बढ़ा रहीं,
नजदीक आ कर परस्पर।

ये है ईश्वर की कृतियां सर्वोत्तम,
जब ये मिल जायेंगी रेखाएं परस्पर,
जो कभी लगती थी, रेखायें समान्तर,
उज्जवल सिंधु बनाएंगी एक बिंदु पर,
तब होगा हमारे देश का विकास निरंतर

सुकर्मा रानी थरेजा
पूर्व छात्रा

हमारे सामाजिक सरोकार

सृष्टि का शाश्वत नियम है परिवर्तन और इस नियम से चर-अचर सभी आबद्ध हैं। तदनुसार सारे ब्रह्माण्ड में कोई भी, कुछ भी, कहीं भी सदा-सर्वदा के लिये यथास्थिति में नहीं रह सकता । इस नियम के अनुरूप ही समाज एवं परिस्थितियों के अनुसार समाज की स्थितियाँ, जरूरतें आदि बदलती रहती हैं जिनसे समाज के विभिन्न अंगों को अपना कदम-ताल बनाये रखना आवश्यक होता है। हमें ज्ञात है कि मनुष्य ने अपनी प्रगति यात्रा आदिमकाल से आरम्भ की थी और क्रमशः तरक्की करते हुए आज वह अंतरिक्ष युग में आ पहुँचा है। समय के साथ उसी भाँति उसका सामाजिक परिष्कार भी होता चला आया है किन्तु इस सबके बावजूद मानव समाज में अनेकानेक ऐसी स्थितियाँ, विषमतायें, सामाजिक बुराइयाँ, पारस्परिक खाइयाँ हैं जो हमें चकराकर रख देती हैं चाहे वह शिक्षा का क्षेत्र हो, अर्थ-व्यवसाय का क्षेत्र हो अथवा विभिन्न स्तरों के सामाजिक ताने-बाने का क्षेत्र हो। यह स्थिति न केवल भारतवर्ष की है अपितु कमोवेश दुनिया के अधिसंख्य देशों की है। हालाँकि देश-काल एवं स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार उनके रूप-प्रकार भिन्न-भिन्न हो सकते हैं। लेकिन उसकी चर्चा हम यहाँ केवल भारतीय सन्दर्भों में करेंगे और देखेंगे कि व्यक्ति अथवा समूह विशेषतया एक नागरिक के रूप में उसमें हमारी क्या भूमिका है?

एक समय था जब हमारे देश की आबादी अधिक नहीं थी। यहाँ की धरती शस्य-श्यामला, वन सम्पदा, धन-धान्य, खनिजों से भरपूर थी। हमारी कृषि पैदावार, व्यापार-व्यवसाय इतने समृद्ध थे कि भारत सुदूर देशों में सोने की चिड़िया के नाम से विख्यात था। यहाँ की आध्यात्मिक उपलब्धि इसे विश्व का आध्यात्मिक सिरमौर बनाती थी तथा यहाँ के जनमानस एवं समाज का सहज-सरल चरित्र, सादा जीवन-उच्च विचार नैतिक मानदण्डों में भारत देश को अन्य देशों के बनिस्बत सर्वोच्च पायदान पर खड़ा करता था। लेकिन समय की करवट के साथ सब कुछ बदल गया। देश पराधीन हो गया। आपसी द्वेष-वैमनस्य तथा स्थानीय क्षत्रपों की स्वार्थी महत्वकांक्षाओं ने हमें गुलामी के दौर में झोंक

दिया। फलस्वरूप कई शताब्दियों तक हमारा बेहिसाब शोषण हुआ। बहरहाल यह परिदृश्य पुनः बदला और जातिवाद, क्षेत्रवाद तथा धर्म की जंजीरों को तोड़कर आजादी की लड़ाई में सारा देश एक हो गया। हम स्वतंत्र हुये किन्तु हमें देश में अब अन्य स्थितियों का दंश झेलना पड़ रहा था। देश के विभाजन के बावजूद तमाम क्षेत्रों में देश प्रगति पथ पर बढ़ रहा था तो इस प्रगति को कुन्द करने वाले नकारात्मक तत्व भी अपनी जड़ें फैला रहे थे। देश की आबादी तेजी से बढ़ रही थी। शस्य-श्यामला धरती पेड़-पौधों से हीन होने लगी थी, परंपरागत खादों के स्थान रासायनिक खादों का उपयोग जमीन की उर्वराशक्ति को क्षीण करने में लग गया था वहीं औद्योगीकरण एवं व्यापार के अंतर्राष्ट्रीयकरण के साथ उससे जुड़ी अच्छाइयाँ और बुराइयाँ समाज को आमूल आच्छादित करने में जुट गयी थीं।

इन सबका स्वाभाविक परिणाम हुआ कि देश में समृद्धि-विपन्नता की खाइयाँ बढ़ने लगी। Haves तथा Have-nots की संख्या कई गुना बढ़ गई। लोगों की सादा-जीवन उच्च विचार की अवधारणा जैसे विनष्ट ही हो गई। सारा का सारा जनसमुदाय दिखावे-प्रदर्शन की होड़ में मशगूल हो गया। बेरोजगारी, अशिक्षा, कुपोषण उसी अनुपात में बढ़ गये। प्राकृतिक संसाधनों के अधिकाधिक दोहन से पर्यावरण की भीषण समस्या उत्पन्न हो गयी। स्वच्छता के प्रति सामान्यतया हम पहले भी इतने जागरूक नहीं थे लेकिन इस समस्या को अब तो जैसे पंख लग गये वहीं मोटर वाहनों की ललक हमें यातायात की उलझनों में फँसाने लगी।

अब देखना यह है कि जागरूक नागरिक होने के नाते देश की इन सामाजिक समस्याओं के प्रति हमारी क्या जिम्मेदारी है? हमें यह समझना ही होगा कि किस तरह से हम देश एवं समाज के

प्रति अपने दायित्वों का निर्वहन कर सकते हैं?

सर्वप्रथम हम देश की आबादी के बारे में विचार करते हैं। भारत की वर्तमान जनसंख्या लगभग 125 करोड़ है यानि आजादी के समय की तीन गुनी। जरा सोचिये कि हमारी कितनी समस्याओं के मूल में यह एकमात्र कारक है। यह सत्य है कि इसी वजह से युवा शक्ति के मामले में हम दुनिया में सबसे समृद्ध हैं लेकिन वहीं यह आबादी सारी प्रगति को एकदम न्यूट्रालाइज भी कर देती है। हमारी आय तथा आर्थिक संसाधनों का कितना बड़ा हिस्सा खाद्यान्नों का बफर स्टॉक बनाये रखने, खाद्य और ईंधन के आयात, शिक्षा-स्वास्थ्य आदि में ही खर्च हो जाता है। अतः आबादी को बुद्धिमत्ता पूर्ण नियंत्रण में रखना हमारी सबसे बड़ी जिम्मेदारी है। हमारे विगत के सामाजिक परिवेश में किसी समय जनसंख्या नियंत्रण के बारे में बात करना कितना संवेदनशील विषय होता था, हमें यह बताने की जरूरत नहीं है। हालत यह थी कि तत्समय की स्थितियों में अन्यान्य कारणों के साथ इस मुद्दे पर तत्कालीन भारत सरकार को आम चुनाव में पराजय का मुँह देखना पड़ा था; तथापि भारतीय जनमानस इस संदर्भ में अब काफी कुछ जाग्रत और सजग है। हमें इसे केवल धार देनी है। प्रबुद्ध तथा शिक्षित वर्ग से संबद्ध होने के नाते हम इस दिशा में जनचेतना को जाग्रत करके उसे सही मार्गदर्शन देने में निश्चित ही योगदान दे सकते हैं जिसके लिए बस थोड़े संयम, श्रम एवं समय की जरूरत है।

हमारा दूसरा सरोकार आम जन के स्वास्थ्य को लेकर होना चाहिए। हर्ष का विषय है कि देश के तमाम नामी औद्योगिक घराने तथा उनके प्रवर्तक इस मुद्दे पर अपने-अपने तरीके से प्रयत्नशील हैं लेकिन स्वास्थ्य के क्षेत्र में यदि सबसे खेदजनक कोई स्थिति है तो वह है उपचार माध्यमों का अत्यधिक मँहगा होना। चाहे वह अस्पताल हों, डॉक्टर हों अथवा दवा या इलाज के उपकरण। यह सही है कि भारत की दवा निर्माता कंपनियाँ जेनेरिक दवाओं के जरिये सस्ती दवाओं को उपलब्ध कराने के प्रयास में लगी हैं लेकिन दूसरा सच यह भी कि उनके मार्ग में विदेशी तथा सक्षम दवा कंपनियाँ पेटेंट, शोध के खर्च आदि के नाम पर लगातार अवरोध उत्पन्न करती रहती हैं। हमारा प्रयास होना चाहिए कि लोगों को हम पेटेंट दवाओं के बजाये सामान्य जेनेरिक दवाएँ खरीदने के लिए प्रोत्साहित करें, डॉक्टरों को उन्हें उनके नोबल प्रोफेशन के बारे में अभिप्रेरित करें और शहर के बजाये अपना कुछ समय ग्रामीण क्षेत्रों को देने हेतु समझायें। हमारी न्यायपालिका एवं सरकार की इस दिशा में सक्रियता निस्संदेह एक अनुकूल कदम है।

इसी तरह शिक्षा का प्रश्न है। समाज के निचले अथवा पिछड़े तबके के लोगों को साक्षर बनाना, उन्हें प्रारंभिक या सामान्य शिक्षा देना हमारे लिये एक महती चुनौती है। सरकार के सर्वशिक्षा अभियान के बाद भी सुदूर ग्रामीण अँचलों में शिक्षा का विस्तार अब भी एक जटिल समस्या है। छात्र संख्या और शिक्षक की आनुपातिक व्यवस्था शासन-प्रशासन के समक्ष अन्य दुरूह प्रश्न है वहीं स्कूलों में छात्रों तथा शिक्षकों की उपस्थिति इससे जुड़ा दूसरा गंभीर मुद्दा है। हमें विचार करना होगा कि क्यों शिक्षित बेरोजगारों एवं अन्य पढ़े-लिखे प्रबुद्धों द्वारा बिना किसी अपेक्षा के इस हेतु अपना सहयोगात्मक हाथ नहीं बढ़ाया जा सकता? समाज की इस समस्या के निराकरण में अपने सरोकार से अपनी यत्किंचित सामर्थ्य के बावजूद हम कैसे विरत रह सकते हैं? जबकि तथ्य यह है कि हर किसी को अपनी-अपनी क्षमता के अनुरूप सभी तरह के संकोच त्यागकर इस हेतु सक्रिय रूप से आगे आना ही चाहिए।

अगला मुद्दा है संपन्न-विपन्न के बीच की खाई को कम करना। मेरे विचार में इस संदर्भ में भौतिक प्रयासों से परे मूल चीज है

लोगों की मानसिक सोच को बदलना, उसे सही दिशा की ओर उन्मुख करना। कहने की आवश्यकता नहीं कि भारतीय जनमानस सदा-सर्वदा से और स्वाभाविक रूप से सादा जीवन उच्च-विचार की संस्कृति का अनुशीलन करता रहा है। अतः वर्तमान के बदले परिवेश में भी उसे इस विचारधारा का पुनः आभास कराना, उस ओर उत्प्रेरित करना कदाचित उतना कठिन न हो। यह सत्य है कि वर्तमान का राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक वातावरण इस दिशा में हमें अनुकूल स्थितियों का एहसास नहीं कराता लेकिन महज इस कारण हम अपने सरोकार से विमुख हो जायें, इसका भी औचित्य नहीं है। इस मुद्दे पर दूसरी प्रमुख कठिनाई युवाओं की नई पीढ़ी को लेकर है जो हमारी प्राचीन सांस्कृतिक विरासत के प्रति खास लगाव नहीं रखती। Haves तथा Have-nots के प्रति भी वर्तमान मानव समाज की सोच अब उतनी संवेदनशील नहीं है बल्कि इसके विपरीत यह प्रश्न तब और जटिल हो जाता है जब एक वर्ग सामूहिक रूप से दूसरे वर्ग से अपनी तुलना करने लगता है। दिखावे, वैभव प्रदर्शन के प्रति तो संपन्न वर्ग की आकुलता देखते ही बनती है और मजे की बात यह कि युवा वर्ग के साथ इसमें उसके बड़े भी शामिल हैं। हमारे भारत जैसे देश में सादे जीवन के गौरवशाली अतीत के सापेक्ष इसे पीड़ादायक विडम्बना नहीं तो और क्या कहेंगे? अतः हमारा प्रयास इन दोनों संवर्गों की विचारधारा को ऐसा सार्थक मोड़ देने का होना चाहिए जो दो तिरछी रेखाओं को मिलाने का कार्य करे। अपनी शैक्षिक तथा विचारमना पृष्ठभूमि में हमारे लिये संभवतः यह इतना दुष्कर भी न हो।

पृथ्वी का 71 प्रतिशत हिस्सा जल से आच्छादित है जबकि उसका सतही भूभाग महज 29 प्रतिशत है। यह विडम्बना नहीं और तो क्या है कि मनुष्य ने अपने जल संसाधनों का, जो मुख्यतः पेय या दैनिन्दिन कार्यों के निमित्त प्रयुक्त होता है, इस कदर अविवेकपूर्ण दोहन किया है कि आज सारी धरती इसके अभाव की कल्पना मात्र से आतंकित हो उठती है। दुर्भाग्य से यह दोहन अब भी जारी है। हमारे भारत की स्थिति भी इस संदर्भ में कोई भिन्न नहीं है। अतः सभी सुधीजनों का कर्तव्य है कि जल के उपयोग के बारे में सर्वसामान्य को लगातार चैतन्य करें ताकि 'जल ही जीवन है' की उक्ति सार्थक बनी रह सके।

अगला एवं बेहद अहम् संदर्भ पर्यावरण से ताल्लुक रखता है। मनुष्य द्वारा अपने नैत्यिक उपयोग तथा अन्य आवश्यकताओं के मद्देनजर रासायनिक तथा पेट्रोलियम पदार्थों एवं गैसों आदि का अत्यधिक उपयोग किया जा रहा है जो विश्व के अस्तित्व के लिए प्रत्यक्ष खतरे की घंटी है।

आज सारी धरती पर्यावरण की समस्या से जूझ रही है। हमारे वायुमण्डल की ओजोन परत में विशाल विनाशकारी छिद्र उत्पन्न हो गया है। हमारी वायु, जल सभी कुछ बेहिसाब प्रदूषित है। यहाँ तक कि हम स्वच्छ नीले आकाश को देखने के लिए भी तरसने लगे हैं। प्लास्टिक सारी दुनिया के लिए मानो आफत का सबब बन गया है। भला इस समस्या के प्रति हम अपने सरोकार से मुँह मोड़ने की हिम्मत कैसे कर सकते हैं?

आधुनिक युग से सीधा संबंध रखने वाली एक ज्वलंत समस्या

यातायात की है। भारत में औद्योगिक तथा आर्थिक समृद्धि का सीधा परिणाम यह हुआ है कि जहां कभी लोगों को दुपहिया वाहन तक सुलभ नहीं होता था, वहीं अब परिवार का हर सदस्य चौपहिया वाहन की आकांक्षा रखता है और अधिकांश परिवारों में भौतिक रूप से यह स्थिति एक वास्तविकता भी है। जबकि इससे इतर एकाधिक वाहनों से ही किसी एक परिवार का काम सुगमता से चल सकता है। यहाँ तक तो बात फिर भी ठीक है लेकिन स्थिति तब विकट हो जाती है जब वाहनों की बहुलता सड़कों और गलियों तक को आक्रान्त कर डालती है। यातायात के नियमों अथवा उनके पालन से तो यहाँ किसी का रिश्ता ही नहीं है। वहीं अन्यान्य देशों को देखिये जहां लोग यातायात के नियमों का स्वतः पालन करते हैं जिसके लिए उन्हें समझाने की कोई जरूरत नहीं होती।

हमारे देश में तो डंडे के बिना कोई अनुशासन ही नहीं मानता। सोचना चाहिए कि इस प्रकार के अविवेकपूर्ण परिवहन से उत्पन्न अराजकता में कितना ईंधन जाया होता है, लोगों का कितना अमूल्य समय नष्ट होता है और उन्हें किस कदर अकारण कष्ट उठाना पड़ता है। क्यों हम उस स्थिति से परे जाने को तत्पर नहीं है जहाँ यातायात नियमों का पालन हमारे चरित्र का अंग बन जाये। क्या प्रबुद्ध नागरिक होने के मद्देनजर हमारा इससे कोई सरोकार नहीं है? इसी तरह स्वच्छता का विषय है जिस पर भी हमें इसी अनुरूप विचार करना चाहिए।

और अंत में हम राजनैतिक तथा सामाजिक शुचिता की बात करते हैं। सामान्य प्रबुद्धजनों में इस विषय पर शायद ही कोई मतभेद हो कि हमारे महान भारत की सारी समस्याओं के मूल में इसी शुचिता का प्रश्न निहित है। आज सारा देश जिस विकराल समस्या से हर स्तर पर जूझ रहा है वह है जन-जन में व्याप्त भ्रष्टाचार, कदाचार एवं अनाचार जिसके बीच सही एवं ईमानदार लोगों का जीना कठिन हो गया है। भारत में अभी हाल में विमुद्रीकरण (नोटबंदी) की एक आंशिक कार्यवाही क्या हुई, सारे हिन्दुस्तान में रणभेरी ही बज गई। जरा सोचिये कि इस सब में हम ऐसे आकंठ डूब गये थे कि जहां विशाल विपन्न, अभावग्रस्त जनसमुदाय सरकार के इस कदम से अत्यंत हर्षित हो रहा है वहीं एक काफी बड़ा वर्ग जैसे लकवाग्रस्त हो गया है। सभी नागरिकों के समक्ष मैं प्रश्न रखना चाहता हूँ कि वे सोचें और बतायें कि इन सबसे हमारा क्या सरोकार होना चाहिए, किस भाँति होना चाहिए और किस रूप में तथा किसी सीमा तक?

मैं आप सभी को इस मुहिम में सादर, विनम्रतापूर्वक आमंत्रित करता हूँ कि कृपया आगे बढ़ें और राष्ट्र के उत्थान, परिवर्तन तथा सामाजिक सरोकारों में अपनी भागीदारी निभाएं। कहाँ, कैसे और किस भाँति, यह आप स्वयं सुनिश्चित करें।

विष्णु प्रसाद गुप्ता

> जो मनुष्य अविद्या के मार्ग पर चलते हैं वे अज्ञान रूपी अंधकार में प्रवेश करते हैं। और जो मनुष्य विद्या में रत हैं वे उससे भी अधिक अंधकार में है। अतः ज्ञानपूर्वक कर्तव्य के मार्ग पर चलना श्रेयस्कर है।
>
> ईशावास्योपनिषद

पीर-पुरातन

निठुर भंवर पहचान न पाया
कलि के उर का मौन समर्पण।।

रजनी नित मुक्ता हारों से
प्रियतम शशि का स्वागत करती।
मुक्त ह्दय के उद्‌गारों से
अभिनव गान समर्पित करती।।

पर शशि कब पहचान सका है
रजनी का आह्‌वान निमंत्रण ।।

सरिता की मनुहारों से कब
सागर का मन पिघला है।
आहत उर की, आहों से कब
पाषाणों में मोह जगा है।।

नेह रहित उर जान न पाया,
प्यार भरे उर का अभिनन्दन ।।

नित्य शलभ ने झुलस-झुलस कर
दीप शिखा की माँग भरी है।
तड़प-तड़प कर उसके सम्मुख
मूक ह्दय से अनुनय की है।।

किन्तु न दीपक जान सका है
शलभों का बलिदान निरन्तर।।

हर बहार पतझड़ से मिलकर
पतझड़ में खो जाती है।
हर सुख के पीछे तो विधि ने
भेजी दुख की पाती है।।

मत्त मनुज कब जान सका है
दग्ध ह्दय की पीर पुरातन।।

इति

आर. के. दीक्षित

टीका

टीका टीक् धातु से बना हुआ शब्द है। 'टीक्यते गम्यतेअर्थो यया सा टीका'। भानुजी दीक्षित ने विषम पद व्याख्या को टीका कहा है। शब्दस्तोममहानिधि के रचयिता तारानाथ के अनुसार विषम-पद व्याख्या रूपी वृत्ति को टीका कहना चाहिए। इनके अनुसार टीका भी वृत्ति की भाँति संक्षिप्त होनी चाहिए, क्योंकि उसमें केवल कठिन और दुरूह पदों की ही व्याख्या होती है। परन्तु कुछ विद्वानों के अनुसार टीका विषमपदों की ही व्याख्या नहीं, अपितु मूल के सुगम और दुर्गम समस्त पदों की निरंतर व्याख्या है। संस्कृत का टीका साहित्य मौलिक साहित्य से कहीं अधिक विशाल है। इसका कारण ग्रंथकारों में मौलिकता या स्वतंत्र चिंतन का अभाव या उसकी न्यूनता नहीं, अपितु संस्कृत भाषा और उसके शास्त्रों की गंभीरता और गहनता ही है, क्योंकि टीकाओं में भी पुराने वादों पर नये विचार, उन वादों का नयी दिशाओं में विकास, उसका नये ढंग से मूल्यांकन आदि सभी कुछ मिलता है। इतने विशाल साहित्य के प्रमुख ग्रंथों की गणना भी कठिन है, पर कुछ अत्यंत प्रसिद्ध हैं-उद्योतकरकृत न्याय-वार्तिक पर वाचस्पति मिश्र की तात्पर्य टीका, भट्टोजिदीक्षित की सिद्धांत कौमुदी पर ज्ञानेंद्र की तत्वबोधिनी, काव्यों में कुमारसंभव, रघुवंश, मेघदूत, किरात, शिशुपाल वध, तथा नैषधचरित पर मल्लिनाथ की टीकाएं तथा नैषध पर नारायण की टीका, इसी प्रकार काव्यशास्त्र में मम्मट के काव्यप्रकाश पर चालीस से ऊपर टीकाएं हैं। नाटकों पर राघव भट्ट की टीकाएं सर्वविदित हैं। संस्कृत के विभिन्न अनुशासनों के ग्रंथों को समझने में ये टीकाएं ही पाठकों की मदद करती हैं। मल्लिनाथ ने तो लिखा ही है कि उनकी टीका के अभाव में कालिदास की वाणी दुर्व्याख्या विषमूर्च्छिता हो गयी थी। मल्लिनाथ ने उसे सुगम बनाया।

हिंदी में टीका के मूल अर्थ में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। मध्यकालीन भक्ति और रीतिकाव्य पर ब्रजभाषा गद्य में अनेक टीकाएं मिलती हैं, जैसे चौरासी वैष्णवन की वार्ता और दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता पर गुसाईं हरिराय की भाव प्रकाश टीका, साहित्यलहरी पर सरदार कविकृत टीका, भक्तमाल पर प्रियादास की टीका आदि।

हिंदी में टीका आलोचना की एक पद्धति के रूप में भी प्रचलित रही है। टीकाकार काव्य की टीका करते-करते कवियों के विषय में भी अंत में आलोचनात्मक उक्तियाँ कह दिया करते थे। इस प्रकार की आलोचना रामचरित मानस और बिहारी सतसई की टीकाओं, कुलपति, श्रीपति, चिंतामणि और सोमनाथ द्वारा लिखी गयी वचनिका वार्ता तिलक आदि के रूप में मिलती है। रीतिकाल के अंतिम चरण में सरदार कवि कृत मानस रहस्य को रीतिकालीन व्यावहारिक आलोचना में टीका पद्धति का श्रेष्ठ उदाहरण स्वीकार किया जा सकता ळें।

संग्रह स्रोत - हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली

स-आभार-मैथलीशरण गुप्त

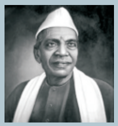

यह पुण्य पताका फहरे।

मुक्त वायु मंडल में अपनी मानस-लहरी लहरे,

इस ध्वज पर जूझे स्वजनों पर ध्यान जहाँ जाता है।

मस्तक ऊँचा होने पर भी, मन भर-भर आता है,

निर्भय मृत्यु वरण कर ही नर अमर कीर्ति पाता है,

ऐसे पुत्रों की ही आशा रखती भू-माता है,

भू-माता का यह अंचल-पट छाया करके छहरे

यह पुण्य पताका फहरे।

शत्रु अधिक बलशाली हो तो क्रोध प्रकट न करे, शांत हो जाएं।

समुद्र तट के एक भाग में एक टिटिहरी का जोड़ा रहता था। अण्डे देने से पहले टिटिहरी ने अपने पति को किसी सुरक्षित प्रदेश की खोज करने के लिए कहा। टिटिहरे ने कहा–यहाँ सभी स्थान पर्याप्त सुरक्षित हैं, तू चिंता न कर।

टिटिहरी–समुद्र में जब ज्वार आता है तो उसकी लहरें मतवाले हाथी को भी खींच कर ले जाती हैं, इसलिए हमें इन लहरों से दूर कोई स्थान रखना चाहिए।

टिटिहरा–समुद्र इतना दुस्साहसी नहीं कि वह मेरी संतान को हानि पहुँचाए। वह मुझसे डरता है। इसलिए तू निशंक होकर यहीं तट पर अण्डे दे।

समुद्र ने टिटिहरी की ये बातें सुन लीं। उसने सोचा, यह टिटिहरा बहुत अभिमानी है। आकाश की ओर टाँगे करके भी इसीलिए सोता है कि इन टाँगों पर गिरते हुए आकाश को थाम लेगा। इसका अभिमान भंग होना चाहिए। यह सोचकर उसने ज्वार आने पर टिटिहरी के अण्डों को लहरों में बहा दिया।

टिटिहरी जब दूसरे दिन आई तो अण्डों को बहता देखकर रोती–बिलखती टिटिहरे से बोली–मूर्ख मैंने पहले ही कहा था कि समुद्र की लहरें इन्हें बहा ले जाएंगी, किन्तु तूने अभिमानवश मेरी बात पर ध्यान नहीं दिया। अपने प्रियजनों के कथन पर भी जो कान नहीं देता उसकी ऐसी ही दुर्गति होती है (जैसी हमारे अंडों की हुई है।)

संग्रह स्रोत : पंचतंत्र

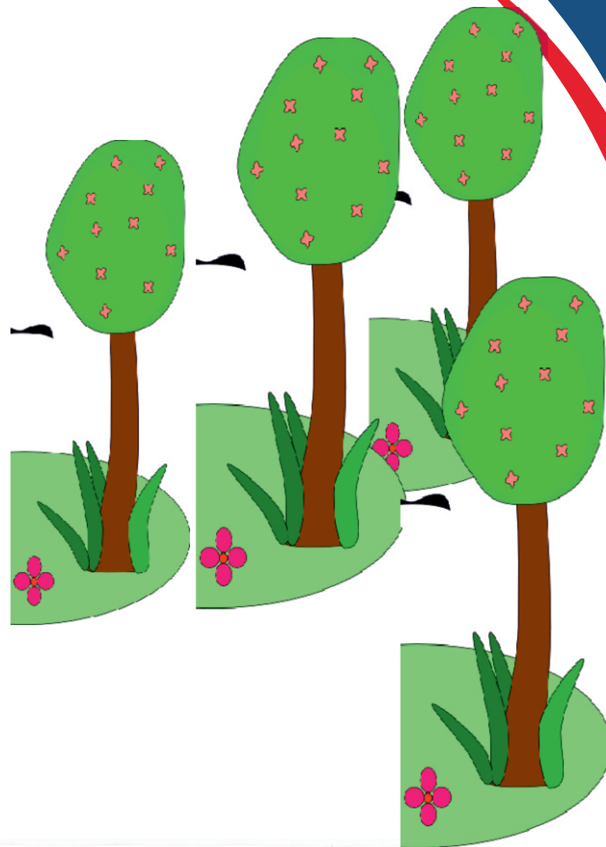

तेजसी प्रसाद, कक्षा-2

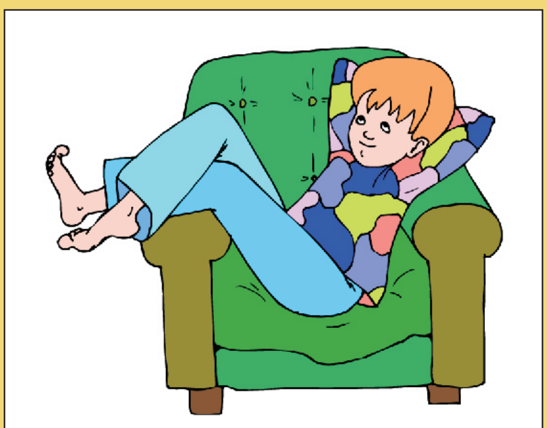

आओ सीखें

आलस मत करो। असावधानी मत करो।

किसी की निंदा मत करो। किसी से घृणा मत करो।

किसी की चुगली मत करो। किसी को धोखा मत दो।

किसी से निर्दयता मत करो। किसी को धोखा मत दो।

आई.आई.टी. कानपुर के सामुदायिक रेडियो स्टेशन का सामाजिक सरोकार

सामुदायिक रेडियो के सम्बन्ध में जानने से पूर्व हम सबके लिये यह जानना जरूरी हो जाता है कि हम सबसे पहले इसके अर्थ को जानें। यहाँ प्रयुक्त "सामुदायिक" शब्द, 'समुदाय' यानि Community को इंगित करता है, अर्थात एक ऐसा रेडियो केन्द्र जो सामाजिक कल्याण के सभी उत्तरदायित्वों मसलन शिक्षा, स्वास्थ्य, संस्कृति, सामाजिक विकास, तथा कृषि सम्बन्धी कार्यक्रमों के साथ-साथ समकालीन जन-जागरूकता एवं प्रासंगिकता के कार्यक्रमों का प्रसारण करता हो, वह सामुदायिक रेडियो की श्रेणी में आता है। सामुदायिक रेडियो के अन्तर्गत जो भी कार्यक्रम बनाए एवं प्रसारित किये जाते हैं, वे पूर्णतया गैर-व्यावसायिक होते हैं। इसमें लाभ अर्जित करने जैसे किसी भी लक्ष्य का समावेश नहीं होता है और अगर कुछ समावेशित होता है तो वह होता है समुदाय का विकास, समुदाय का हित और उसकी अभिरुचियां। वास्तव में सामुदायिक रेडियो विशेष व्यक्ति, वर्ग, जाति और धर्म से इतर हर व्यक्ति को बोलने, सुनने और जनहित से सम्बंधित कार्यक्रमों के प्रसारण की आजादी देता है। इसका स्वरूप पूरी तरह से लोकतंत्रात्मक होता है जो समुदाय के हर व्यक्ति को अपना पक्ष रखने का अवसर देता है। सामुदायिक रेडियो के सन्दर्भ में यह बताना समीचीन होगा कि सन 1995 में भारत की सर्वोच्च अदालत द्वारा सामुदायिक रेडियो की आधारशिला रक्खी गयी और चेन्नई का अन्नामलाई विश्वविद्यालय 'अन्ना एफ.एम.' भारत का पहला कैम्पस कम्यूनिटी रेडियो केन्द्र बना था। इस केन्द्र ने अपने कार्यक्रम का पहला प्रसारण 1 फरवरी, 2004 को किया।

सामाजिक सरोकार 'सामुदायिक रेडियो' के मूल में अंतर्निहित है आइये अब हम भारतीय प्रोद्योगिकी संस्थान कानपुर के 'सामुदायिक रेडियो स्टेशन एफ.एम. 90.4' पर रोशनी डालते हैं। आई. आई. टी. कानपुर का 'सामुदायिक रेडियो स्टेशन एफ.एम. 90.4' आई. आई. टी परिसर के मीडिया टेक्नोलोजी सेन्टर में 27 सितम्बर, 2010 को स्थापित हुआ। इस रेडियो स्टेशन की स्थापना के पीछे भी लगभग वही उद्देश्य थे जो प्रायः अन्य सामुदायिक रेडियो स्टेशनों के हुआ करते हैं। अपनी स्थापना से लेकर आज तक इस सामुदायिक रेडियो स्टेशन ने अनेकानेक उपलब्धियों से भरे आयामों को स्पर्श किया है। आई. आई. टी. कानपुर का सामुदायिक रेडियो स्टेशन आई. आई. टी. परिसर के आस-पास लगभग 10 कि.मी. की परिधि में आने वाले शहरी, अर्धशहरी और ग्रामीण क्षेत्रों को सुचारू रूप से अपनी अबाधित प्रसारण सेवा दे रहा है। कोई भी व्यक्ति प्रसारण क्षेत्र की परिधि में अपने रेडियो सेट अथवा मोबाइल पर यहाँ से प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों का आनन्द ले सकता है। इस रेडियो स्टेशन से प्रसारित होने वाले कार्यक्रम मुख्यतः कृषि, पर्यावरण, शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला सशक्तिकरण, व्यवसाय, कैरियर, खेलकूद, सांस्कृतिक विकास, लोकसंगीत तथा स्थानीय मुद्दों पर आधारित होते हैं। इस तरह के कार्यक्रम गरीबों, असहायों और मूलभूत सुविधाओं से वंचित तबकों के लिये विकास के मार्ग को प्रशस्त करते हैं और उन्हें सशक्तिकरण की दिशा में ले जाते हैं। कार्यक्रमों के निर्माण में स्थानीय समुदाय की तात्कालिक आवश्यकताओं और अभिरूचियों को विशेष ध्यान में रक्खा जाता है। आई. आई. टी. कानपुर के सामुदायिक रेडियो स्टेशन द्वारा प्रसारित कुछ ऐसे कार्यक्रम हैं जिन्हें हमारे स्थानीय श्रोता काफी पसंद करते हैं जैसे-खेती-बाड़ी पर आधारित कार्यक्रम 'कृषि चर्चा', स्वास्थ्य पर आधारित कार्यक्रम 'Health Care', छोटे बच्चों के लिये कहानियों पर आधारित कार्यक्रम 'नन्हें-मुन्हों की कहानियाँ' तथा पुराने फिल्मी गानों पर आधारित कार्यक्रम 'Old is Gold' और कार्यक्रम 'आपका साथ आपकी बात' इत्यादि। फिल्मी गानों पर आधारित उक्त दोनों कार्यक्रमों में हम एक मामूली सी भिन्नता पाते हैं जैसे-कार्यक्रम 'Old is Gold' में गानों के अलावा सम्बंधित गाने के गीतकार, संगीतकार तथा फिल्म में काम करने वाले कलाकारों के बारे में बताया जाता है जबकि कार्यक्रम 'आपका साथ आपकी बात' पुराने फिल्मी गीतों

पर आधारित फरमाइशी कार्यक्रम है; इसमें हमारे श्रोता अपनी पसन्द के गीत सुनते हैं। श्रोता इन कार्यक्रमों से सम्बंधित अपनी शिकायत, अपने सुझाव और अपनी प्रतिक्रिया फोन अथवा मेल द्वारा भेजते हैं और हमारा रेडियो स्टेशन श्रोताओं की इन शिकायतों/सुझावों तथा प्रतिक्रियाओं का स्वागत करता है। श्रोताओं की ऐसी प्रतिक्रियाओं से रेडियो टीम का उत्साहवर्धन होता हैं, जो एक सामुदायिक रेडियो स्टेशन के लिये सुखद बात है क्योंकि इन्हीं प्रतिक्रियाओं से हम अपने श्रोताओं की पसन्द या नापसन्द को पाते हैं और उनकी पसन्द/नापसन्द को जानकर ही कार्यक्रमों में यथोचित सुधार करते हैं तथा नये कार्यक्रमों को बनाते हैं। परिणामस्वरूप रेडियो टीम और श्रोताओं के बीच एक मजबूत रिश्ते का निर्माण होता है जो किसी भी सामुदायिक रेडियो स्टेशन के सफल संचालन के लिये बेहद जरूरी होता है।

आई. आई. टी. कानपुर के सामुदायिक रेडियो स्टेशन में कार्यरत टीम समय-समय पर अपने प्रसारण क्षेत्रों का भ्रमण भी करती है ताकि स्थानीय लोगों और उनसे जुड़ी समस्याओं तथा उनकी जरूरतों को करीब से जान सके। ग्रामीण लोगों की जरूरतों को ध्यान में रखकर रेडियो टीम ने गाँवों में स्वास्थ्य सम्बन्धी कार्यशालाएं भी आयोजित करवाई। वस्तुतः आज भी हमारे ग्रामीण इलाकों में स्वच्छता को लेकर उतनी जागरूकता देखने को नहीं मिलती जितनी कि होनी चाहिये; ऐसी स्थिति में सामुदायिक रेडियो की जिम्मेदारी बनती है कि वह अपने सामाजिक दायित्वों का समुचित निर्वहन करे। अपने उत्तरदायित्वों को ध्यान में रखते हुए रेडियो टीम आस-पास के गाँवों में जाकर लोगों से मिलती है, उनसे विभिन्न विषयों पर चर्चा करती है ।

यह सर्वविदित है कि गाँवों में निवास करने वाले ज्यादातर लोग किसान होते हैं जिनकी जीविका का जरिया केवल कृषि और पशुपालन होता है, परन्तु हमें वहाँ अपवादस्वरूप कुछ ऐसे लोग भी मिल जाते हैं जो कृषि के साथ-साथ दूसरे अन्य व्यवसायों से भी जुड़े होते हैं क्योंकि उनके पास खेती के नाम पर कोई बड़ी जमीन न होकर भूमि का एक छोटा सा टुकड़ा होता है फलतः जीविका के लिये अन्य दूसरे व्यवसायों से जुड़ना इन लोगों की मजबूरी होती है, जैसे- चारपाई बुनने वाली रस्सी (स्थानीय भाषा में जिसे बान कहा जाता है) का व्यवसाय, लकड़ी की डलिया या टोकरी बनाने का व्यवसाय, मिट्टी के खिलौने व बर्तन बनाने का व्यवसाय इत्यादि। यद्यपि हुनरमंद कारीगर ही इस तरह के कार्यों को कर पाते हैं, हर व्यक्ति के वश की बात नहीं होती है । कहना न होगा कि एक समय था जब इन व्यवसायों को अपनाने वाले कलाकारों की यह कला उत्कृष्टता के अपने चरम पर हुआ करती थी परन्तु अफसोस है, आज के भौतिकतावादी और आधुनिक समाज ने उनकी इस कला को विस्मृत कर दिया। प्लास्टिक जैसे एवं धातुओं के अधिक उपयोग के कारण वास्तव में उनके ये व्यवसाय या तो अब अपनी पहचान खो चुके हैं या फिर विलुप्त होने के कगार पर हैं। समाज में इन कलाओं का अब बहुत मूल्य नहीं रहा है । हमारी रेडियो टीम ने समाज में इन व्यवसायों को अपनाने वाले लोगों से सम्पर्क स्थापित किया, उनके विचार जाने और उनकी इस कला से श्रोताओं को अवगत कराया ताकि हमारे कार्यक्रमों को सुनने वाले लोग इन कलाओं के महत्व को समझ सकें और उनके लिए पुनः एक बाजार निर्मित हो सके । आज भी समाज के उन हुनरमंद कारीगरों के साक्षात्कार और विचारों का हमारा रेडियो स्टेशन समय-समय पर प्रसारण करता रहता हैं। आई. आई. टी. कानपुर के सामुदायिक रेडियो के सन्दर्भ में एक और महत्वपूर्ण बात का उल्लेख करना चाहता हूँ कि हमारी रेडियो टीम परिसर में होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों में शामिल होकर उन कार्यक्रमों के बारे में श्रोताओं को जानकारी भी देती है उदाहरण के तौर पर भारतीय प्रोद्योगिकी संस्थान कानपुर में प्रतिवर्ष अनेक आयोजन होते हैं जिसमें काफी संख्या में देश और दुनियाँ के ख्यातिलब्ध व्यक्तित्व शिरकत करते हैं। इन आयोजनों में सामुदायिक रेडियो स्टेशन की टीम कार्यक्रम स्थलों पर जाकर कार्यक्रम में उपस्थिति विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े व्यक्तियों का साक्षात्कार लेती है। इस साक्षात्कार का उद्देश्य केवल सम्बंधित व्यक्ति के निजी जीवन पर ही फोकस न करके उसके नैतिक और सामाजिक जीवन पर भी रोशनी डालना होता है ताकि हमारे श्रोता उन महान व्यक्तियों की सोच, उनके विचार, उनके दायित्व तथा उनके द्वारा किए गए

कार्यों को जान सकें और उनसे प्रेरणा ले सकें क्योंकि महान व्यक्तियों के कार्य हमेशा लोगों को कुछ नया करने के लिये प्रेरित करते हैं। यही वजह है कि हमारे सामुदायिक रेडियो स्टेशन से प्रसारित होने वाले कुछ साक्षात्कार ऐसे हैं जिन्हें हमारी Community (समुदाय) के श्रोताओं द्वारा बार-बार प्रसारित करने की माँग की जाती है जैसे- पूर्व थल सेनाध्यक्ष जनरल जसवन्त जोगिन्दर सिंह का साक्षात्कार, गायत्री परिवार के प्रमुख श्री प्रणव पाण्ड्या का साक्षात्कार, महात्मा गाँधी के प्रपौत्र श्रीकृष्ण कुलकर्णी का साक्षात्कार, महामहिम राज्यपाल (उत्तर प्रदेश) श्री राम नाइक जी का साक्षात्कार और विवेकानंद समिति आई. आई. टी. कानपुर के संस्थापक श्री वीरेन्द्र नाथ ग्रोवर का साक्षात्कार इत्यादि ।

इन सब के अलावा आई. आई. टी. कानपुर का सामुदायिक रेडियो स्टेशन प्रतिवर्ष एक चार दिवसीय कार्यशाला का आयोजन करता है जिसका उद्देश्य होता है मीडिया और रेडियो में अपना भविष्य देखने वाले विद्यार्थियों को अल्प समय में अधिकाधिक महत्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध कराना। वास्तव में अब तक यह कार्यशाला (workshop) हमारे संस्थान के विद्यार्थियों के लिये बहुत लाभप्रद रही है; जिसकी बानगी हमें प्रतिवर्ष होने वाली कार्यशाला में भाग लेने वाले विद्यार्थियों की बढ़ी हुई संख्या से मिलती है। इस कार्यशाला में स्थानीय विद्यार्थियों के अलावा बड़ी संख्या में बाहर के विद्यार्थी भी भाग लेते हैं। इस चार दिवसीय कार्यशाला में प्रतिभागी बहुत सारी जानकारी हासिल करते हैं जैसे: Voice Modulaltion, Editing, Script Writing and Social Issues पर Radio Play तैयार करना और उसका मंचन करना इत्यादि। यह समस्त जानकारी सम्बंधित विषयों के विशेषज्ञों द्वारा प्रदान की जाती है ।

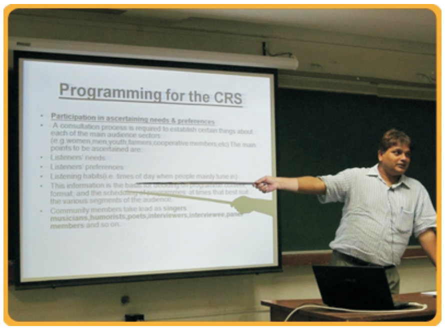

आई. आई. टी. कानपुर के सामुदायिक रेडियो के समबन्ध में एक और जरूरी बात का उल्लेख करना चाहता हूँ कि अगर समुदाय का कोई भी व्यक्ति अपनी कहानी, कविता या गीत को प्रसारित करना चाहता है अथवा किसी कार्यक्रम में भागीदारी चाहता है; तो यह रेडियो स्टेशन ऐसे व्यक्ति का सदैव स्वागत करता है। अपने श्रोताओं की अपेक्षाओं को सर्वोपरि मानते हुए आई. आई. टी. कानपुर का सामुदायिक रेडियो स्टेशन, स्थानीय श्रोताओं में अपनी लोकप्रियता और प्रासंगिकता को बनाये हुए है । जनकल्याण, जनजागरूकता तथा सामाजिक विकास जैसे मुद्दों को प्रतिबिम्बित करते हुए आज भी यह सफलता के पथ पर गतिमान है।

विनोद यादव
मीडिया टेक्नोलोजी सेन्टर

> जिस प्रकार गंगा, जमुना, अचिरवती, माही और रोहिणी नदियाँ समुद्र में मिल जाने पर अपना पृथक अस्तित्व खो देती हैं ऐसे ही जो व्यक्ति सधर्म अपना लेता है, उसकी जन्मजात जाति छूट जाती है।
>
> भगवान बुद्ध

राजभाषा नीति, अधिनियम एवं नियम

संघ की राजभाषा नीति द्विभाषिकता की है अर्थात् इसमें संघ के सरकारी कामकाज के लिए हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं के प्रयोग का प्रावधान है। भारत सरकार का प्रयास है कि हिंदी के प्रयोग को बढ़ाया जाए साथ ही यह भी सुनिश्चित किया जाए कि सरकारी काम काज का निपटान शीघ्रता और कुशलता से हो और जो कर्मचारी हिंदी में प्रवीण नहीं हैं उन्हें विभिन्न प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों द्वारा प्रशिक्षण दिए जाएं। प्रशिक्षण के क्रम को आगे बढ़ाने हेतु अधिकारियों व कर्मचारियों को विभिन्न प्रोत्साहन देने की नीति भारत सरकार द्वारा अपनाई गई है। राजभाषा नीति के मुख्य आयाम निम्नलिखित हैं-

1. भारत का संविधान
2. राजभाषा अधिनियम 1963, यथासंशोधित 1967
3. राजभाषा संकल्प 1968
4. राजभाषा नियम 1976 यथासंशोधित 1987
5. राजभाषा विभाग द्वारा समय-समय पर जारी किये गए आदेश, अनुदेश आदि

हिंदी की संवैधानिक स्थिति-संविधान के 17वें भाग में राजभाषा संबंधी उपबंध दिए गए हैं, जिनमें अनुच्छेद 343 से 351 तक 9 अनुच्छेद राजभाषा से संबंधित हैं जिनसे हिंदी की संवैधानिक स्थिति स्पष्ट हो जाती है।

संविधान में राजभाषा संबंधी उपबंध- संविधान के अनुच्छेद 343 (1) के अनुसार देवनागरी लिपि में लिखी हिंदी संघ की राजभाषा होगी तथा संघ में सरकारी प्रयोजनों के लिए भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप प्रयोग होगा। अनुच्छेद 343 (2) के अनुसार संविधान लागू होने से 15 वर्ष तक यानी 26 जनवरी, 1965 तक हिंदी के साथ-साथ अंग्रेजी का प्रयोग भी होता रहेगा। अनुच्छेद 343 (3) के अनुसार संसद इस अवधि को आगे भी बढ़ा सकती है।

राजभाषा आयोग तथा संसदीय राजभाषा समिति का गठन – अनुच्छेद 344 (1) संविधान के लागू होने के पाँच साल बाद (1955) प्रथम राजभाषा आयोग के गठन की व्यवस्था की गई। 344 (2) के अनुसार यह आयोग अन्य बातों के साथ-साथ सरकारी कामकाज में हिंदी के क्रमिक प्रयोग के बारे में राष्ट्रपति को अपनी सिफारिशें प्रस्तुत करेगा।

344 (3) के अनुसार आयोग की सिफारिशों पर राय देने के लिए एक संसदीय राजभाषा समिति का गठन किया गया। इस समिति की सिफारिशों के आधार पर ही संसद द्वारा अनुच्छेद 343 की प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग कर राजभाषा अधिनियम 1963 बनाया गया।

राज्य की राजभाषा या राजभाषाएं – अनुच्छेद 345 के अनुसार राज्यों को यह अधिकार है कि वे अपने यहाँ प्रयुक्त किसी एक भाषा या एक से अधिक भाषाओं को अपनी राजभाषा चुन सकते हैं या चाहें तो अंग्रेजी का प्रयोग जारी रख सकते हैं। अनुच्छेद 345 पर ध्यान दिया जाए तो यह स्पष्ट होता है कि राज्यों को अपनी राजभाषा का प्रयोग प्राधिकृत करने के लिए केंद्र की भाँति 15 सालों तक प्रतीक्षा करने की आवश्यकता नहीं थी। वे अपनी सुविधानुसार किसी भी समय अंग्रेजी की जगह सभी कार्यों के लिए किसी भी भाषा को अपनी राजभाषा या राजभाषाएं अपनाने के लिए स्वतंत्र थे। संविधान की आठवीं अनुसूची में निम्नलिखित 22 भाषाओं का उल्लेख है- असमिया, उड़िया, उर्दू, कन्नड़, कश्मीरी, कोंकणी, गुजराती, डोगरी, तमिल, तेलुगु, नेपाली, पंजाबी, बंगला, बोडो, मणिपुरी, मराठी, मलयालम, मैथिली, संथाली, संस्कृत, सिंधी और हिंदी।

संघ और राज्यों के बीच पत्राचार की भाषा-अनुच्छेद 346 में संघ और राज्यों के बीच पत्राचार के माध्यम की व्यवस्था की गई, और कहा गया कि जो भाषा संघ के सरकारी कामकाज में प्रयोग के लिए इस समय प्राधिकृत है, संघ और राज्यों के बीच पत्राचार के लिए प्रयुक्त की जाएगी। संविधान बनाते समय यह भाषा अंग्रेजी थी, लेकिन आपसी राय से राज्य हिंदी का प्रयोग कर सकते थे।

राज्य की किसी भी भाषा को राष्ट्रपति द्वारा मान्यता देना-अनुच्छेद 347 में राष्ट्रपति जी राज्य की माँग के आधार पर किसी भा भाषा को सरकारी काम काज के लिए मान्यता दे सकते हैं।

उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालय की भाषा-अनुच्छेद 348 खंड (1) में यह प्रावधान किया गया कि जब तक संसद कोई दूसरा कानून नहीं बनाती तब तक उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालय की सभी कार्यवाहियाँ अंग्रेजी में होंगी। संसद और राज्य विधान मंडल के कानून के साथ संविधान के या संविधान के तहत बनाए गए नियमों, आदेशों, विनियमों और उपविधियों का प्राधिकृत पाठ अंग्रेजी में होगा। अनुच्छेद 348 के खंड (2) के

अनुसार किसी राज्य का राज्यपाल राष्ट्रपति की पूर्वानुमति से अपने राज्य के उच्च न्यायालयों के निर्णयों, आदेशों आदि को छोड़कर बाकी सभी कार्यवाईयों के लिए हिंदी या राज्य की राजभाषा का प्रयोग प्राधिकृत कर सकता है।
अनुच्छेद 348 के खंड (3) के अनुसार यदि किसी राज्य में विधि के लिए अंग्रेजी को छोड़कर कोई दूसरी भाषा नियत की गई है तो राज्यपाल के प्राधिकार से राज्य के गजट में प्रकाशित विधियों, नियमों आदि का अंग्रेजी अनुवाद उनका प्राधिकृत पाठ होगा।

भाषा-संबंधी कुछ विधियों को अधिनियमित करने के लिए विशेष प्रक्रिया-अनुच्छेद 349 में कहा गया है कि 348 (1) में उल्लखित भाषा की व्यवस्था में परिवर्तन के लिए यदि 1965 के पहले कानून बनाया जाता है तो उसके लिए राष्ट्रपति की अनुमति प्राप्त करनी अनिवार्य होगी। राष्ट्रपति अनुच्छेद 344 के अधीन गठित आयोग और समिति की रिपोर्टों पर विचार करने के बाद ही अपनी अनुमति दे सकते थे। तदनुसार राष्ट्रपति की स्वीकृति प्राप्त करने के बाद ही राजभाषा अधिनियम 1963 को (जिसमें 348वें अनुच्छेद में की गई कानूनी व्यवस्था में कुछ परिवर्तन सुझाया गया था) संसद में पेश किया गया था।

आवेदन/अभ्यावेदन की भाषा- अनुच्छेद 350 के अनुसार भारत के प्रत्येक नागरिक को यह अधिकार है कि वह अपनी व्यथा के निवारण के संबंध में अपना आवेदन अभ्यावेदन सरकारी पदाधिकारी के सामने किसी भी भाषा में प्रस्तुत कर सकता है। यह शर्त जरूर है कि अगर आवेदन संघ के पदाधिकारी को लिखा गया है तो संघ में प्रयुक्त भाषाओं में से कोई एक में होना चाहिए और अगर यह किसी राज्य के अधिकारी को संबोधित है तो उस राज्य में प्रयुक्त भाषाओं में से किसी एक भाषा में होना चाहिए। अनुच्छेद 350 (क) तथा 350 (ख) के द्वारा भाषायी अल्पसंख्यकों के हितों की रक्षा के लिए यह व्यवस्था की गई है।
हिंदी भाषा के विकास के लिए निर्देश- 351वें अनुच्छेद में हिंदी के विकास के विषय में, संघ सरकार को निम्निलिखित निर्देश दिए गए हैं-
हिंदी भाषा की प्रसार-वृद्धि और उसका विकास करना, ताकि वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम हो सके। भाषा की आत्मीयता में हस्तक्षेप किए बिना हिंदुस्तानी और अष्टम अनुसूची में उल्लिखित अन्य भारतीय भाषाओं की रूप-शैली और पदावली को आत्मसात करते हुए उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यत संस्कृत तथा गौणत: उल्लिखित भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करना संघ का कर्तव्य होगा।

संविधान बनाने वालों की यह इच्छा थी कि हिंदी भारत में इस प्रकार विकसित हो कि सबके लिए ग्राह्य हो और सभी प्रांतों के लोग इसे अपना कर इसमें सरकारी कामकाज करें।

भारतीय संविधान में हिंदी का उल्लेख दो जगह हुआ है-1. संविधान के अनुच्छेद 343 में (देवनागरी लिपि में लिखित संघ की राजभाषा हिंदी) 2.अनुच्छेद 351 में (अष्टम अनुसूची में उल्लिखित भारतीय भाषाओं में भी हिंदी का समावेश) हिंदी के दोनों रूपों, संघीय और प्रादेशिक का उल्लेख मिलता है।

राजभाषा प्रकोष्ठ

> "सबको हाथ की पाँच उँगलियों की तरह रहना चाहिए। हाथ की पाँचों उँगलिया समान थोड़े ही हैं कोई छोटी है, कोई बड़ी, लेकिन हाथ से किसी चीज को उठाना होता है तब पाँचों इकट्ठा होकर उठाती हैं। हैं तो पाँच लेकिन काम हजारों का कर लेती हैं" क्यों कि उनमें एका है।"
>
> विनोबा भावे

उत्साह (निबन्ध)

दुख के वर्ग में जो स्थान भय का है वही स्थान आनन्द वर्ग में उत्साह का है। भय में हम प्रस्तुत कठिन स्थिति के नियम से विशेष रूप में दुखी और कभी-कभी उस स्थिति से अपने को दूर रखने के लिए प्रयत्नवान् भी होते हैं। उत्साह में हम आने वाली कठिन स्थित के भीतर साहस के अवसर के निश्चय द्वारा प्रस्तुत कर्म-सुख की उमंग से अवश्य प्रयत्नवान् होते हैं। उत्साह में कष्ट या हानि सहने की दृढ़ता के साथ-साथ कर्म में प्रवृत्ति होने के आनन्द का योग रहता है। साहस-पूर्ण आनन्द की उमंग का नाम उत्साह है। कर्म-सौन्दर्य के उपासक ही सच्चे उत्साही कहलाते हैं।

जिन कर्मों में किसी प्रकार का कष्ट या हानि सहने का साहस अपेक्षित होता है उन सब के प्रति उत्कंठापूर्ण आनन्द उत्साह के अन्तर्गत लिया जाता है। कष्ट या हानि के भेद के अनुसार उत्साह के भी भेद हो जाते हैं। साहित्य-मीमांसकों ने इसी दृष्टि से युद्ध वीरता है, जिसमें आघात, पीड़ा क्या मृत्यु तक की परवा नहीं रहती। इस प्रकार की वीरता का प्रयोजन अत्यन्त प्राचीन काल से पड़ता चला आ रहा है, जिसमें साहस और प्रयत्न दोनों चरम उत्कर्ष पर पहुँचते हैं। पर केवल कष्ट या पीड़ा सहन करने के साहस में ही उत्साह का स्वरूप स्फुरित नहीं होता। उसके साथ आनन्द-पूर्ण प्रयत्न या उसकी उत्कण्ठा का योग चाहिए। बिना बेहोश हुए भारी फोड़ा चिराने को तैयार होना साहस कहा जायेगा, पर उत्साह नहीं। इसी प्रकार चुपचाप, बिना हाथ-पैर हिलाये, घोर प्रहार सहने के लिए तैयार रहना साहस और कठिन से कठिन प्रहार सहकर भी जगह से न हटना धीरता कही जायेगी। ऐसे साहस और धीरता को उत्साह के अन्तर्गत तभी ले सकते हैं जबकि साहसी या धीर उस काम को आनन्द के साथ करता चला जायेगा जिसके कारण उसे इतने प्रहार सहने पड़ते हैं। सारांश यह है कि आनन्दपूर्ण प्रयत्न या उसकी उत्कंठा में ही उत्साह का दर्शन होता है, केवल कष्ट सहने के निश्चेष्ट साहस में नहीं। धृति और साहस दोनों का उत्साह के बीच संचरण होता है।

दान-वीर में अर्थ-त्याग का साहस अर्थात् उसके कारण होने वाले कष्ट या कठिनता को सहने की क्षमता अन्तर्हित रहती है। दानवीरता तभी कही जायेगी जब दान के कारण दानी को अपने जीवन-निर्वहन में किसी का कष्ट या कठिनता दिखाई देगी। इसी कष्ट या कठिनता की मात्रा या सम्भावना जितनी ही अधिक होगी, दानवीरता उतनी ही ऊँची समझी जाएगी। पर इस अर्थ-त्याग के साहस के साथ ही जब तक पूर्ण तत्परता और आनन्द के चिन्ह न दिखाई पड़ेंगे तब तक उत्साह का स्वरूप न खड़ा होगा।

युद्ध के अतिरिक्त संसार में और भी ऐसे विकट काम होते हैं जिसमें घोर शारीरिक कष्ट सहना पड़ता है और प्राण-हानि तक की संभावना रहती है। अनुसंधान के लिए तुषार-मण्डित अभ्रभेदी अगम्य पर्वतों की चढ़ाई, ध्रुव देश या सहारा के रेगिस्तान का सफर, क्रूर, बर्बर जातियों के बीच अज्ञात घोर जंगलों में प्रवेश इत्यादि भी पूरी वीरता और पराक्रम के कर्म हैं। इनमें जिस आनन्दपूर्ण तत्परता के साथ लोग प्रवत्त हुए हैं वह भी उत्साह ही है।

मनुष्य शारीरिक कष्ट से ही पीछे हटने वाला नहीं है। मानसिक क्लेश की सम्भावना से भी बहुत से कर्मों की ओर प्रवृत्त होने का साहस उसे नहीं होता। जिन बातों से समाज के बीच उपहास, निन्दा, अपमान इत्यादि का भय रहता है उन्हें अच्छी और कल्याणकारिणी समझते हुए भी बहुत से लोग उनसे दूर रहते हैं। प्रत्यक्ष हानि देखते हुए भी कुछ प्रथाओं का अनुसरण बड़े-बड़े समझदार तक इसलिए करते चलते हैं कि उनके त्याग वे बुरे कहे जायेंगे, लोगों में उनका वैसा आदर-सम्मान न रह जाएगा। उसके लिए मानग्लानि का कष्ट सब शारीरिक क्लेशों से बढ़कर होता है। जो लोग मान-अपमान का कुछ भी ध्यान न करके निन्दा-स्तुति की कुछ भी परवा न करके किसी प्रचलित प्रथा के विरुद्ध पूर्ण तत्परता और प्रसन्नता के साथ कार्य करते जाते हैं वे एक ओर तो उत्साही और वीर कहलाते हैं दूसरी ओर भारी बेहया।

किसी शुभ परिणाम पर दृष्टि रखकर निन्दा-स्तुति, मान-अपमान आदि की कुछ परवा न करके प्रचलित प्रथाओं का उल्लंघन करने वाले वीर या उत्साही कहलाते हैं, यह देखकर

बहुत से लोग केवल इसके विरुद्ध लोभ में ही अपनी उछल-कूद दिखाया करते हैं। वे केवल उत्साही या साहसी कहे जाने के लिए ही चली आती हुई प्रथाओं को तोड़ने की धूम मचाया करते हैं। शुभ या अशुभ परिणाम से उनसे कोई मतलब नहीं, उनकी ओर उनका ध्यान लेशमात्र नहीं रहता। जिस पक्ष के बीच की सुख्याति का वे अधिक महत्व समझते है उनकी वाहवाही से उत्पन्न आनन्द की चाह में वे दूसरे पक्ष के बीच की निन्दा या अपमान की कुछ परवा नहीं करते। ऐसे ओछे लोगों के साहस या उत्साह की अपेक्षा उन लोगों का उत्साह या साहस-भाव की दृष्टि से कहीं अधिक मूल्यवान है जो किसी प्राचीन प्रथा की चाहे वह वास्तव में हानिकारिणी ही हो - उपयोगिता का सच्चा विश्वास रखते हुए प्रथा तोड़ने वालों की निन्दा, उपहास, अपमान आदि सहा करते हैं।

समाज-सुधार के वर्तमान आंदोलनों के बीच जिस प्रकार सच्ची अनुभूति से प्रेरित उच्चाशय और गम्भीर पुरुष पाये जाते हैं उसी प्रकार तुच्छ मनोवृत्तियों द्वारा प्रेरित साहसी और दयावान् भी बहुत मिलते हैं। मैंने कई छिछोरों और लम्पटों को विधवाओं की दशा पर दया दिखाते हुए उनके पापाचार के लम्बे-चौड़े दास्तान हरदम सुनते-सुनाते पाया है। ऐसे लोग वास्तव में काम-कथा के रूप में ऐसे वृत्तान्तों का तन्मयता के साथ कथन और श्रवण करते हैं। इस ढाँचे के लोगों से सुधार के कार्य में कुछ सहायता पहुँचाने की ही सम्भावना रहती है। सुधार के नाम पर साहित्य के क्षेत्र में भी ऐसे लोग गंदगी फैलाते पाये जाते हैं।

उत्साह की गिनती अच्छे गुणों में होती है। किसी भाव के अच्छे या बुरे होने का निश्चय अधिकतर उसकी प्रवृत्ति के शुभ या अशुभ परिणाम के विचार से होता है। वही उत्साह जो कर्तव्य कर्मों के प्रति इतना सुन्दर दिखाई पड़ता है, अकर्तव्य कर्मों की ओर होने पर वैसा श्लाघ्य नहीं प्रतीत होता। आत्मरक्षा, पर-रक्षा, देश-रक्षा आदि के निमित्त साहस की जो उमंग दिखाई देती है उसके सौन्दर्य को परपीड़न, डकैती आदि कर्मों का साहस कभी नहीं पहुँच सकता। यह बात होते हुए भी विशुद्ध उत्साह या साहस की प्रशंसा संसार में थोड़ी-बहुत होती ही है। अत्याचारियों या डाकुओं के शौर्य और साहस की कथाएं भी लोग तारीफ करते हुए सुनते हैं।

अब तक उत्साह का प्रधान रूप ही हमारे सामने रहा, जिसमें साहस का पूरा योग रहता है। पर कर्ममात्र के संपादन में जो तत्परतापूर्ण आनन्द देखा जाता है वह उत्साह ही कहा जाता है। सब कामों में साहस अपेक्षित नहीं होता, पर थोड़ा बहुत आराम-विश्राम, सुभीते आदि का त्याग सबको करना पड़ता है, और कुछ नहीं तो उठकर बैठना, खड़ा होना या दस-पाँच कदम चलना ही पड़ता है। जब तक आनन्द का लगाव किसी क्रिया, व्यापार या उसकी भावना के साथ नहीं दिखाई पड़ता तब तक उसे उत्साह की संज्ञा प्राप्त नहीं होती। यदि किसी प्रिय मित्र के आने का समाचार पाकर हम चुपचाप ज्यों के त्यों आनंदित होकर बैठे रह जायँ या थोड़ा हँस भी दें तो यह हमारा उत्साह नहीं कहा जायेगा। हमारा उत्साह तभी कहा जायेगा जब हम अपने मित्र का आगमन सुनते ही उठ खड़े होंगे। उससे मिलने के लिए दौड़ पड़ेंगे और उसके ठहरने आदि के प्रबंधन में प्रसन्न-मुख इधर-उधर आते-जाते दिखाई देंगे। प्रयत्न और कर्म संकल्प उत्साह नामक आनन्द के नित्य लक्षण हैं।

प्रत्येक कर्म में थोड़ा या बहुत बुद्धि का योग भी रहता है। कुछ कर्मों में तो बुद्धि की तत्परता और शरीर की तत्परता दोनों बराबर साथ-साथ चलती हैं। उत्साह की उमंग जिस प्रकार हाथ-पैर चलवाती है, उसी प्रकार बुद्धि से भी काम कराती है। ऐसे उत्साहवाले वीर को कर्मवीर कहना चाहिए या बुद्धिवीर-यह प्रश्न मुद्राराक्षस नाटक बहुत अच्छी तरह हमारे सामने लाता है। चाणक्य और राक्षस के बीच जो चोटें चली है वे नीति की हैं- शस्त्र की नहीं। अत विचार करने की बात यह है कि उत्साह की अभिव्यक्ति बुद्धि-व्यापार के अवसर पर होती है अथवा बुद्धि द्वारा निश्चित उद्योग में तत्पर होने की दशा में। हमारे देखने में तो उद्योग की तत्परता में ही उत्साह की अभिव्यक्ति होती है- अत कर्मवीर ही कहना ठीक है।

बुद्धि-वीर दृष्टान्त कभी-कभी हमारे पुराने ढ़ंग के शास्त्रार्थों में देखने को मिल जाते हैं। जिस समय किसी भारी शास्त्रार्थी पंडित से भिड़ने के लिए कोई विद्यार्थी आनन्द के साथ सभा में आगे

आता है, उस समय उसके बुद्धि साहस की प्रशंसा अवश्य होती है। वह जीते या हारे, बुद्धि-वीर समझा ही जाता है। इस जमाने में वीरता का प्रसंग उठाकर वाग्वीर का उल्लेख यदि न हो तो बात अधूरी ही समझी जायेगी। ये वाग्वीर आजकल बड़ी-बड़ी सभाओं के मंचों पर से लेकर स्त्रियों के उठाये हुए पारिवारिक प्रपंचों तक में पाये जाते हैं और काफी तादाद में।

थोड़ा यह भी देखना चाहिए कि उत्साह में ध्यान किस पर रहता है। कर्म पर, उसके फल पर अथवा व्यक्ति या वस्तु पर ? हमारे विचार में उत्साही वीर का ध्यान आदि से अन्त तक पूरी कर्म श्रृंखला पर से होता हुआ उसकी सफलतारूपी समाप्ति तक फैला रहता है। इसी ध्यान से जो आनन्द की तरंगे उठती हैं वे ही सारे प्रयत्न को आनन्दमय कर देती हैं। युद्ध वीर में विजेतव्य को आलम्बन कहा गया है। उसका अभिप्राय यही है कि विजेतव्य कर्म-प्रेरक के रूप में वीर के ध्यान में स्थिर रहता है, वह कर्मस्वरूप का भी निर्धारण करता है। पर आनन्द और साहस के मिश्रित भाव का सीधा लगाव उसके साथ नहीं रहता। सच पूछिए तो वीर के उत्साह का विषय विजय-विधायक कर्म या युद्द ही रहता है। दानवीर और धर्मवीर पर विचार करने से यह बीत स्पष्ट हो जाती है। दान दयावश, श्रद्धावश या कीर्ति लोभवश दिया जाता है। यदि श्रद्धा-वश दान दिया जा रहा है तो दान-पात्र वास्तव में श्रद्धा का और यदि दया-वश दिया जा रहा है तो पीड़ित यथार्थ में दया का विषय या आलम्बन ठहरता है। अत उस श्रद्धा या दया की प्रेरणा से जिस कठिन या दुसाध्य कर्म की प्रवत्ति होती है उसी की ओर उत्साही का साहसपूर्ण आनन्द उन्मुख कहा जा सकता है। अत और रसों में आलम्बन का स्वरूप जैसा निर्दिष्ट रहता है वैसा वीररस में नहीं। बात यह है कि उत्साह एक यौगिक भाव है जिसमें साहस और आनन्द का मेल रहता है।

जिस व्यक्ति या वस्तु पर प्रभाव डालने के लिए वीरता दिखाई जाती है उसकी ओर उन्मुख कर्म होता है और कर्म की ओर उन्मुख उत्साह नामक भाव होता है। सारांश यह है कि किसी व्यक्ति या वस्तु के साथ उत्साह का सीधा लगाव नहीं होता। समुद्र लाँघने के लिए जिस उत्साह के साथ हनुमान उठे हैं उसका कारण समुद्र नहीं-समुद्र लाँघने का विकट कर्म है। कर्म भाववा ही उत्साह उत्पन्न करती है, वस्तु या व्यक्ति की भावना नहीं।

किसी कर्म के संबंध में जहाँ आनन्दपूर्ण तत्परता दिखाई पड़ी कि हम उसे उत्साह कह देते हैं। कर्म के अनुष्ठान में जो आनन्द होता है उसका विधान तीन रूपों में दिखाई पड़ता है-

1. कर्म-भावना से उत्पन्न,
2. फल-भावना से उत्पन्न और
3. आगन्तुक, अर्थात् विषयान्तर से प्राप्त।

इनमें कर्म-भावना प्रसूत आनन्द को ही सच्चे वीरों का आनन्द समझना चाहिए। जिसमें साहस का योग प्राय बहुत अधिक रहा करता है। सच्चा वीर जिस समय मैदान में उतरता है उसी समय उसमें उतना आनन्द भरा रहता है जितना औरो को विजय या सफलता प्राप्त करने पर होता है। उसके सामने कर्म और फल के बीच या तो कोई अन्तर होता ही नहीं या बहुत सिमटा हुआ होता है। इसी से कर्म की ओर यह उसी झोंक से लपकता है जिस झोंक से साधारण लोग फल की ओर लपका करते हैं। इसी कर्मप्रवर्तक आनन्द की मात्रा के हिसाब से शौर्य और साहस का स्फुरण होता है।

फल की भावना से उत्पन्न आनन्द भी साधक कर्मों की ओर हर्ष और तत्परता के साथ प्रवृत्त करता है। पर फल का लोभ जहाँ प्रधान रहता है वहाँ कर्म विषयक आनन्द उसी फल की भावना की तीव्रता और मन्दता पर अवलम्बित रहता है। उद्योग के प्रभाव के बीच जब-जब फल की भावना मंद पड़ती है-उसकी आशा कुछ धुँधली पड़ जाती है तब-तब आनन्द की उमंग गिर जाती है और उसी के साथ उद्योग में भी शिथिलता आ जाती है। पर कर्म-भावना-प्रधान उत्साह बराबर एकरस रहता है। फलासाक्त उत्साही असफल होने पर खिन्न और दुखी होता है, पर कर्मासाक्त उत्साही केवल कर्मानुष्ठान के पूर्व की अवस्था में हो जाता है। अत हम कह सकते हैं कि कर्म-भावना-प्रधान उत्साह ही सच्चा उत्साह है। फल-भावना-प्रधान उत्साह तो लोभ ही का एक प्रच्छन्न रूप है।

उत्साह वास्तव में कर्म और फल की मिली-जुली अनुभूति है जिसकी प्रेरणा से तत्परता आती है। यदि फल दूर ही पर दिखाई पड़े, उसकी भावना के साथ ही उसका लेशमात्रा भी कर्म या प्रयत्न के साथ लगाव न मालूम हो तो हमारे हाथ-पाँव कभी न उठें और उस फल के साथ हमारा संयोग ही न हो। इससे कर्म श्रृंखला की पहली कड़ी पकड़ते ही फल के आनन्द की भी कुछ अनुभूति होने लगती है। यदि हमें यह निश्चय हो जाये की अमुक स्थान पर जाने से हमें किसी प्रिय व्यक्ति का दर्शन होगा तो उस निश्चय के प्रभाव से हमारी यात्रा भी अत्यन्त प्रिय हो जाएगी। हम चल पड़ेंगे और हमारे अंगों की प्रत्येक गति में प्रफुल्लता दिखाई देगी। यही प्रफुलल्ता कठिन से कठिन कर्मों के साधन में भी देखी जाती है। वे कर्म भी प्रिय हो जाते हैं और अच्छे लगने लगते हैं। जब तक फल तक पहुँचने वाला कर्म-पथ अच्छा न लगेगा तब तक केवल फल का अच्छा लगना कुछ नहीं। फल की इच्छा मात्र हृदय में रखकर जो प्रयत्न किया जायेगा वह अभावमय और आनन्दशून्य होने के कारण निर्जीव-सा होगा।

कर्म-रुचि शून्य प्रयत्न में कभी-कभी इतनी उतावली और आकुलता होती है कि मनुष्य साधना के उत्तरोत्तर क्रम का निर्वाह न कर सकने के कारण बीच ही में चूक जाता है। मान लीजिए कि एक ऊँचे पर्वत के शिखर पर विचरते हुए किसी व्यक्ति को नीचे बहुत दूर तक गयी हुई सीढ़ियाँ दिखाई दीं और यह मालूम हुआ कि नीचे उतरने पर सोने का ढ़ेर मिलेगा। यदि उसमें इतनी सजीवता है कि उक्त सूचना के साथ ही वह उस स्वर्ण-राशि के साथ एक प्रकार के मानसिक संयोग का अनुभव करने लगा तथा उसका चित्त प्रफुल्ल और अंग सचेष्ट हो गये, उसे एक-एक सीढ़ी स्वर्णमयी दिखाई देगी, एक-एक सीढ़ी उतरने में उसे आनन्द मिलता जाएगा। एक-एक क्षण उसे सुख से बीतता हुआ जान पड़ेगा और वह प्रसन्नता के साथ स्वर्णराशि तक पहुँचेगा। इस प्रकार उसके प्रयत्न उसके प्रयत्न-काल को भी फल-प्राप्ति काल के अन्तर्गत ही समझना चाहिए। इसके विरुद्ध यदि उसका हृदय दुर्बल होगा और उसमें इच्छामात्र ही उत्पन्न होकर रह जाएगी, तो अभाव के बोध के कारण उसके चित्त में यही होगा कि कैसे झट से नीचे पहुँच जाँय। उसे एक-एक सीढ़ी उतरना बुरा मालूम होगा और आश्चर्य नहीं कि वह या तो हारकर बैठ जाये या लड़खड़कर मुँह के बल गिर पड़े।

फल की विशेष आसक्ति से कर्म के लाघव की वासना उत्पन्न होती है, चित्त में यही आता है कि कर्म बहुत कम या बहुत सरल करना पड़े और फल बहुत-सा मिल जाये। श्री कृष्ण ने कर्म-मार्ग से फलासक्ति की प्रबलता हटाने का बहुत ही स्पष्ट उपदेश दिया, पर उनके समझाने पर भी भारतवासी इस वासना से ग्रस्त होकर कर्म से तो उदास हो बैठे और फल के इतने पीछे पड़े कि गरमी में ब्राह्मण को एक पेठा देकर पत्र की आशा करने लगे, चार आने रोज का अनुष्ठान कराके व्यापार से लाभ, शत्रु पर विजय, रोग से मुक्ति, धन-धान्य की वृद्धि तथा और भी न जाने क्या-क्या चाहने लगे। आसक्ति प्रस्तुत या उपस्थित वस्तु में ही ठीक कही जा सकती है। कर्म सामने उपस्थित रहता है। इससे आसक्ति उसी में चाहिए। फल दूर रहता है, इससे उसकी ओर कर्म का लक्ष्य काफी है। जिस आनन्द से कर्म की उत्तेजना होती है और जो आनन्द कर्म करते समय तक बराबर चला चलता है उसी का नाम उत्साह है।

कर्म के मार्ग पर आनन्दपूर्वक चलता हुआ उत्साही मनुष्य यदि अन्तिम फल तक न भी पहुँचे तो भी उसकी दशा कर्म न करने वाले की अपेक्षा अधिकतर अवस्थाओं में अच्छी रहेगी, क्योंकि एक तो कर्म-काल में उसका जो जीवन बीता वह संतोष या आनन्द में बीता, उसके उपरान्त फल की अप्राप्ति पर भी उसे यह पछतावा न रहा कि मैंने प्रयत्न नहीं किया। फल पहले से कोई बना-बनाया पदार्थ नहीं होता। अनुकूल प्रयत्न-कर्म के अनुसार, उसके एक-एक अंग की योजना होती है। बुद्धि द्वारा पूर्ण रूप से निश्चित की हुई व्यापार-परम्परा का नाम ही प्रयत्न है। किसी मनुष्य के घर का कोई प्राणी बीमार है। वह वैद्यों के यहाँ से जब तक औषधि ला-लाकर रोगी को देता जाता है और इधर-उधर दौड़-धूप करता जाता है तब तक उसके चित्त में जो संतोष रहता है-प्रत्येक नये उपचार के साथ जो आनन्द का उन्मेष रहता है-यह उसे कदापि न प्राप्त होता, यदि वह रोता हुआ बैठा रहता। प्रयत्न की अवस्था में उसके जीवन का जितना

का जितना अंश संतोष, आशा और उत्साह में बीता, अप्रयत्न की दशा में उतना ही अंश केवल शोक और दुख में कटता। इसके अतिरिक्त रोगी के न अच्छे होने की दशा में भी वह आत्मग्लानि के उस कठोर दुख से बचा रहेगा, जो उसे जीवन भर यह सोच-सोचकर होता कि मैंने पूरा प्रयत्न नहीं किया।

कर्म में आनन्द अनुभव करने वालों ही का नाम कर्मण्य है। धर्म और उदारता के उच्च कर्मों के विधान में ही एक ऐसा दिव्य आनन्द भरा रहता है कि कर्ता को वे कर्म ही फलस्वरूप लगते हैं। अत्याचार का दामन और क्लेश का शमन करते हुए चित्त में जो उल्लास और तुष्टि होती है, वही लोकोपकारी कर्मवीर का सच्चा सुख है। उसके लिए सुख तब तक के लिए रुका नहीं रहता जब तक जब तक कि फल प्राप्त न हो जाये, बल्कि उसी समय से थोड़ा-थोड़ा करके मिलने लगा है जब से वह कर्म की ओर हाथ बढ़ाता है।

कभी-कभी आनन्द का मूल विषय तो कुछ और रहता है, पर उस आनन्द के कारण एक ऐसी स्फूर्ति होती है जो बहुत से कामों की ओर हर्ष के साथ अग्रसर करती है। इसी प्रसन्नता और तत्परता को देख लोग कहते हैं कि वे काम बड़े उत्साह से किये जा रहे हैं। यदि किसी मनुष्य को बहुत सा लाभ हो जाता है या उसकी कोई बड़ी भारी कामना पूर्ण हो जाती है तो जो काम उसके सामने आते हैं उन सबको वह बड़े हर्ष और तत्परता के साथ करता है। उसके इस हर्ष और तत्परता को भी लोग उत्साह ही कहते हैं। इसी प्रकार किसी उत्तम फल या सुख प्राप्ति की आशा या निश्चय से उत्पन्न आनन्द, फलोन्मुख प्रयत्नों के अतिरिक्त और दूसरे व्यापारों के साथ संलग्न होकर, उत्साह के रूप में दिखाई पड़ता है। यदि हम किसी ऐसे उद्योग में लगे हैं जिससे आगे चलकर हमें बहुत लाभ या सुख की आशा है तो हम उस उद्योग को तो उत्साह के साथ करते ही हैं, अन्य कार्यों में भी प्राय अपना उत्साह दिखा देते हैं।

यह बात उत्साह में नहीं, अन्य मनोविकारों में बराबर पायी जाती है। यदि हम किसी बात पर क्रुद्ध बैठे हैं और इसी बीच में कोई दूसरा आकर हमसे कोई बात सीधी तरह भी पूछता है तो भी हम उस पर झुँझला उठते हैं। इस झुँझलाहट का न तो कोई निर्दिष्ट कारण होता है, न उद्देश्य। यह केवल क्रोध की स्थिति व्याधात को रोकने की क्रिया है, क्रोध की रक्षा का प्रयत्न है। इस झुँझलाहट द्वारा हम यह प्रकट करते हैं कि हम क्रोध ही संचित करते हैं जिनसे दूसरी अवस्था में विपरीत भाव प्राप्त करते। इसी प्रकार यदि हमारा चित्त किसी विषय में उत्साहित रहता है तो हम अन्य विषयों में भी अपना उत्साह दिखा देते हैं। यदि हमारा मन बढ़ा हुआ रहता है तो हम बहुत से काम प्रसन्नतापूर्वक करने के लिए तैयार हो जाते हैं। इसी बात का विचार करके सलाम-साधक लोग हाकिमों से मुलाकात करने के पहले अर्दलियों से उनका मिजाज पूछ लिया करते हैं।

स-आभार – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

महात्मा सुकरात एक बड़े विद्वान व प्रसिद्ध दार्शनिक थे। सारा यूनान उनका आदर करता था, परंतु उनकी पत्नी सदा उनसे लड़ती रहती थी। एक दिन सुकरात अपने कुछ शिष्यों के साथ घर आए तो उनकी पत्नी ने उनसे अकारण लड़ना आरंभ कर दिया। प्रत्युत्तर में सुकरात मौन रहे तो पत्नी ने क्रोध में घर का कूड़ा बरतन में भरकर सुकरात के सिर पर डाल दिया। सुकरात हँसकर बोले-आज पुरानी कहावत सत्य हो गई। सुना था कि जो बादल गरजते हैं, वे बरसते नहीं हैं, परंतु आज देखा कि जो गरजे , वो बरस भी गए। सुकरात तो शांत रहे, परंतु उनका एक विद्यार्थी क्रोधित होकर बोला-गुरुदेव यह महिला आपकी पत्नी होने के योग्य बिल्कुल नहीं है। सुकरात बोले-नहीं पुत्र यह बिल्कुल मेरे ही योग्य है। यह समय-समय पर मुझे ठोकर लगाकर देखती रहती है कि सुकरात कच्चा है या पक्का। इसके ऐसे व्यवहार से मुझे पता लगता है कि मेरे अंदर सहनशीलता है या नहीं। जब पत्नी ने ये शब्द सुने तो वह लज्जित होकर सुकरात से क्षमा माँगने लगी। सहनशील पुरुष बुरे से बुरे व्यक्ति का स्वभाव बदल देते हैं।

राष्ट्रीय महत्व की परियोजनाओं में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर का योगदान

स्वतंत्रता के पश्चात् लोकतांत्रिक ढाँचे के तहत, भारत की जनता को आत्मनिर्भर बनाने के लिए अब तक की सभी सरकारों ने विभिन्न योजनाओं को प्रारम्भ किया तथा समय और आवश्यकता के अनुसार देश की औद्योगिक क्षेत्र में क्रांति लाने के लिए कई नीतियाँ बनाई। इसके अलावा देश के जनसामान्य को आत्म-निर्भर बनाने के उद्देश्य से शिक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी आदि क्षेत्रों में आवश्यक नीतियों को बनाकर उनको कार्यान्वित करने का प्रयास किया। जहाँ तक सफलता और असफलता की बात है, शायद देश में इन नीतियों के कार्यांन्वयन में बरती गई असावधानी के कारण अब तक आशातीत सफलता नहीं मिल पाई है। तथापि भारत की सरकारों द्वारा समन्वित प्रयास किये गये हैं और आज भी किये जा रहे हैं। वर्तमान भारत सरकार भी सामाजिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र यथा - शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य और विशेष रूप से विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने का प्रयास कर रही है ताकि देश के लोगों का चहुँमुखी विकास हो सके। इसी कड़ी में भारत सरकार ने स्वच्छ भारत अभियान, राष्ट्रीय आविष्कार अभियान, पं.मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय शिक्षक एवं प्रशिक्षण मिशन, ग्लोबल इनीशियेटिव ऑफ एकेडेमिक नेटवर्क उन्नत भारत अभियान, रूरल टेक्नालॉजी एक्शन ग्रुप, ईशान विकास तथा इम्प्रिंट इंडिया जैसी महत्वाकांक्षी परियोजनाएं आरंभ की हैं। भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों के तत्वावधान में आरंभ की गई इन परियोजनाओं का उद्देश्य देश को सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक रूप से सुदृढ़ बनाना है। उक्त अभियानों के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए भारत सरकार ने देश के शीर्षस्थ शैक्षिक एवं तकनीकी संस्थानों को समन्वयक की जिम्मेदारी दी है। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी), भारतीय विज्ञान संस्थान (आईआईएससी), केन्द्रीय विश्वविद्यालय एवं राजकीय विश्वविद्यालय, भारतीय प्रबंध संस्थान (आईआईएम), राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी) जैसे अनेक संस्थानों के संकाय सदस्यों की विशेषज्ञता से जनसामान्य को लाभ पहुँचाने के उद्देश्य से सुनियोजित ढंग से काम किया जा रहा है।

वस्तुतः इन महत्वाकांक्षी योजनाओं के सामान्य उद्देश्यों, नीतियों, क्रियान्वयन के तरीकों, लक्ष्य-समूहों आदि की चर्चा के साथ-ही-साथ इन योजनाओं में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर की संलग्नता, भूमिका एवं अब तक उसके द्वारा किये गए प्रयासों की चर्चा ही इस लेख का हेतु है।

स्वच्छ भारत अभियान [SBA]

चूंकि भारत में अधिकांश जनसंख्या ग्रामीण परिवेश में निवास करती है वस्तुतः इस देश में लोगों का खुले में शौच करना एक बड़ी समस्या है। आज के भारत में करीब 55 प्रतिशत लोगों के पास शौचालय नहीं है। उन ग्रामीण इलाकों में जहां शौचालय है वहां भी पानी की उपलब्धता नहीं है। शहरों में झुग्गी में रहने वालों के पास न तो पानी की आपूर्ति है न शौचालय की सुविधा।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने राष्ट्र-पिता महात्मा गांधी की जयंती 2 अक्तूबर, 2014 अपने इस ड्रीम प्रोजेक्ट "स्वच्छ भारत अभियान" की शुरुआत की। देश के इस सबसे बड़े अभियान को सफल बनाने के लिए उन्होंने सभी देशवासियों का आह्वान किया साथ ही इस अभियान को सही तरीके से लागू करने के लिए एक 19 सदस्यीय विशेषज्ञ समिति भी बनाई जिसके अध्यक्ष नामचीन वैज्ञानिक श्री रघुनाथ अनंत माशेलकर जी हैं।

माशेलकर जी एक वैज्ञानिक होने के साथ-साथ औद्योगिक अनुसंधान परिषद के पूर्व महानिदेशक हैं। समिति विभिन्न राज्यों में स्वच्छता और पानी की सुविधा देने के सबसे श्रेष्ठ और आधुनिक तरीकों पर सुझाव देगी। इसे जनआंदोलन बनाने के लिए प्रियंका चोपड़ा, शशि थरुर, सचिन तेंदुलकर और अनिल अंबानी जैसे सेलीब्रिटीज को जिम्मेदारी दी गई है कि वे लोगों को इस अभियान के प्रति जागरूक बनाएँ। इन सभी लोगों ने इस चुनौती को सहर्ष स्वीकार किया है और अन्य लोगों से जुड़ने की अपील की है।

स्वच्छ भारत अभियान के मुख्यतः दो उप अभियान हैं-

- स्वच्छ भारत अभियान ग्रामीण
- स्वच्छ भारत अभियान शहरी

स्वच्छ भारत अभियान के तहत ग्रामीण इलाकों में ग्रामीण विकास मंत्रालय हर गांव को अगले पांच सालों तक हर साल २०

लाख रुपये देगा। इस अभियान के तहत सरकार ने हर परिवार में व्यक्तिगत शौचालय की लागत 12,000 रुपये तय की है ताकि सफाई, नहाने और कपड़े धोने के लिए पर्याप्त पानी की आपूर्ति की जा सके। अनुमान के मुताबिक पेयजल और स्वच्छता मंत्रालय द्वारा इस अभियान पर 1,34,000 करोड़ रुपये खर्च किये जाएंगे।

स्वच्छ भारत अभियान के लिए शहरी क्षेत्र में हर घर में शौचालय बनाने, सामुदायिक और सार्वजनिक शौचालय बनाने, ठोस कचरे का उचित प्रबंधन करने और 4,041 वैधानिक कस्बों के 1.04 करोड़ घरों को इसमें शामिल करने का लक्ष्य है। इसमें सार्वजनिक शौचालय की दो लाख से ज्यादा सीट मुहैया कराने और हर कस्बे में ठोस कचरे का उचित प्रबंधन करना शामिल है। कुछ क्षेत्र जैसे बाजार, बस अड्डे, रेलवे स्टेशन के पास, पर्यटक स्थलों पर और सार्वजनिक मनोरंजन स्थलों पर सार्वजनिक शौचालय की सुविधा दी जाएगी।

गौरतलब है कि भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर देश का एक प्रतिष्ठित शैक्षिक संस्थान है जिसका स्वयं का एक सुन्दर तथा सुविधायुक्त कैम्पस है। संस्थान की गरिमा के अनुरूप तथा स्वच्छता के महत्व को समझते हुए कैम्पस में नियमित तौर पर स्वच्छता का ध्यान रखा जाता है। इस कार्य में संस्थान निर्माण विभाग तथा कैम्पस वासियों की भूमिका अहम रहती है। पर्यावरण की सुरक्षा एवं अपशिष्ट प्रबंधन के लिए विशेष प्रयास किये गये हैं। कैम्पस के अंदर कूड़े-दान, जलनिकासी की उचित व्यवस्था है। संस्थान के हॉस्टलों में छात्र एवं संस्थान निर्माण विभाग के कर्मचारी साथ मिलकर हास्टलों की सफाई में अपना योगदान देते हैं। स्वच्छता अभियान के तहत 2 अक्टूबर को स्वच्छता के प्रति लोगों को जागरूक करने के उद्देश्य से कैम्पस में स्वच्छता अभियान चलाया जाता है जिसमें बड़ी संख्या में संकाय-सदस्य, स्टॉफ तथा विद्यार्थी भाग लेते हैं। हम कह सकते हैं कि संस्थान का कैम्पस स्वच्छता एवं पर्यावरण की दृष्टि से लोगों के लिए एक आदर्श स्थान है जिससे अन्य लोग सीख लेकर अपने आस-पास के वातावरण को स्वच्छ रख सकते हैं।

राष्ट्रीय आविष्कार अभियान [RAA]

राष्ट्रीय आविष्कार अभियान मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार की एक पहल है जिसका उद्देश्य विद्यालयीन बच्चों के मन में विज्ञान एवं गणित विषय के प्रति उत्साह, रचनात्मकता एवं रूचि का भाव पैदा करना है। भारत के पूर्व राष्ट्रपति एवं विख्यात वैज्ञानिक स्व.डॉ ए पी जे अब्दुल कलाम ने 9 जुलाई, 2015 को इस अभियान का शुभारंभ किया। देश के जाने-माने तकनीकी संस्थानों एवं प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों को इस अभियान में शामिल किया गया है। विज्ञान एवं गणित विषय के प्रति देश के विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्रों की रूचि बढ़ाने के लिए उन्हें योजनाबद्ध नीति के तहत मौलिक कार्यक्रमों, मॉडलों के प्रदर्शन, छात्रों की अदला-बदली तथा भ्रमण कार्यक्रमों के आयोजनों की जिम्मेदारी भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर को सौंपी गई है। राष्ट्रीय आविष्कार अभियान के नोडल संस्थान होने के नाते भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर में 14 नवम्बर, 2015 को संस्थान के निदेशक प्रो. इन्द्रनील मान्ना के दिशा-निर्देशन एवं नोडल अधिकारी प्रो. एच सी वर्मा की अगुवाई में कानपुर जिले के विभिन्न विद्यालयों के विज्ञान एवं गणित के शिक्षकों के लिए शिक्षण-प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। टीचर्स सपोर्ट सिस्टम (Teacher Support System) के तहत अब तक कुल तीन चरणों में प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये जा चुके हैं जिसमें कानपुर एवं निकटवर्ती जिलों के विभिन्न विद्यालयों के कुल 76 शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं को संस्थान के अनुभवी संकाय-सदस्यों ने विज्ञान एवं गणित के शिक्षण के लिए कई विधियां बताई हैं। इसके अलावा इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में प्रतिभागी शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं से वार्ता करके शिक्षण-कार्य में आने वाली बाधाओं पर विचार कर उनका निदान किया गया तथा उन्हें संस्थान की प्रयोगशालाओं एवं अन्य अवसंरचनाओं का भ्रमण कराया गया। उल्लेखनीय है कि पिछले संसद-सत्र में माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री ने राज्य सभा में अपने भाषण में भा.प्रौ.सं.कानपुर के प्रयासों की प्रशंसा की थी।

मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय शिक्षक एवं प्रशिक्षण मिशन [PMMMNMTT]

काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी के स्वतंत्रता भवन में मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय शिक्षक एवं प्रशिक्षण मिशन का शुभारंभ करते हुये प्रधानमंत्री ने कहा कि "शिक्षा प्रणाली रोबोट तैयार करने के लिए नहीं है, बल्कि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के साथ एक पूर्ण मानव मन तैयार करने के लिए है।" वस्तुतः शिक्षक, शिक्षण, पेशेवर विकास, पाठ्यक्रमों के निर्माण, कार्य-प्रणाली के निर्धारण एवं मूल्यांकन, शिक्षण-अनुसंधान से संबंधित विषयों पर विचार करने तथा उसे मूर्त रूप देने के उद्देश्य से ही मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय शिक्षक एवं प्रशिक्षण मिशन की स्थापना की गई है। इस मिशन के तहत मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने आईआईटी पटना में टीचिंग लर्निंग सेन्टर फॉर इंटरनेट-ऑफ-थिंग्स की स्थापना की है। आईआईटी कानपुर, आईआईटी खड्गपुर एवं आईआईटी इंदौर इस परियोजना में सहयोगी संस्थान हैं। इस मिशन के तहत भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर द्वारा 2015-16 शैक्षणिक सत्र के दौरान 400 से अधिक छात्रों के लिए एक मिश्रित शिक्षण पाठ्यक्रम तैयार किया गया और उन्हें व्याख्यान के रूप में ऑनलाइन उपलब्ध कराया गया। इसके अलावा संस्थान अगले वर्ष 20 से 26 मार्च, 2017 के दौरान देश के विभिन्न इंजीनियरिंग कॉलेजों, विश्वविद्यालयों तथा सरकारी अनुसंधान प्रयोगशालाओं के विद्यार्थियों के लिए 'साइबर फिजिकल सिस्टम' विषय पर एक अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन करने जा रहा है।

ग्लोबल इनीशियेटिव ऑफ एकेडेमिक नेटवर्क्स (GIAN)

भारत सरकार ने ग्लोबल इनीशियेटिव ऑफ एकेडेमिक नेटवर्क्स नामक एक कार्यक्रम शुरु किया है जिसका उद्देश्य विश्व भर के उत्कृष्ट वैज्ञानिकों तथा उद्यमियों को भारत की उच्च शैक्षिक संस्थानों से जुड़ने के लिए आमंत्रित करना है। कार्यक्रम के उद्देश्य के अनुसार अंतरराष्ट्रीय ख्याती प्राप्त विशेषज्ञों की मदद से भारत में स्थित उच्च शैक्षिक संस्थानों के मौजूदा शैक्षिक संसाधनों का संवर्धन करने, गुणवत्ता सुधार की प्रक्रिया को गति देने तथा भारत की वैज्ञानिक एवं तकनीकी क्षमता को विश्व पटल पर लाने का प्रयास किया जा रहा है। इस दिशा में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर द्वारा 19 पाठ्यक्रमों का अनुमोदन किया गया है। वर्ष 2016 में इन पाठ्यक्रमों में से 14 पाठ्यक्रमों के लिए देश के विभिन्न तकनीकी एवं प्रबंधन संस्थानों के पीएच.डी स्कालर, पूर्व-स्नातक छात्र तथा अनुसंधान से संबंद्ध छात्रों को संस्थान में आमंत्रित करके उन्हें पाठ्यक्रमों की विषय-वस्तु से परिचित कराया गया। प्रो. अमिताभ नारायन, डॉ सुरेश अग्रवाल, डॉ हैन्स शैफर, प्रो. बुलबुल चक्रबर्ती, प्रो. डेनियल जे कॉस्टेलो आदि विदेश के संकाय सदस्यों ने अपनी विशेषज्ञता से भारत के विद्यार्थियों को विज्ञान की विभिन्न विधाओं एवं इंजीनियरिंग विषयों में ज्ञान-वर्धन किया। कार्यक्रम के तहत वर्ष 2017 में चार और पाठ्यक्रमों के लिए कक्षा आयोजित करनी की योजना है। गौरतलब है कि ग्लोबल इनीशियेटिव ऑफ एकेडेमिक नेटवर्क्स के तहत भारत के संस्थानों में विदेश के संकाय-सदस्यों को विशिष्ट/अनुबंध/विजिटिंग फैकल्टी के रूप में अल्प एवं दीर्घकालिक पाठ्यक्रमों के लिए आमंत्रित करने की योजना है।

उन्नत भारत अभियान [UBA]

लगभग 70% जनता भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है जिसमें अधिकांश अपने जीवन-यापन के लिए खेती-बारी और उससे जुड़े हुये व्यवसाय में काम करते हैं। इतनी विशाल श्रमशक्ति के होते हुये भारत के कुल सकल घरेलू उत्पाद में उनका सहयोग महज 17% है। भारत सरकार ने प्रधानमंत्री के विधेय वाक्य "If we have to build a nation, we should start from the village" में छिपे आदर्श को ध्यान में रखते हुए ग्रामीण-क्षेत्र के सर्वांगीण विकास के लिए उन्नत भारत अभियान की शुरुआत 2014 में की जिससे राष्ट्रपति महात्मा गांधी की विचार-धारा "ग्राम-स्वराज" को अमली जमा पहनाया जा सके। सरकार ने मानव संसाधन विकास मंत्रालय के माध्यम से देश के उच्च शैक्षिक संस्थानों यथा-भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों, राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थानों तथा भारतीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थानों को इस अभियान से जोड़ा और उन्हें ये जिम्मेदारी दी कि वे उपयोगी तकनीक का विकास करें और पंचायती राज जैसी संस्थाओं और गैर सरकारी संगठनों के माध्यम से देश के जनसामान्य को प्रौद्योगिकी से जोड़ें। वस्तुतः इसके लिए देश की ग्रामीण जनता की आवश्यकता के अनुरूप इन संस्थानों में प्रौद्योगिकी का विकास किया जा रहा है ताकि ग्रामीण जनता द्वारा

इनका उपयोग किया जा सके। इस अभियान के लिए मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अंतर्गत आई आई टी दिल्ली के संचालक मण्डल के पूर्व अध्यक्ष डॉ. विजय पी. भाटकर की अध्यक्षता में एक राष्ट्रीय संचालन समिति बनाई गई है और आई आई टी दिल्ली को नोडल एजेंसी बनाया गया है । उन्नत भारत अभियान के अंतर्गत मुख्यतः निम्न क्षेत्रों को फोकस किया गया है:

- ऑर्गैनिक खेती।
- जल प्रबंधन।
- वैकल्पिक ऊर्जा स्रोत।
- ग्रामीण कारीगरी एवं उद्योग।
- ग्रामीण क्षेत्रों में बुनियादी सुविधाएं।

उद्देश्य:

ग्रामीण भारत और राष्ट्रीय जरूरतों के लिए प्रासंगिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण में उच्च शिक्षा के संस्थानों की भागीदारी के साथ निम्नलिखित उद्देश्य हैं:

- ग्रामीण भारत की समस्याओं का मूल्यांकन कर आनुषंगिक प्रौद्योगिकी के माध्यम से समाधान प्रदान करना और ग्रामीण उद्यमिता एवं ग्रामीण रोजगार के लिए तकनीक का प्रचार-प्रसार करना।
- उच्च शिक्षा में अंतर-विषयक दृष्टिकोण को बढ़ावा देना जिससे ग्रामीण भारत के लिए समावेशी प्रौद्योगिकी को शामिल किया जा सके।
- विभिन्न विज्ञान और प्रौद्योगिकी आधारित स्वैच्छिक संगठनों और विकास एजेंसियों के बीच नेटवर्किंग और समन्वय को बढ़ावा देना।
- गांव के बुनियादी विकास और आवश्यकताओं के अनुसार उत्पाद और तरीकों की पहचान कर प्राकृतिक संसाधन को बिना कोई क्षति पहुंचाए तकनीक हस्तक्षेप से कृषि, आवास, सड़क,ऊर्जा आदि बुनियादी ढांचे को आर्थिक दृष्टि से मजबूत बनाना।
- स्थानीय स्तर पर प्रबंधन एवं आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देना तथा सभी समुदायों को सशक्त बनाने के लिए विकास योजनाओं के कार्यान्वयन में वांछित परिणाम के लिए तमाम एजेंसियों में समन्वय समन्वय स्थापित करना।
- इस कार्यक्रम के प्रचार-प्रसार और सफलता के लिए प्रशिक्षित युवाओं, संस्थानों तथा विशेषज्ञों को आमंत्रित करना।

रूरल टेक्नालॉजी एक्शन ग्रुप (RuTAG)

रूरल टेक्नालॉजी एक्शन ग्रुप मध्य भारत में और विशेष रूप से उत्तर प्रदेश की ग्रामीण जनता के जीवन को सहज बनाने तथा उनके नित्य प्रतिदिन के कार्यों में प्रौद्योगिकी का समावेश करने के उद्देश्य से कार्य कर रहा है। इस एक्शन ग्रुप को भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर के चार वरिष्ठ प्राध्यापकों का मार्गदर्शन प्राप्त हो रहा है। संस्थान के यांत्रिक अभियांत्रिकी विभाग के डॉ एन एस व्यास इस ग्रुप के प्रधान अन्वेषक (Principal Investigator) तथा डॉ जे रामकुमार, डॉ अरुण कुमार शर्मा एवं डॉ एस सुन्दर कुमार अय्यर सह-प्रधान अन्वेषक हैं। रूरल टेक्नालॉजी एक्शन ग्रुप ने ग्रामीण जनता से सीधे जुड़ते हुए उनके पेशेवर, सामाजिक तथा कृषि संबंधी कार्यों के लिए अनेक योजना आरंभ की है । ग्रामीण लोगों को इन योजनाओं से लाभ पहुँचा है। रूरल टेक्नालॉजी एक्शन ग्रुप के पहले चरण में हम उन कार्यों की यहाँ चर्चा करना आवश्यक समझते हैं जिन्हें इस ग्रुप द्वारा कार्यान्वित किया जा चुका है:

- आमतौर पर गाँवों में विभिन्न कार्यों के लिए उपयोग में लाए जाने वाले घोड़ों की नालों को मजबूत तथा टिकाऊ बनाने के लिए उन्नत प्रौद्योगिकी का विकास किया गया है।
- आँवला तोड़ने वाली मशीन का अभिकल्प करके उसे तैयार किया गया है।
- खाद्य प्रोसेसिंग के लिए सोलर थर्मल ड्रायर बनाया गया है।
- आँवला ग्रेटिंग मशीन का विकास किया गया है।
- बेल कटिंग मशीन का विकास
- सब्जियों के भण्डारण के लिए मिट्टी के कूलर का विकास किया गया है।
- काँच की मालाओं तथा काँच के सामानों के लिए बर्नर सिस्टम का विकास किया गया है।
- बीज की बुवाई की मशीन का विकास किया गया है।

वर्तमान में रूरल टेक्नालॉजी एक्शन ग्रुप अपने अगले चरण के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध है। ग्रुप ने अगले चरण के लिए अनेक लक्ष्य तय किये हैं जिससे शीघ्र लोगों तक पहुँचने की

तैयारी चल रही है। यहाँ हम ग्रुप के भावी लक्ष्यों पर दृष्टिपात कर रहे हैं –

- गाँव में रहने वाले लोगों के लिए कम कीमत वाली प्रौद्योगिकी का विकास करना तथा उनका प्रचार-प्रसार करना जिससे ग्रामीण जनता के समक्ष जीवोकोपार्जन के लिए कई विकल्प उपस्थित हो सकें तथा उनको आत्मनिर्भर बनाया जा सके।
- प्रौद्योगिकी संस्थानों के छात्रों को सामाजिक सरोकारों से जुड़ी परियोजनाओं से जोड़ने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करना तथा उनकी सृजनशीलता में वृद्धि के लिए प्रयास करना।
- ग्रास रूट संस्थानों, छोर प्रयोक्ताओं, संसाधकों तथा निर्माताओं के साथ मिलकर उन्नत प्रौद्योगिकी एवं प्रतिभावान इंजीनियरिंग छात्रों के माध्यम से नवीन उत्पादों एवं सेवाओं को विकसित करना।
- सफल प्रौद्योगिकियों को व्यापार के योग्य बनाना तथा प्रभावी आऊटरीच कार्यक्रम तैयार करना।
- ऐसा कार्यक्रम तैयार करना जो ग्रामीण उद्यमिता तथा ग्रामीण रोजगार के आगे बढ़ा सकें।
- प्रौद्योगिकियों का मूल्यांकन करने तथा विभिन्न क्षेत्रों में संसाधनों की उपलब्धता के बारे में पता लगाने के लिए बाजार का अध्ययन करना।
- क्षेत्र विशेष में दो और रूरल टेक्नालॉजी एक्शन ग्रुप के चैप्टर आरंभ करना तथा उन्हें पोषित करना।

ईशान विकास [Ishan Vikas]

मानव संसाधन विकास मंत्रालय के प्रयास से भारत के उत्तर-पूर्व राज्यों के विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ने के लिए ईशान विकास कार्यक्रम की स्थापना की गई है। इस कार्यक्रम के तहत स्कूली छात्रों को उनकी छुट्टियों के दौरान भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों एवं भारतीय विज्ञान एवं अनुसंधान संस्थानों के संपर्क में लाकर उच्च शिक्षा के लिए प्रेरित करना है। इस मिशन का मूल उद्देश्य है उत्तर-पूर्व की नौजवान मेधा को विज्ञान और प्रौद्योगिकी के वृहत ज्ञान-भंडार से रूबरू कराना जिससे वे अपना सुनहरे भविष्य का सपना पूरा कर सकें। इस परियोजना के अंतर्गत उत्तर-पूर्व के कक्षा 9 एवं कक्षा 11 तथा प्रौद्योगिकी कॉलेजों के विद्यार्थियों को देश के उच्च प्रतिष्ठित संस्थानों से जोड़कर उन्हें विज्ञान, तकनीकी, इंजीनियरिंग एवं गणित विषय पढ़ने के लिए प्रेरित एवं प्रोत्साहित किया जाता है। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर ने वर्ष 2014-15 में उत्तर-पूर्व में स्थित तेजपुर विश्वविद्यालय के 6 छात्रों को अपने यहाँ आमंत्रित किया था। एक सप्ताह के भ्रमण कार्यक्रम में संस्थान के संकाय सदस्यों ने इन विद्यार्थियों को अलग-अलग विषयों पर व्याख्यान दिया । इन व्याख्यानों की सूची इस प्रकार है:

- English Skills for Research, प्रो. नीलकंठन जी.
- Recent Trends in Bio-engineering, प्रो. मैनक दास
- Social Implication of doing research, प्रो. एन के शर्मा
- Optical Communication and Network, प्रो. वाय एन सिंह
- Intelligent System Design, प्रो.बिसाख भट्टाचार्या
- Micro Manufacturing, प्रो. जे रामकुमार
- Excitement of Nano & Materials in Engineering,
- प्रो श्री शिवा कुमार

भ्रमण के दौरान इन छात्रों को संस्थान की प्रयोगशालाओं, विभिन्न केन्द्रों तथा विशिष्ट सुविधाओं से परिचित कराया गया।

इम्प्रिंट इंडिया (IMPRINT INDIA)

आने वाले समय में जीवन के हर क्षेत्र में मसलन ऊर्जा, आवास, संसाधन, पर्यावरण, आवागमन, सूचना आदि में इंजीनियरिंग प्रौद्योगिकी एक निर्णायक भूमिका का निर्वहन करेगी। चूंकि शिक्षण-प्रशिक्षण एक सतत और धीमी प्रक्रिया है जो जीवन-पर्यंत चलती रहती है लेकिन यदि इस पूरी प्रक्रिया को विभिन्न चरणों में विभक्त कर समवेत प्रयास किया जाए तो दूरगामी और शीघ्र परिणाम मिलते हैं। इसी को दृष्टिगत रखते हुये इंप्रिंट इंडिया परियोजना का रोड मैप तैयार किया गया है जिससे पूरे देश का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित किया जा सके। इंप्रिंट इंडिया अपने किस्म का पहला अभियान है जो मानव संसाधन विकास मंत्रालय के सहयोग से पैन-आई आई टी तथा भारतीय विज्ञान संस्थान के संयुक्त प्रयास से विज्ञान और प्रौद्योगिकी की चुनौतियों का निराकरण कर भारत को सशक्त और आत्मनिर्भर बनाएगा। यह अभियान मुख्यतः दो बिन्दुओं पर केन्द्रित है:

- नई प्रौद्योगिकी शिक्षा-नीति का विकास एवं,
- प्रौद्योगिकी चुनौतियों के निदान हेतु रोड मैप तैयार करना।

इम्प्रिंट इंडिया का उद्देश्य समाज से संबंधित आवश्यकताओं

के लिए नवाचार तथा नवीन अनुसंधान को प्रोत्साहित करना है ताकि प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में होने वाले उत्पादों एवं सुविधाओं से शहर तथा ग्रामीण क्षेत्रों की जनता को लाभ पहुँचाया जा सके। आई आई टी कानपुर के वर्तमान निदेशक प्रोफेसर इंद्रनील मान्ना को राष्ट्रीय इम्प्रिंट इंडिया समन्वयक बनाया गया है तथा जिन दस विषयों पर ध्यान केन्द्रित किया गया है, उसके अलग अलग समन्वयक देश के प्रतिष्ठित प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान संस्थानों से बनाए गए हैं। विषय के साथ समन्वयक संस्थानों के नाम नीचे दिये जा रहे हैं -

- स्वास्थ्य सेवा – आई आई टी खड्गपुर
- सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी-आई आई टी खड्गपुर
- ऊर्जा- आई आई टी बॉम्बे
- सस्टेनेबल हैबिटेट-आई आई टी रूड़की
- नैनो टेक्नॉलॉजी हार्डवेयर-आई आई टी बॉम्बे एवं भारतीय विज्ञान संस्थान बैंगलोर
- जल संसाधन और नदी-प्रणालियाँ-आई आई टी कानपुर एवं भारतीय विज्ञान संस्थान बैंगलोर
- एडवांस मटीरिएल - आईआईटी कानपुर
- विनिर्माण- आई आई टी मद्रास
- सुरक्षा एवं रक्षा - आईआईटी मद्रास एवं आई आई टी दिल्ली
- पर्यावरण विज्ञान और जलवायु परिवर्तन - भारतीय विज्ञान संस्थान बैंगलोर

उपसंहार

वस्तुतः हम कह सकते हैं कि भारत एक बहु भाषी, विभिन्न सांस्कृतिक परिवेशों का पोषक राष्ट्र है जिसके फलस्वरूप यह कतई आवश्यक नहीं है कि जो परियोजना देश के एक हिस्से में प्रासंगिक है वह देश के दूसरे हिस्से में भी उसी तरह से उपयोगी हो। इसलिए किसी भी सरकार के लिए यह हमेशा शोध का विषय होता है कि किसी भी परियोजना को बहुत विचार-विमर्श के पश्चात ही लागू करने के लिए उसकी राजाज्ञा जारी की जाये। वर्तमान सरकार इस संबंध में बहुत सोच-विचार करके ही कदम बढ़ा रही है। उच्च तकनीकी संस्थानों को इन परियोजनाओं में शामिल करना उसकी सफल रणनीति का हिस्सा है और कहना न होगा कि इसका सकारात्मक प्रभाव महसूस किया जा है और पूरे देश में चरण-बद्ध तरीके से ये परियोजनाएं अपने लक्ष्य की ओर शनैः-शनैः बढ़ रही हैं। आशा की जाती है कि आने वाले समय में भारत शिक्षा, शोध, ज्ञान और साफ-सफाई के क्षेत्र में पूरे विश्व में विकासशील देशों के बीच एक अनुकरणीय राष्ट्र के रूप में जाना जाएगा।

पुनश्च:, यह लेख केवल परिचयात्मक है। सभी परियोजनाएं राष्ट्र-व्यापी हैं, जाहिर है कि उनका लेखा-जोखा भी व्यापक होगा जिसे बतौर लेख समाहित करना जहाँ मुश्किल है वहीं इसके लिए एक विशेषज्ञ दृष्टि-कोण की भी आवश्यकता है। अतः पाठकों से निवेदन है कि यदि गवेषणात्मक अभिरुचि है तो कृपया सभी परियोजनाओं के वेब पेज का अवलोकन करें।

डॉ. वी पी सिंह, उप कुलसचिव

सदाचार का अर्थ है शुभ आचार

भारतीय संस्कृति का आधार सदाचार है। सदाचार का अर्थ है शुभ आचार। मानव जीवन में चरम उत्कर्ष के लिए धर्म और उसके साथ सदाचार की परमावश्यकता है। सदाचार और सत्कर्म ही आत्मोन्नति के साधन हैं। अत: मानव जीवन में सदाचार का महत्व अद्वितीय है। सदाचार ही जीवन की आभा है।

झरोखे से

स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर विरासत कार्यक्रम के अन्तर्गत राजस्थानी लोक संगीत की प्रस्तुति

विरासत कार्यक्रम के शुभारम्भ हेतु दीप प्रज्वलन

शिक्षक दिवस पर प्रोफेसर कुंडू को 25 वर्ष की सेवा हेतु सम्मानित करते हुए निदेशक महोदय

शिक्षक दिवस पर उत्कृष्ट शिक्षक पुरस्कार लेते हुए प्रो. जितेन्द्र कुमार

पैदलचाल प्रतियोगिता - 2016

श्रद्धांजलि

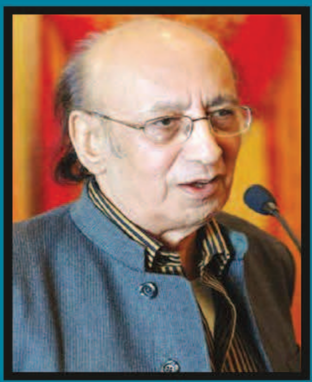

हिंदुस्तानी शायरी के मशहूर नाम निदा फ़ाज़ली साहब अब हमारे बीच नहीं रहे। वैसे तो उनकी गजलों और गीतों की फेहरिस्त काफी लंबी है परन्तु उनमें से कुछ ऐसे हैं जिन्हें हमारी जुबां सदा गुनगुनाती ही रहती है।

निदा साहब की रूह को सुकून देने वाली कुछ ऐसी ही पक्तियाँ...

कभी किसी को मुकम्मल जहाँ नहीं मिलता।
कहीं ज़मीं तो कहीं आसमां नहीं मिलता।

दुनिया जिसे कहते हैं जादू का खिलौना है।
मिल जाए तो मिट्टी है खो जाए तो सोना है।

मुद्रण : कलकत्ता प्रिन्टर्स, 9889162992

संपर्क :
राजभाषा प्रकोष्ठ
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर (उ.प्र.)
दूरभाष-0512-259-7122
ईमेल-shikha@iitk.ac.in, vedps@iitk.ac.in, sunitas@iitk.ac.in
वेब-http://www.iitk.ac.in/infocell/iitk/newhtml/Antas

अभिकल्प (Design) सुनीता सिंह